# हरिभूमि

छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, हरियाणा व दिल्ली से एक साथ प्रकाशित

समाचार ही नहीं, विचार भी

haribhoomi.com

बिलासपुर, बुधवार 17 जून 2026


**जी-7 शिखर सम्मेलन में मिले ट्रंप-मोदी**

फ्रांस के एवियन-लेस-बैंस शहर में आयोजित 52वें जी-7 शिखर सम्मेलन में पीएम मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति आमने-सामने आए। पूरे 489 दिनों बाद हुई इस मुलाकात में पहले जैसी गर्मजोशी नहीं दिखाई दी।

### आरोप के बाद एसआईटी जांच शुरू, ड्राइवर रामशंकर पर गंभीर आरोप, नया दावा

# राम मंदिर से गायब हुआ दो किलो सोने की गदा और करोड़ों के गहने!

*राम मंदिर के चढ़ावे की राशि में करोड़ों की कथित चोरी की एसआईटी जांच सोमवार से शुरू हुई। आरोप के बाद कई दावे किए जा रहे हैं। कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया गया है कि चढ़ावे की राशि के जेवरात भी गायब हैं। इसमें करोड़ों रुपए का सोना-चांदी शामिल हैं। दो किलो की सोने की गदा गायब होने की भी चर्चा है। हालांकि इन दावों में कितनी सच्चाई है, इस बारे में कोई कुछ भी बोलने को तैयार नहीं है।*

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नई दिल्ली

चढ़ावा चोरी की जांच के लिए एसआईटी ने जांच शुरू कर दी है। सोमवार दोपहर करीब 3 बजे एसआईटी टीम राम मंदिर पहुंची। टीम में 3 सदस्य हैं। एसआईटी जांच के दायरे में वे लोग हैं, जिन पर चढ़ाचा राशि गायब करने और साक्ष्य मिटाने के आरोप लगे हैं। आरोप मंदिर ट्रस्ट के पदाधिकारियों के चहेतों पर भी लग रहे हैं, जिनकी माली हालत अचानक कई गुना बढ़ गई है। यह सब एसआईटी की जांच के दायरे में होगा। वहीं, जिम्मेदार पदाधिकारियों से गहराई से पूछताछ हो सकती है। इस बीच, कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया गया है कि चढ़ावे की राशि के जेवरात भी गायब हैं। इसमें करोड़ों रुपए का सोना-चांदी शामिल है। दो किलो की सोने की गदा गायब होने की भी चर्चा है। हालांकि इन दावों में कितनी सच्चाई है, इस बारे में कोई कुछ भी बोलने को तैयार नहीं है।

मंदिर ट्रस्ट के कार्यालय प्रभारी प्रकाश गुप्ता ने आरोप लगाया है कि बैंक ने जिस एजेंसी के कर्मचारियों को लगाया है, उन्हीं ने चोरी की हैं। ट्रस्ट की निगरानी टीम की लापरवाही भी सामने आ रही है। हालांकि उन पर चोरी का आरोप नहीं है। ऐसे में काउंटिंग टीम में लगे ▶▶| शेष पेज 8 पर

#### पूर्व सैन्य अधिकारी को नोट गिनाई की कमान

राममंदिर में चढ़ावे की रकम को लेकर विवाद के बीच नोट गिनाई की व्यवस्था को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सख्त कर दिया गया है। इसकी कमान अब पूर्व सैन्य अधिकारी को सौंप दी गई है। दान के नोट गिनने का काम करने वाले कर्मचारियों से काम खत्म करने के बाद पांच मिनट राम नाम का जाप फिर दस मिनट व्यायाम करवाया जा रहा है। इसके साथ नोट गणना के कमरे में सीसीटीवी कैमरों की संख्या बढ़ा दी गई है और उसे परिसर के कंट्रोल रूम से जोड़ दिया गया है।

### मंदिर निर्माण प्रभारी का भतीजा भी रडार पर

#### ट्रस्ट के जिम्मेदार भी शक के दायरे में

मंदिर ट्रस्ट के जिम्मेदार भी जांच टीम के शक के दायरे में है। वैसे तो मंदिर ट्रस्ट में कुल 15 सदस्य है, पर वे यहा रहते नहीं और न उनका कोई दखल है। वित्तीय संचालन का अधिकार केवल महासचिव चंपत राय और ट्रस्टी डॉ. अनिल मिश्र के पास है जिनके संयुक्त हस्ताक्षर से ही भुगतान होता है। चंपत राय आरएसएस के प्रचारक है और विहिप के पदाधिकारी भी है। वहीं, अनिल मिश्र भी आरएसएस के पूर्व पदाधिकारी है। वहीं, दक्षिण से आए गोपाल राव को संघ के सह सरकार्यवाह कृष्ण गोपाल का करीबी माना जाता है। वे मंदिर व्यवस्था के प्रभारी है। आरोप है कि गोपाल के चहेतों ने भी दर्शन पस के नाम पर खूब कमाई की। चर्चा है कि इसी सबके चलते विहिप और संघ ने चुप्पी साध रखी है।

#### इन पर शक की सुई

- राम मंदिर ट्रस्ट के कर्मचारी रामशंकर यादव के घर से सोना मिला
- मंदिर निर्माण प्रभारी गोपाल राव के भतीजे सोमेश आनंद पर भी शक
- जेवरों को संभालने की जिम्मेदारी केडी तिवारी भी संदेह के घेरे में

#### सोने के मुकुट गायब

*हर साल सावन के झूला मेले के समय भगवान राम का उनके तीनों भाइयों- भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न के साथ विशेष श्रृंगार कराया जाता है। परंपरा के अनुसार, झूलन उत्सव पर चारों भाइयों को सोने के मुकुट पहनाए जाते हैं। फिर उन्हें झूले पर विराजमान कर भक्तों को दर्शन कराए जाते हैं। 2 साल पहले की बात है, रामलला और उनके तीनों भाइयों के सोने के मुकुट गायब हो गए। कई महीनों तक मुकुट का पता नहीं चला। सावन मेले के दौरान जब रामलला के पुजारियों ने बार-बार मुकुट की मांग की तो खोजबीन शुरू हुई। तलाशी में मंदिर परिसर में ट्रस्ट के एक पदाधिकारी की अलमारी से मुकुट मिले थे। सूत्रों के अनुसार, ये मुकुट गाजियाबाद के एक श्रद्धालु ने अपनी मां के जेवर बेचकर रामलला को भेंट किए थे।*

# डीएमएफ घोटाले में ईडी के पांच जिलों में छापे, इनमें कांग्रेस के पूर्व जिलाध्यक्ष के ठिकाने भी शामिल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रायपुर

**खास खबर**

छत्तीसगढ़ के बहुचर्चित डिस्ट्रिक्ट मिनरल फाउंडेशन (डीएमएफ) घोटाले मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने मंगलवार को प्रदेश के पांच जिले रायपुर, दुर्ग, धमतरी, महासमुंद और अंबिकापुर में छापामार कार्रवाई की। खबर के अनुसार छापेमारी डीएमएफ घोटाला से जुड़े कारोबारियों और ठेकेदारों के ठिकानों पर की है। इनमें सरगुजा के पूर्व कांग्रेस जिलाध्यक्ष राकेश गुप्ता एवं रायपुर के कारोबारी शाश्वत लुणावत, ठेकेदार दीपेश गांधी के ठिकाने शामिल हैं। इस छापेमारी के दौरान सभी ठिकानों में लेनदेन एवं दस्तावेजों की जांच की जा रही है।

सूत्रों के अनुसार डीएमएफ घोटाला में ईडी लगातार जांच करते हुए छापामारी कार्रवाई कर रही है। जांच में जैसे-जैसे सुराग एवं सबूत मिल रहे हैं, उनके आधार पर ईडी छापेमारी की कार्रवाई कर रही है। इस बार प्रदेश के 5 जिलों में एक साथ कार्रवाई की ▶▶| शेष पेज 8 पर

सरगुजा में कांग्रेस के पूर्व जिलाध्यक्ष व कारोबारी राकेश गुप्ता के ठिकानों पर दबिश

#### पूर्व जिलाध्यक्ष राकेश गुप्ता के बंगले-फर्म में जांच

ईडी की अलग-अलग टीम ने सरगुजा में कांग्रेस के पूर्व जिलाध्यक्ष राकेश गुप्ता के ठिकाने एवं मानसून एग्रो फर्म में भी दबिश दी है। राकेश गुप्ता कृषि विभाग का बड़ा सप्लायर भी है, इसलिए उसके फर्म में भी जांच की जा रही है। इस जांच के दौरान फर्म के दस्तावेज, सप्लाई एवं लेनेदन के रिकॉर्ड खंगाले जा रहे हैं।

#### ठेकेदार दीपेश गांधी के ठिकाने पर जांच-पड़ताल जारी

ईडी की एक टीम ने सुरक्षा बलों के साथ धमतरी जिले के आमापारा वार्ड स्थित दीपेश गांधी के ठिकाने पर भी दबिश दी है। यहां बताया गया कि दीपेश के ठिकानों पर भारतमाला घोटाले में भी जांच की गई थी। टीम में शामिल लगभग 6 अधिकारियों का दल दीपेश के आवास में नकदी, सोना-चांदी के जेवरात, संपत्तियों के दस्तावेजों के साथ मोबाइल एवं लेनदेन की जांच कर रहा है। बताया जा रहा है कि दिपेश अलग-अलग सरकारी और निजी परियोजनाओं में बड़े ठेकेदारों के साथ मिलकर काम करता है। ▶▶| शेष पेज 8 पर

#### इस तरह फूटा डीएमएफ घोटाला का बम

डीएमएफ घोटाले का बम कोरबा से फूटा। ईडी की रिपोर्ट के आधार पर ईओडब्ल्यू ने इस मामले में धारा 120 बी 420 के तहत केस दर्ज किया है। इस केस में यह तथ्य निकल कर सामने आए हैं कि डिस्ट्रिक्ट माइनिंग फंड कोरबा के फंड से अलग-अलग टेंडर आवंटन में बड़े पैमाने पर आर्थिक अनियमितताएं की गई हैं। टेंडर भरने वालों को बड़ी रकम का अवैध लाभ पहुंचाया गया है। ईडी तथ्यों के मुताबिक टेंडर करने वाले संजय शिंदे, अशोक कुमार अग्रवाल, मुकेश कुमार अग्रवाल, ऋषभ सोनी और बिचौलिए मनोज कुमार द्विवेदी, रवि शर्मा, पियूष सोनी, पियूष साहू, अब्दुल और शेखर नामक लोगों के साथ मिलकर जमकर कमाई कर शासन को नुकसान पहुंचाया है।

# नीट-यूजी की पुनःपरीक्षा से पहले 'टेलीग्राम' पर बैन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नई दिल्ली

केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (नीट-यूजी) 2026 की पुनः परीक्षा से पहले मंगलवार को 'टेलीग्राम' ऐप पर अस्थायी प्रतिबंध लगा दिया गया। एनटीए ने कहा कि यह कदम नकल गिरोहों से निपटने के लिए उठाया गया है। एनटीए की सिफारिशों पर कार्रवाई करते हुए इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 की धारा 69ए के तहत आदेश जारी किया। मंत्रालय ने भारत में टेलीग्राम मंच तक पहुंच को एक निर्धारित और सीमित अवधि के लिए प्रतिबंधित करने का निर्देश दिया है। यह प्रतिबंध 22 जून 2026 तक प्रभावी रहेगा और इसमें नीट (यूजी) 2026 की ▶▶| शेष पेज 8 पर

#### क्यों हुआ बैन

एनटीए ने कहा कि 21 जून, 2026 को होने वाली नीट (यूजी) 2026 की पुनःपरीक्षा में शामिल होने वाले अभ्यर्थियों को ठगने के लिए नकल माफियाओं द्वारा टेलीग्राम मंच के संगठित इस्तेमाल पर रोक लगाना है। एजेंसी ने छात्रों के हित में की गई इस त्वरित कार्रवाई के लिए इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के प्रति आभार व्यक्त किया।

#### आईपीएस सुंदरराज बने एनआईए में आईजी

**नई दिल्ली।** छत्तीसगढ़ कैडर के वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी सुंदरराज पी को राष्ट्रीय जांच एजेंसी में बड़ी जिम्मेदारी सौंपी गई है। केंद्र सरकार ने उन्हें प्रतिनियुक्ति पर इंस्पेक्टर जनरल के पद पर नियुक्त करने को मंजूरी दे दी है। केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा जारी आदेश के मुताबिक, वर्ष 2003 बैच के आईपीएस अधिकारी सुंदरराज पी को तत्काल प्रभाव से राष्ट्रीय जांच एजेंसी में पदस्थ किया गया है। मंत्रालय ने छत्तीसगढ़ सरकार से उन्हें शीघ्र कार्यमुक्त करने का अनुरोध भी किया है, ताकि वे अपनी नई जिम्मेदारियों का कार्यभार संभाल सकें। सुंदरराज पी का नाम छत्तीसगढ़ में नक्सल विरोधी अभियानों के प्रमुख चेहरों में शामिल रहा है। बस्तर रेंज के आईजी के रूप में उन्होंने लंबे समय तक सुरक्षा अभियानों का नेतृत्व किया और दुर्गम इलाकों में सुरक्षा बलों की मौजूदगी मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके कार्यकाल में कई बड़े ऑपरेशन संचालित किए गए, जिनसे माओवादी नेटवर्क को उल्लेखनीय क्षति पहुंची।

#### मानसरोवर यात्रा का पहला जत्था गंगटोक पहुंचा

**गंगटोक।** कैलाश मानसरोवर यात्रा के तीर्थयात्रियों का पहला जत्था नाथू ला दर्रे के रास्ते आगे की यात्रा के लिए गंगटोक पहुंच गया है। सोमवार शाम यहां पहुंचे पहले जत्थे में दो समन्वयक अधिकारी और एक चिकित्सा अधिकारी समेत कुल 44 लोग है। इनमें 32 पुरुष और 12 महिलाएं हैं।

छत्तीसगढ़ शासन
राज्य ग्रामीण
आजीविका मिशन-बिहान
छत्तीसगढ़ की
लखपति
दीदियां
08 लाख
महिलाएं बनीं लखपति दीदी
10 लाख
अतिरिक्त महिलाओं को
लखपति दीदी बनाने का लक्ष्य
₹05 करोड़ का बजट प्रावधान
लखपति दीदियों के व्यावसायिक अनुभव के विस्तार
हेतु लखपति दीदी श्रमण योजना की शुरुआत
2.8 लाख स्व-सहायता समूह
और 30.85 लाख परिवार
बिहान मिशन से जुड़े
महिलाओं को प्रशिक्षण एवं
वित्तीय सहायता से बनाया जा
रहा आर्थिक रूप से सशक्त
महिला समूहों को उद्यम के लिए बेहतर
जगह उपलब्ध कराने 368 महतारी सदनों
का हो रहा निर्माण
संघर्ष से सम्मान तक,
आगे बढ़ती बिहान की दीदियां
श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़
श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री
हमसे जुड़ने के लिए
QR स्कैन करें
छत्तीसगढ़ जनसंपर्क
/ChhattisgarhCMO
/DPRChhattisgarh
www.dprcg.gov.in
सुशासन से समृद्धि की ओर

बिलासपुर, बुधवार 17 जून 2026 ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष तृतीया | वर्ष : 26, अंक : 87 | पृष्ठ : 12+8 = 20 मूल्य : 5.00***
haribhoomi.com
# हरिभूमि
छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, हरियाणा व दिल्ली से एक साथ प्रकाशित
समाचार ही नहीं, विचार भी

## हाय गर्मी...बेहोश हुए छात्र, निजी स्कूलों ने कर दी दूसरी कक्षा तक छुट्टी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रायपुर

प्रदेश में शैक्षणिक सत्र 2026-27 की शुरुआत शाला प्रवेशोत्सव के साथ मंगलवार से हो गई। शिक्षकों ने तो तिलक लगाकर व मिठाई खिलाकर शाला प्रवेशोत्सव मनाया ही, सूरज ने भी प्रचंड किरणों के साथ छात्रों का स्वागत किया। स्थिति यह रही कि दुर्ग जिले सहित कई स्थानों में छात्रों के बेहोश होने तक की खबरें सामने ▶▶|शेष पेज 8 पर

हरिभूमि लाइव

**शिक्षक नहीं आए तो बच्चों ने लगाया ताला-** बालोद जिले के आदिवासी ब्लॉक डौंडी स्थित शासकीय प्राथमिक स्कूल कांडे में पहले दिन ही अजीबो-गरीब ▶▶|शेष पेज 8 पर

### अस्पताल पहुंचे डीईओ

भिलाई में मंगलवार को तापमान 40 डिग्री था, जिसके चलते शासकीय स्वामी आत्मानंद जेआरडी स्कूल में एक छात्र प्रार्थना के दौरान ही बेहोश हो गया। बेहोशी की हालत में छात्र को कक्ष में ले जाकर सुलाया गया। फिर जिला अस्पताल में भर्ती करवाया गया। छात्र ही हालत इलाज के बाद ठीक बताई गई है। इसका वीडियो वायरल हो गया है। दुर्ग जिले के सरकारी ▶▶|शेष पेज 8 पर

# अमेरिका-ईरान डील पर सस्पेंस, ट्रंप ने 28 लाख करोड़ देने की बात ठुकराई

अमेरिका और ईरान समझौते पर फिर से सस्पेंस है। समझाते की शर्तों पर डिजिटल एमओयू के एक दिन बाद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान को 28 लाख करोड़ रुपए देने की बात को फर्जी बताया है। उन्होंने मंगलवार को ट्रुथ सोशल पर लिखा कि यह विपक्षी पार्टी डेमोक्रेट्स की तरफ से फैलाई गई झूठी खबर है। इधर, ईरान ने भी दो टूक कहा, समझौते के लिए इजरायल को लेबनान से पीछे हटना होगा।

### *ईरान बोला- समझौते के लिए इजरायल को लेबनान से पीछे हटना होगा*

एजेंसी ▶▶| वाशिंगटन/तेहरान

अमेरिका और ईरान के बीच हुए शांति समझौता हो गया है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के ऐलान के बाद तेहरान ने भी इसकी पुष्टि कर दी है। ट्रंप ने इस डील को बड़ी सफलता के रूप में पेश किया है, जो होर्मुज जलडमरूमध्य को फिर से खोल देगा। लेकिन अब ऐसी जानकारी सामने आ रही है कि इस समझौते की एक कीमत तय हुई है। यह कीमत 28 लाख करोड़ रुपए है। ईरानी मीडिया ने इसे युद्ध में हुए नुकसान के मुआवजे के रूप में पेश किया है। हालांकि, अमेरिकी राष्ट्रपति ने इससे साफ इनकार किया है। राष्ट्रपति ट्रंप ने सोमवार को उन खबरों का ▶▶|शेष पेज 8 पर

### नेतन्याहू को दी

ट्रंप ने इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू को लेबनान मुद्दे पर ज्यादा जिम्मेदारी दिखाने की सलाह दी है। ट्रंप ने कहा, मैं न होता, तो इजराइल नहीं होता। किसी दूसरे अमेरिकी राष्ट्रपति ने इजरायल के लिए उतना नहीं किया, जितना मैंने किया है।

### जेडी वेंस ने बताया खाड़ी देशों का निवेश

ट्रंप की टिप्पणी अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस के बयान के बाद आई है, जिसमें उन्होंने ईरान को 28 लाख करोड़ रुपए मिलने की बात कही है। अगर ईरान समझौते की शर्तों का पालन करता है तो उसे 28 लाख करोड़ रुपए के पुनर्निर्माण फंड तक पहुंच मिल सकती है। उन्होंने कहा कि यह फंड खाड़ी देश देंगे। अमेरिकी ब्रॉडकास्टर सीबीएस के साथ एक इंटरव्यू में ईरान को फंड दिए जाने पर कहा, यह एक ऐसी चीज है, जिस तक उनकी पहुंच हो सकती है।

## चिंतन

# नीटः सवाल शुचिता का ही नहीं, प्रतिष्ठा का भी

देश की सबसे बड़ी मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट एक बार फिर चर्चा के केंद्र में है। पिछले वर्ष पेपर लीक और परीक्षा प्रक्रिया पर उठे सवालों ने लाखों विद्यार्थियों और अभिभावकों का भरोसा झकझोर दिया था। यही कारण है कि इस बार होने वाले नीट री-एग्जाम को लेकर केंद्र सरकार और नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) किसी भी प्रकार की चूक की गुंजाइश नहीं छोड़ना चाहते। इस परीक्षा की निष्पक्षता और विश्वसनीयता केवल लाखों छात्रों के भविष्य से ही नहीं जुड़ी है, बल्कि शुचिता के साथ सरकार की प्रतिष्ठा भी इससे दांव पर लगी हुई है। इसलिए इस बार सरकार कोई कोर कसर नहीं छोड़ना चाहती, जिससे इस परीक्षा की पवित्रता पर सवाल उठे या इसकी शुचिता प्रभावित हो। पहली बार इस परीक्षा के पेपर को केंद्र तक ले जाने के लिए वायुसेना के विमानों और हेलीकॉप्टर का प्रयोग होगा। इसके अलावा, सुरक्षा के व्यापक इंतजाम किए जा रहे हैं। पेपर सेटिंग से लेकर परीक्षा केंद्र तक हर तरह की सुरक्षा पुख्ता की जा रही है। केंद्र सरकार ने एक कदम और आगे बढ़ाते हुए सोशल मीडिया पर भी शिकंजा कस दिया है और टेलीग्राम को भी परीक्षा तक प्रतिबंधित कर दिया है। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) ने बताया कि इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने सूचना प्रौद्योगिकी कानून, 2000 की धारा 69ए के तहत टेलीग्राम पर रोक लगाई है। यह रोक 22 जून 2026 तक रहेगी। हालांकि आदेश कब से लागू होगा, इसकी तारीख नहीं दी गई है। नीट री-एग्जाम 21 जून को होगा। सरकार ने एग्जाम के बाद भी टेलीग्राम को अपना मैसेज एडिट फीचर 30 जून तक बंद रखने का निर्देश दिया है। यानी भारत में टेलीग्राम पर पहले से भेजे गए मैसेज 30 जून तक एडिट नहीं हो पाएंगे। असल में टेलीग्राम अपने उपभोक्ताओं को एक फीचर देता है, जिसमें पूर्व में किए गए मैसेज को एडिट किया जा सकता है। ऐसे में कुछ शरारती तत्व पूर्व में किए गए मैसेज को एडिट कर परीक्षा का पेपर जोड़ देते हैं और भ्रम फैलाते हैं कि पेपर पहले ही लीक हो चुका है। इससे परीक्षार्थियों की मुश्किलें बढ़ जाती हैं। लेकिन इस बार ऐसा न हो, इसलिए सरकार ने पहले ही टेलीग्राम पर रोक लगा दी है। इसके अलावा भी कई हैंडल बंद किए गए हैं और व्हाट्सएप समेत सोशल मीडिया पर भी कड़ी नजर रखी जा रही है। परीक्षा से पहले और बाद में अफवाहों तथा फर्जी दावों को रोकना भी इस बार सुरक्षा रणनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। सरकार समझती है कि आज केवल पेपर लीक रोकना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि गलत सूचनाओं को फैलने से रोकना भी उतना ही जरूरी है। हालांकि जब तक परीक्षा नहीं हो जाती, तब तक सरकार की चिंता बढ़ी रहेगी। विशेषज्ञों का मानना है कि परीक्षा के लिए कम से कम दस अलग-अलग प्रश्नपत्र सेट तैयार किए जाएं और कंप्यूटर आधारित रैंडम सिस्टम के जरिए अंतिम समय पर तय किया जाए कि किस केंद्र पर कौन-सा पेपर जाएगा। ऐसी व्यवस्था पेपर लीक करने वाले गिरोहों के लिए बड़ी चुनौती साबित हो सकती है। इसके साथ ही प्रश्नपत्रों की डिजिटल ट्रैकिंग, जिम्मेदार अधिकारियों की जवाबदेही और त्वरित जांच तंत्र को भी मजबूत किया जाना चाहिए। कुल मिलाकर नीट री-एग्जाम को लेकर इस शुचिता के साथ सरकार की प्रतिष्ठा भी दांव पर है। 21 जून को होने वाली परीक्षा निर्बाध और निर्विवाद रूप से संपन्न हो, इसके लिए पूरी तैयारी के साथ सरकार कोई कोर कसर नहीं छोड़ना चाहती।

शांति समझौता
राज कुमार सिन्हा

# युद्ध विराम का सकारात्मक होगा प्रभाव

> अमेरिका और ईरान के बीच युद्ध विराम और शांति समझौता वैश्विक अर्थव्यवस्था, कूटनीति और मध्य-पूर्व की भू-राजनीति को गहराई से प्रभावित करेगी। होर्मुज़ जलडमरूमध्य से तेल और गैस की निर्बाध आपूर्ति बहाल होने से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में तत्काल गिरावट आएगी, जिससे वैश्विक मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने में मदद मिलेगी। समुद्री मार्ग के खुलने से अंतरराष्ट्रीय व्यापार और सप्लाई चेन की बाधाएं दूर होगी, जिससे एशियाई और यूरोपीय अर्थव्यवस्थाओं को आर्थिक स्थिरता मिलेगी। भारत, चीन और जापान जैसे बड़े तेल आयातक देशों को राजकोषीय घाटा कम करने और अपनी मुद्रा को मजबूत करने में मदद मिलेगी।

अमेरिका और ईरान के बीच युद्ध विराम और शांति समझौता वैश्विक अर्थव्यवस्था, कूटनीति और मध्य-पूर्व की भू-राजनीति को गहराई से प्रभावित करेगी। होर्मुज़ जलडमरूमध्य से तेल और गैस की निर्बाध आपूर्ति बहाल होने से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में तत्काल गिरावट आएगी, जिससे वैश्विक मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने में मदद मिलेगी। समुद्री मार्ग के खुलने से अंतरराष्ट्रीय व्यापार और सप्लाई चेन की बाधाएं दूर होगी, जिससे एशियाई और यूरोपीय अर्थव्यवस्थाओं को आर्थिक स्थिरता मिलेगी। भारत, चीन और जापान जैसे बड़े तेल आयातक देशों को राजकोषीय घाटा कम करने और अपनी मुद्रा को मजबूत करने में मदद मिलेगी।

भारत अपनी जरूरत का 80 फीसदी से अधिक कच्चा तेल आयात करता है। युद्ध विराम से अंतरराष्ट्रीय बाजार में ब्रेंट क्रूड की कीमतें नीचे आएंगी, जिससे भारत का आयात बिल कम होगा और राजकोषीय घाटा नियंत्रित रहेगा। भारत का अधिकांश तेल और एलपीजी होर्मुज़ जलडमरूमध्य के रास्ते आता है। युद्ध विराम से इस समुद्री मार्ग पर हमलों का खतरा खत्म हो जाएगा, जिससे भारत को बिना किसी रुकावट के ईंधन की आपूर्ति होती रहेगी। फारस की खाड़ी में तनाव कम होने से जहाजों का बीमा प्रीमियम घटेगा। इससे भारतीय तेल कंपनियों की लॉजिस्टिक्स लागत कम होगी और देश में पेट्रोल-डीजल के दाम स्थिर रखने में मदद मिलेगी। यदि इस युद्ध विराम के बाद भविष्य में ईरान पर लगे अमेरिकी प्रतिबंध पूरी तरह हटते हैं, तो भारत दोबारा ईरान से सस्ते और रियायती दरों पर कच्चे तेल का आयात शुरू कर सकता है, जो भारत के लिए एक बड़ा रणनीतिक फायदा होगा। 26 अप्रैल 2026 को भारत के लिए अमेरिकी प्रतिबंधों के समाप्त होने के बाद से चाबहार बंदरगाह प्रोजेक्ट गहरे संकट में था। इस नए युद्ध विराम समझौते से भारत के लिए नई उम्मीदें जगी है। प्रतिबंधों की अवधि खत्म होने के बाद भारत ने वहां से अपने कुछ कर्मचारी हटा लिए थे और अपने निवेश को सुरक्षित करने के लिए 'वेट एंड वॉच' की नीति अपनाई थी। युद्ध विराम के बाद भारत इस रणनीतिक बंदरगाह पर कार्गो संचालन को फिर से पूरी तरह शुरू करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। चाबहार बंदरगाह पाकिस्तान को बाईपास करके अफगानिस्तान और मध्य एशिया तक पहुंचने का भारत को सीधा रास्ता देता है। शांति समझौते के कारण समुद्री मार्गों पर तनाव खत्म होने से भारत का यह महत्वाकांक्षी व्यापारिक कॉरिडोर एक बार फिर सुरक्षित और सक्रिय हो जाएगा। भारत को मध्य एशिया और अफगानिस्तान तक पहुंचने के लिए पाकिस्तान के जमीनी रास्ते की जरूरत नहीं रहेगी। मुंबई या कंडला बंदरगाह से सामान सीधे ओमान की खाड़ी के रास्ते ईरान के चाबहार बंदरगाह पहुंचेगा, जिससे दूरी और समय दोनों में भारी बचत होगी। चाबहार बंदरगाह को इंटरनेशनल नॉर्थ-साउथ ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर से जोड़ा जा रहा है। इसके जरिए भारतीय सामान ईरान के रेलवे नेटवर्क का उपयोग करके कैस्पियन सागर और वहां से सीधे रूस व यूरोप तक पहुंच सकेगा।

यह मार्ग पारंपरिक स्वेज नहर मार्ग की तुलना में 30 फिसदी सस्ता और 40 प्रतिशत तेजी से पहुंचेगा। संघर्ष विराम से पूरे खाड़ी क्षेत्र में तनाव कम होगा, जिससे व्यापक युद्ध की आशंका टलेगी। लेबनान, यमन

और इराक जैसे देशों में परोक्ष युद्धों के थमने की संभावनाएं बनेगी। सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात जैसे देश इस युद्ध विराम का स्वागत किया है क्योंकि उनका ध्यान अपनी अर्थव्यवस्थाओं पर है, जिसके लिए क्षेत्रीय शांति अनिवार्य है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अमेरिका- ईरान में जंग खत्म करने पर बनी सहमति का स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि जंग से दुनिया भर में गंभीर आर्थिक परेशानी पैदा हुई है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने मांग की है कि इस शांति काल का उपयोग संघर्ष प्रभावित क्षेत्रों में बिना किसी बाधा के मानवीय सहायता, भोजन और चिकित्सा आपूर्ति पहुंचाने के लिए किया जाना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने सभी क्षेत्रीय देशों से संयम बरतने और अंतरराष्ट्रीय समुद्री कानूनों का सम्मान करने की अपील की है ताकि वैश्विक व्यापारिक जहाज सुरक्षित आ-जा सकें। संयुक्त राष्ट्र ने दोनों पक्षों से आग्रह किया है कि वे इस अस्थाी युद्ध विराम का उपयोग एक दीर्घकालिक और स्थायी राजनयिक समाधान खोजने के लिए करें। आगामी 19 जून को 60 दिनों के अस्थायी युद्ध विराम को एक स्थायी अंतरराष्ट्रीय संधि में बदलने के लिए स्विट्जरलैंड में एक उच्च स्तरीय शिखर सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। इसमें अमेरिका और यूरोपीय संघ का मुख्य उद्देश्य ईरान के यूरेनियम संवर्धन को परमाणु हथियार बनाने के स्तर से बहुत नीचे लाना है। इसके लिए अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के निरीक्षकों को ईरान के सभी परमाणु केंद्रों तक बिना किसी बाधा के सीधी पहुंच देने पर बात होगी। वार्ता का एक बड़ा हिस्सा इस बात पर केंद्रित होगा कि ईरान लेबनान में हिज्बुल्लाह, यमन में हुती विद्रोहियों और इराक एवं सीरिया के सशस्त्र समूहों को वित्तीय और सैन्य सहायता देना पूरी तरह बंद करे। इसके बदले में ही इज़राइल की सुरक्षा की गारंटी सुनिश्चित की जाएगी। अमेरिका ईरान के लंबी दूरी के मिसाइल विकास और ड्रोन तकनीक के निर्यात पर कड़े अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंध लगाने की मांग करेगा, जिसका इस्तेमाल हालिया संघर्षों में हुआ था। यदि ईरान ऊपर दी गई शर्तों को चरणबद्ध तरीके से मानता है, तो अमेरिका ईरान के तेल और बैंकिंग क्षेत्रों पर लगे कड़े आर्थिक प्रतिबंधों को हमेशा के लिए हटाने का एक टाइमलाइन जारी करेगा।

वार्ता की शुरुआत में ही अमेरिका ईरान करीब 1.25 लाख करोड़ की संपत्ति को डीफ्रीज करेगा। साथ ही, खाड़ी देशों के सहयोग से ईरान के पुनर्निर्माण के लिए प्रस्तावित 300 अरब डॉलर के फंड को औपचारिक रूप दिया जाएगा। यदि ऐसा संभव हो सका, तो यह समझौता केवल एक युद्ध को रोकने तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि 21वीं सदी में सहयोग, संवाद और साझा सुरक्षा पर आधारित नई वैश्विक व्यवस्था की नींव रखने वाला ऐतिहासिक पड़ाव बन सकता है। अतः अमेरिका और ईरान के बीच हुआ युद्धविराम केवल दो देशों के बीच तनाव कम होने की घटना नहीं है, बल्कि यह वैश्विक शक्ति संतुलन, ऊर्जा सुरक्षा और अंतरराष्ट्रीय व्यापार व्यवस्था को पुनर्परिभाषित करने वाला महत्वपूर्ण भू-राजनीतिक मोड़ साबित हो सकता है। इस पूरी प्रक्रिया की सफलता कई चुनौतियों पर निर्भर करेगी। विशेष रूप से इजरायल का आक्रामक रुख इस शांति प्रक्रिया को कभी भी अस्थिर कर सकता है। इसलिए केवल युद्धविराम पर्याप्त नहीं होगा, बल्कि सभी पक्षों को पारस्परिक विश्वास, कूटनीतिक धैर्य और अंतरराष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं के आधार पर दीर्घकालिक समाधान विकसित करना होगा। यदि ऐसा संभव हो सका, तो यह समझौता केवल एक युद्ध को रोकने तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि 21वीं सदी में सहयोग, संवाद और साझा सुरक्षा पर आधारित नई वैश्विक व्यवस्था की नींव रखने वाला ऐतिहासिक पड़ाव बन सकता है।

*(लेखक स्वतंत्र स्तंभकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)*

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया **haribhoomi@gmail.com** पर दे सकते हैं।

पंचायती राज व्यवस्था
डॉ. अशोक कुमार जायसवाल

# पंचायतीराज संस्थाओं में वित्तीय समावेशन एवं आत्म निर्भर पंचायत

भारत के संविधान का अनुच्छेद 280 (3) (ख ख) राज्यों में पंचायतों के संसाधनों को बढ़ाने, राज्य के समेकित निधि को मजबूती प्रदान करने, केन्द्रीय वित्त आयोग के लिए अनुदान की सिफारिश करने तथा अनुदानों की प्रर्याप्तता का आंकलन करने का आधार एवं पंचायतीराज संस्थाओं के लिए निर्धारित अनुदानों के आबंटन की अनुशंसा करता है तथा अनुच्छेद 243 (झ) राज्य वित्त आयोग का गठन तथा राज्य वित्त आयोग की सिफारिशों को क्रियान्वयन करने की शक्ति प्रदान करता है। 16वें वित्त आयोग ने स्थानीय निकायों को अपने आय के संसाधनों (ओ.एस.आर.) को स्वयं श्रृजित करने की आवश्यकता पर विशेष बल दिया है। आयोग ने अपने अनुशंसा वर्ष 2026-2031 तक ग्रामीण स्थानीय निकायों के लिए अनुदान के रुप में राशि 4,35,236/—करोड रुपये निर्धारित किये है। ग्रामीण स्थानीय निकायों के लिए आबंटित मूल अनुदान राशि 3,48,188/— करोड रुपये तथा कार्य निष्पादन अनुदान राशि 8,70,48/— में से ग्रामीण स्थानीय निकाय कार्य निष्पादन अनुदान राशि 43,524/-करोड रुपये और राज्य कार्य निष्पादन अनुदान राशि 43,524/— करोड रुपये में विभाजित किया है। मूल अनुदान राशि को दो भागों में टाइड अनुदान राषि 1,74,094/— करोड रुपये तथा अनटाइड अनुदान राशि 1,74,094/-करोड रुपये समान रुप से विभाजित किया है। सम्पूर्ण कार्य निष्पादन अनुदान अनटाइड है तथा टाइड अनुदान मुख्यतः स्वच्छता एवं ठोस अपशिष्ठ प्रबंधन और जल प्रबंधन में विभक्त किया है। टाइड अनुदान में ओ एण्ड एम व्यय भी शामिल है।

छत्तीसगढ राज्य हेतु 16वें वित्त आयोग ने अपनी अनुशंसा में वर्ष 2026-2031 तक पंचायतीराज संस्थाओं में अनुदान के रुप में राशि 11,664/-करोड रुपये निर्धारित किये है। छत्तीसगढ़ राज्य में पंचायतीराज संस्थाओं के लिए आबंटित मूल अनुदान राशि 9,331/-करोड रुपये तथा कार्य निष्पादन अनुदान राशि 2,333/-करोड रुपये में से पंचायतीराज संस्थाओं का कार्यनिष्पादन अनुदान राशि 1166.5/— करोड रुपये तथा राज्य कार्य निष्पादन अनुदान राशि 1166.5/— करोड रुपये में विभाजित किया है, मूल अनुदान दो भागों में टाइड अनुदान राशि 4665.5/-करोड रुपये तथा अनटाइड अनुदान राशि 4665.5/— करोड में विभाजित किया है। 16वें वित्त आयोग के तहत कार्य निष्पादन अनुदान (10 प्रतिशत) पंचायतीराज संस्थाओं को प्राप्त करने के लिए निम्न माप दण्डों पर खरा उतरना होगा यथा-ग्राम पंचायत को गणना वर्ष में स्वयं के राजस्व (ओ.एस.आर.) में वृद्धि दिखानी होगी, तीसरे वर्ष से लागू जिसमें ग्राम पंचायत की न्यूनतम स्वयं की आय (ओ.एस.आर.) कम से कम रुपये 1200/—प्रति परिवार प्रति वर्ष होगा, वर्ष 2025—2026 के स्वयं के आय (ओ.एस.आर.) पर 2.5 प्रतिशत की वार्षिक चक्रवृद्धि वृद्धि करना होगा। जनपद पंचायत में तीसरे वर्ष से लागू, जनपद पंचायत की कम से कम 75 प्रतिशत ग्राम पंचायत कार्य निष्पादन अनुदान प्राप्त करने की शर्तों को पूरा करता हो, जिला पंचायत में गणना वर्ष में अनुदान की पात्रता पहले वर्ष में निम्न किसी एक को प्राप्त करने से जुडी है, या तो दूसरे वर्ष में स्वयं के आय का 1.025 गुणा या वित्तीय वर्ष 2025—26 में स्वयं के आय पर 2.5 प्रतिवर्ष की चक्रवृद्धि वृद्धि, इन दोनों में से जो भी कम हो। पंचायतों में वित्तीय समावेषन एवं आत्म निर्भरता विकेन्द्रीकरण को मजबूती प्रदान करने, पंचायतो के वित्तीय क्षमता को बढ़ाने, पंचायतों को अधिक संसाधन उपलब्ध कराने और स्थानीय स्तर पर साक्ष्य आधारित निर्णय लेने की प्रक्रिया को बेहतर बनाने में सहायक है। पंचायतीराज मंत्रालय ने पंचायतों के स्वयं के आय में वृद्धि (ओ.एस.आर.संग्रह) को डिजिटल एवं पारदर्शी बनाने हेतु अभिनव प्रयोग करते हुए ''समर्थ पंचायत पोर्टल'' विकसित किया, समर्थ पंचायत पोर्टल एक डिजिटल प्लेट फार्म है, जो कर और गैर कर मांगो को सृजित करने, कर रजिस्टरों और राजस्व की ऑन लाईन ट्रेकिंग की सुविधा प्रदान करता हैं। यह डिजिटल सशक्तिकरण, वित्तीय समावेषन में पारदर्शिता, दक्षता और विस्तार शीलता लाने में सहायक है। सर्मथ पंचायत पोर्टल से वित्तीय वर्ष 2025—26 में देश की कुल 15,193 ग्राम पंचायतों ने करारोपण का संकल्प पारित कर 11663 ग्राम पंचायतों द्वारा कर एवं गैर करो को कॉफ्रिरगर कर 49,51,51 कर दाताओं को पंजीकृत कर 83,36,22,765/— रुपये का मांग पत्र भेजकर 19,43,93,805/— रुपये संग्रह किये, वित्तीय वर्ष 2025—26 में छत्तीसगढ़ राज्य की 11,653 ग्राम पंचायतों द्वारा करारोपण का संकल्प पारित कर 9,678 ग्राम पंचायतो द्वारा कर एवं गैर कर को कॉफ्रिरगर कर 37,65,730 कर दाताओं को पंजीकृत कर 80,43,96,165 /— रुपये का मांग पत्र भेजकर 18,61,27,298/— रुपये संग्रह किये (16 जुन 2026 की स्थिति मे)। छत्तीसगढ़ पंचायतीराज अधिनियम 1993 की धारा—77 की उपधारा (1) एवं छत्तीसगढ़ ग्राम पंचायत अनिवार्य कर तथा फीस (शर्ते तथा अपवाद) नियम 1996 के अन्तर्गत भूमि तथा भवनो पर सम्पत्ति कर, प्रकाश कर, व्यवसाय कर, बाजार कर, ग्राम पंचायत के किसी बाजार या स्थान में बेचे गये पशुओं के रजिस्ट्रीकरण पर फीस, सफाई कर तथा धारा—77 की उपधारा (2) एवं छत्तीसगढ़ ग्राम पंचायत वैकल्पिक कर तथा फीस (शर्ते अपवाद) नियम 1996 के तहत वैकल्पिक कर का प्रावधान निहित है। इसके अतिरिक्त समय—समय पर शासन के आदेशों एवं निर्देशों के आधार पर भी सेवा शुल्क लिए जाने का प्रावधान है तथा ग्राम पंचायत (भवनों के परिनिर्माण तथा विस्तार पर नियंत्रण की उपविधियॉ) आदर्श उपविधियॉ(6), छत्तीसगढ़ ग्राम पंचायत (कोलोनाईजर का रजिस्ट्रीकरण, निर्बधन तथा शर्ते) नियम 1999, छत्तीसगढ़ ग्राम पंचायत सीमाओं से निर्यात किये गये मॉल पर सीमा कर (निर्धारण संग्रहण) नियम 2003 जिसके तहत सर्मथ पंचायत पोर्टल पर करो एवं गैर करो का एकत्रिकरण किया जा रहा है, इस प्रकार पंचायतीराज संस्थाओं में वित्तीय समावेशन एवं आत्म निर्भरता, लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण को मजबूत करने, पंचायतों को सत्त एवं सशक्त बनाने और विकसित भारत 2047 के लक्ष्यों को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करेगी।

*-संकाय सदस्य (पंचायती राज)*
*ठाकुर प्यारेलाल राज्य पंचायत एवं ग्रामीण विकास संस्थान निमोरा, रायपुर*

# गावत संतत संभु भवानी

संकलित
## दर्शन

शिव वो हैं, जो सब कुछ सहजता के साथ लेते हैं। शिव भक्ति का एक अर्थ यह भी है कि सब कुछ सहजता के साथ किया जाए और सब कुछ सहजता के साथ लिया जाए। व्यक्ति मुस्कुराए तो सहजता के साथ और रोये तो भी सहजता के साथ। भगवान शिव इतने सहज हैं कि देवों के देव होने के बावजूद वो नाचते भी हैं, गाते भी हैं, मुस्कुराते भी हैं। जैसे महाभारत में कृष्ण ने गीता गाई, तुलसीदास श्रीरामचरितमानस गाते हैं, वैसे ही भगवान शिव भी गाते हैं। भगवान शिव ने माथे पर वक्रचंद्र को धारण किया है। यह एक संकेत है कि तुम में चाहे कितनी ही वक्रता हो, मैं तुम्हें स्वीकार कर लूंगा। सब कुछ स्वीकार कर लेना बहुत बड़ी बात होती है। कोई कैसा भी हो, उसे स्वीकार कर लिया जाए। हम स्वीकार करने के बजाय दूसरों को सुधारने में लग जाते हैं और यह काम कभी हो नहीं पाता। इससे अकारण ही संघर्ष पैदा होता है। शिव सहज भी हैं और सबको स्वीकार भी करते हैं, साथ ही उनमें संतोष भी है। सावन के इन दिनों में शिव की भक्ति करते हुए हम उनकी तरह संतोषी बनना भी सीखें। मैं हमेशा कहता हूं कि व्यक्ति को कर्मशील होना चाहिए, प्रमादी नहीं। शास्त्रों में प्रमाद को मृत्यु बताया गया है। लेकिन शिवजी की तरह संतुलन रखना भी हमें आना चाहिए। शिव परिवार में वाहन के रूप में मोर भी है, चूहा भी है, बैल भी है और शेर भी है। सांप भी शिव के साथ रहते हैं। ये सब एक-दूसरे के शत्रु हैं, लेकिन परिवार में सब मिल-जुल कर रहते हैं। सबके बीच संतुलन बनाकर भगवान महादेव चलते हैं।

# हे श्री कृष्ण! तुम सर्वज्ञ हो

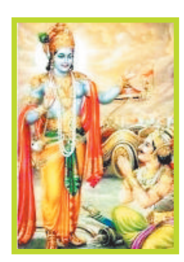

संकलित
## प्रेरणा

एक वृद्ध महिला एक सब्जी की दुकान पर जाती है, उसके पास सब्जी खरीदने के पैसे नहीं होते है। वो दुकानदार से प्रार्थना करती है कि उसे सब्जी उधार दे दे पर दुकानदार मना कर देता है। उसके बार-बार आग्रह करने पर दुकानदार खीज कर कहता है, तुम्हारे पास कुछ ऐसा है, जिसकी कोई कीमत हो, तो उसे इस तराजू पर रख दो, मैं उसके वजन के बराबर सब्जी तुम्हे दे दूंगा। वृद्ध महिला कुछ देर सोच में पड़ जाती है। क्योंकि उसके पास ऐसा कुछ भी नहीं था। कुछ देर सोचने के बाद वह, एक मुड़ा-तुड़ा कागज का टुकड़ा निकालती है और उस पर कुछ लिख कर तराजू पर रख देती है। दुकानदार ये देख कर हंसने लगता है। फिर भी वह थोड़ी सब्जी उठाकर तराजू पर रखता है। आश्चर्य..!!! कागज वाला पलड़ा नीचे रहता है और सब्जी वाला ऊपर उठ जाता है। इस तरह वो और सब्जी रखता जाता है पर कागज वाला पलड़ा नीचे नहीं होता। तंग आकर दुकानदार उस कागज को उठा कर पढ़ता है और हैरान रह जाता है। कागज पर लिखा था, हे श्री कृष्ण! तुम सर्वज्ञ हो, अब सब कुछ तुम्हारे हाथ में है। दुकानदार को अपनी आँखों पर यकीन नहीं हो रहा था। वो उतनी सब्जी वृद्ध महिला को दे देता है। पास खड़ा एक अन्य ग्राहक दुकानदार को समझाता है, कि दोस्त, आश्चर्य मत करो। केवल श्री कृष्ण ही जानते हैं की प्रार्थना का क्या मोल होता है। वास्तव में प्रार्थना में बहुत शक्ति होती है। चाहे वो एक घंटे की हो या एक मिनट की।

## अंतर्मन

## आज की पाती

### ऊर्जा क्रांति की नई पारदर्शी शुरुआत

दुनिया तेजी से स्वच्छ ऊर्जा की ओर बढ़ रही है और इसी दिशा में सिंगापुर की एक यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने ऐसी अल्ट्रा–थिन सोलर सेल विकसित की है, जो आने वाले वर्षों में ऊर्जा उत्पादन की पूरी तस्वीर बदल सकती है। यह तकनीक इतनी पतली है कि इनसान के बाल के 10,000वें हिस्से जितनी मोटाई में भी बिजली पैदा कर सकती है। खास बात यह है कि यह सोलर सेल पारदर्शी और रंगहीन है, इसलिए इसे खिड़कियों, कारों की विंडशील्ड, मोबाइल स्क्रीन, स्मार्ट ग्लास और ऊंची इमारतों के कांच पर आसानी से लगाया जा सकता है। अब तक सोलर ऊर्जा का मतलब बड़े और भारी पैनल माने जाते थे, जिन्हें छतों पर लगाने के लिए पर्याप्त जगह चाहिए होती है। नई तकनीक 'बिल्डिंग इंटीग्रेटेड फोटोवोल्टिक' अवधारणा को नई गति दे सकती है। *– सुभाष सोनी, दुर्ग*

## X ट्रेंड

### गर्व का क्षण

भारत के लिए गर्व का क्षण है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को स्लोवाकिया के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'द ऑर्डर ऑफ़ द व्हाइट डबल क्रॉस (फर्स्ट क्लास)' से सम्मानित किया गया है।

\- **नितिन गडकरी,** केंद्रीय राजमार्ग मंत्री

### सपनों पर चोट

आज इस देश में, कड़ी मेहनत का फल नहीं मिलता, बल्कि सपने देखने की हिम्मत करने पर सज़ा मिलती है। हर पेपर लीक, हर रद्द परीक्षा, हर रुकी हुई भर्ती - ये सिर्फ़ सिस्टम की नाकामी नहीं हैं, बल्कि लाखों लोगों के सपनों पर चोट है।

\- **राहुल गांधी,** सांसद, कांग्रेस

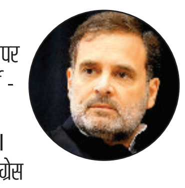

### ऐतिहासिक उपलब्धि

एक समय था जब अवैध शिकार की घटनाएं अखबारों की सुर्खियां बनती थीं, और आज स्थिति यह है कि शिकार का एक भी मामला न होना सामान्य बात बन गई है। यह ऐतिहासिक उपलब्धि असम द्वारा किए गए अथक प्रयासों का प्रमाण है।

\- **हिमंत बिस्व शर्मा,** सीएम, असम

### बेरोज़गारी दर

मई के महीने में देश में बेरोज़गारी दर 5.5 प्रतिशत तक पहुंच गई, जो पिछले 11 महीनों में सबसे ज़्यादा है। यह देश भर में संगठित और असंगठित क्षेत्रों में काम की तलाश कर रहे लोगों के लिए बुरी खबर है। मध्य प्रदेश जैसे राज्यों पर इसका सबसे बुरा असर पड़ेगा।

\- **कमलनाथ,** पूर्व सीएम, मध्यप्रदेश

## करंट अफेयर

# शिकागो में स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा का अनावरण

अमेरिका में भारत के राजदूत विनय मोहन क्वात्रा ने शिकागो स्थित भारतीय महावाणिज्य दूतावास परिसर में स्वामी विवेकानंद की आदमकद प्रतिमा का अनावरण किया। स्वामी विवेकानंद एक महान दार्शनिक, चिंतक और आध्यात्मिक नेता थे। उन्होंने वेदांत और योग के संदेश को विश्वभर में पहुंचाया। अमेरिका में उन्हें विशेष रूप से वर्ष 1893 में शिकागो में आयोजित विश्व धर्म संसद में दिए गए ऐतिहासिक और प्रेरणादायी संबोधन के लिए याद किया जाता है। विनय मोहन क्वात्रा ने प्रतिमा के अनावरण के अवसर पर सोमवार को सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में कहा, शिकागो स्थित भारतीय वाणिज्य दूतावास में स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा का अनावरण करना मेरे लिए गर्व का क्षण है। यह हमारे प्रवासी भारतीय समुदाय की ओर से मिला एक अनमोल उपहार है। सेवा, मानवता और सार्वभौमिक सद्भाव का उनका (स्वामी विवेकानंद) कालजयी संदेश आज भी हम सभी को प्रेरित करता है। हमारे जीवंत और ऊर्जावान भारतीय समुदाय से जुड़ने का अवसर मिलने के लिए मैं हृदय से आभारी हूं। स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा के अनावरण का समारोह रविवार को शिकागो स्थित भारतीय महावाणिज्य दूतावास में आयोजित किया गया।

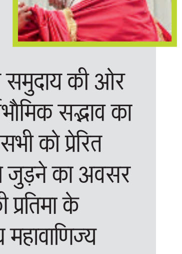

## ऑफ बीट

# टीएनटी जितना शक्तिशाली होता है उल्काओं का 'सोनिक बूम'

पृथ्वी जिस अंतरिक्षीय वातावरण में स्थित है, वह पूरी तरह शांत नहीं है। वैज्ञानिकों के अनुसार हमारा ग्रह सौरमंडल के निर्माण के समय से बचे असंख्य पथरीले और धात्विक मलबे के बीच से लगातार गुजरता है। अधिकांश छोटे कण पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करते ही जलकर समाप्त हो जाते हैं और रात के आकाश में चमकते टूटते तारे के रूप में दिखाई देते हैं। लेकिन कभी–कभी बड़े या तेज गति से आने वाले पिंड के वायुमंडल में प्रवेश करते ही विस्फोट, तेज चमक और सोनिक बूम जैसी घटनाएं होती हैं, जो लोगों को चौंका देती हैं। उल्का का सोनिक बूम वह तेज धमाके जैसी आवाज़ होती है, जो तब सुनाई देती है जब कोई उल्कापिंड पृथ्वी के वायुमंडल में बहुत तेज गति से प्रवेश करता है और ध्वनि की गति से भी तेज चलता है। हाल ही में 30 मई 2026 को अमेरिका के मैसाचुसेट्स और न्यू हैम्पशायर की सीमा क्षेत्र में एक तेज धमाके जैसी आवाज ने लोगों को हिला दिया। यह आवाज इतनी तेज थी कि इसे पूर्वी अमेरिका के कई हिस्सों में महसूस किया गया। नासा के अनुसार, यह उल्का लगभग 3 से 5 फुट (लगभग 1 से 2 मीटर) व्यास का था। यह लगभग 42,000 मील प्रति घंटे (करीब 68,000 किलोमीटर प्रति घंटे) की गति से पृथ्वी की ओर आ रहा था।

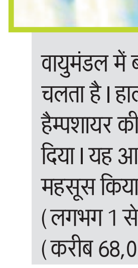

हमारा पता
हरिभूमि कार्यालय
रिंग रोड नं. 2, गौरवपथ, बिलासपुर
फोन: 401050,271016,फैक्स-271018
ई-मेल: haribhoomibsp@gmail.com
वेब-साइट: www.haribhoomi.com

### आम खरीदार पहले ही दूर, अब शादियों के लिए ही जरूरत की खरीदारी

# सराफा कारोबार 80 फीसदी चौपट, निवेशक भी हुए दूर, रोज का 25 करोड़ निवेश घटा

हरिभूमि न्यूजः रायपुर

प्रदेश में रोज सोने और चांदी का करीब 50 करोड़ का कारोबार होता है, इसमें से करीब 30 करोड़ का कारोबार निवेश से ही होता है। अब निवेशकों ने हाथ खड़े कर दिए हैं, तो रोज करीब 25 करोड़ का कारोबार प्रभावित हो गया है। 80 फीसदी निवेश भी बंद हो गया है। यही नहीं, आम खरीदारी भी बहुत कम होने के कारण सराफा कारोबारियों की हालत खराब हो गई है। आम खरीदारी भी 80 फीसदी कम हो गई है। जिनको शादी के लिए जरूरत है, वही खरीदारी हो रही है। कुल मिलाकर रोज का कारोबार अब दस करोड़ से भी कम का रह गया है। चांदी के आयात पर प्रतिबंध के कारण इसके दाम बढ़ने की संभावना थी, लेकिन अब दाम कम हो गए हैं।

अपने राज्य छत्तीसगढ़ में सराफा का बड़ा कारोबार निवेश से ही चलता है। यहां पर रोज का जितना कारोबार होता है, उसमें से 60 फीसदी हिस्सा निवेश का रहता है। सोने और चांदी के बढ़ते दाम के कारण निवेश में लगातार इजाफा हुआ है, लेकिन अब बीते करीब एक माह से निवेशकों ने भी निवेश से तौबा कर ली है। काफी कम निवेशक ही निवेश कर रहे हैं।

सराफा कारोबारियों के मुताबिक सराफा का कारोबार तो अब पूरी तरह से चौपट ही हो गया है। आम खरीदारी सोने और चांदी के बढ़ते दाम के कारण पहले ही कम हो गई है। अब तो चांदी का आयात बंद होने के बाद चांदी का आना भी बंद हो गया तो इसका कारोबार नहीं के बराबर हो रहा है। इसी के साथ सोने के जेवरों की खरीदारी भी नहीं के बराबर हो गई है। आम लोग जो पहले सोने और चांदी में निवेश करने के लिए सोना और चांदी खरीदते थे, उनकी खरीदारी पूरी तरह से बंद है। अब कोई भी इसमें निवेश नहीं करना चाहता है। बड़े निवेशकों ने भी निवेश लगभग बंद कर दिया है। जिन कारोबारियों के यहां रोज एक करोड़ का कारोबार होता है, उनका रोज का कारोबार अब 20 लाख का भी नहीं हो रहा है। छोटे कारोबारियों को कई बार बोहनी के भी लाले पड़ रहे हैं। अब तो अगले माह से शादियों का सीजन भी समाप्त हो जाएगा और हालत और खराब हो जाएगी। इस समय शादियों के लिए थोड़ी-बहुत खरीदारी हो रही है।

**दाम बढ़े नहीं घटे**

चांदी पर बीते माह 16 मई से प्रतिबंध लगा है। इसके एक दिन पहले चांदी के दाम 287600 रुपए थे। चांदी कारोबारी लक्ष्मी नारायण लाहोटी के मुताबिक ऐसी संभावना जताई जा रही थी कि चांदी का आयात बंद होने से निवेशकों की चांदी बाहर आएगी तो दाम बढ़ेंगे। लेकिन दाम बढ़ने के स्थान पर कम हो गए हैं। इस समय चांदी के दाम 259750 रुपए हैं। इसी के साथ सोने के दाम भी कम ही हुए हैं। सोना एक माह पहले 166600 रुपए था, यह अब 155650 रुपए हो गया है। श्री लाहोटी के मुताबिक डिमांड कम होने के कारण दाम कम हो रहे हैं और कारोबार भी नहीं हो रहा है।

### 80 फीसदी कारोबार प्रभावित

सोने और चांदी के निवेशकों के साथ ही आम खरीदारी भी अब 80 फीसदी प्रभावित हो गई है। शादियों के कारण 20 फीसदी खरीदारी हो रही है। इसका सीजन समाप्त होने के बाद कारोबार और कम हो जाएगा।

**- कमल सोनी**, अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ सराफा एसोसिएशन

# 6.93 करोड़ का फर्जी आईटीसी घोटाला, 5 माह से फरार ओम किरण इस्पात उद्योग का पार्टनर गिरफ्तार

### न्यायालयों में अग्रिम जमानत खारिज होने के बाद पकड़ में आया

हरिभूमि न्यूजः रायपुर।

कर चोरी एवं फर्जी बिलिंग सिंडिकेट के विरुद्ध महानिदेशालय जीएसटी इंटेलिजेंस (डीजीजीआई) रायपुर क्षेत्रीय इकाई के अधिकारियों ने 6.93 करोड़ रुपए के फर्जी इनपुट टैक्स क्रेडिट (आईटीसी) घोटाला मामले में मेसर्स ओम किरण इस्पात उद्योग के पार्टनर हरीश वाधवानी को गिरफ्तार करने में सफलता पाई है। आरोपी पिछले 5 महीने से फरार चल रहा था।

एडिशनल डायरेक्टर जनरल सुजीत मलिक के नेतृत्व में डीजीजीआई रायपुर के अधिकारियों ने केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर (सीजीएसटी) अधिनियम 2017 की धारा 69(1) के अंतर्गत हरीश वाधवानी को गिरफ्तार किया है। जांच में यह पाया गया कि हरीश ने वास्तविक माल की प्राप्ति के बिना लगभग 6.93 करोड़ के फर्जी इनपुट टैक्स क्रेडिट (आईटीसी) का लाभ प्राप्त कर उसका उपयोग किया है। डीजीजीआई द्वारा विकसित खुफिया सूचना एवं जांच के दौरान यह भी सामने आया कि मेसर्स ओम किरण इस्पात उद्योग, अस्तित्वहीन, फर्जी एवं गैर-संचालित फर्मों के बहु-स्तरीय नेटवर्क के माध्यम से अवैध आईटीसी प्राप्त करने के संगठित रैकेट में संलिप्त था। करदाता के जीएसटीआर-2ए एवं अन्य अभिलेखों की जांच से यह भी पता चला कि बड़ी मात्रा में फर्जी आईटीसी ऐसे जीएसटी पंजीकरणों से प्राप्त किया गया था, जिन्हें बाद में निलंबित अथवा निरस्त कर दिया गया। आरोपी वाधवानी पिछले लगभग पांच माह से फरार चल रहा था। उसने गिरफ्तारी से बचने के लिए निचले न्यायालयों में अग्रिम जमानत के लिए अर्जी लगाई थी, जिसे खारिज कर दिया गया। आखिरी बार उसने सुप्रीम कोर्ट में भी याचिका लगाई थी, जिसे कोर्ट ने अस्वीकार कर दिया। इस तरह सुप्रीम कोर्ट से जमानत अर्जी स्वीकार नहीं किए जाने के बाद डीजीजीआई ने आरोपी को ढूंढ निकाला और उसे गिरफ्तार किया।

### जांच में और गिरफ्तारी-खुलासे होने की संभावना

डीजीजीआई अधिकारियों का कहना है कि इस मामले की जांच अभी जारी है। फर्जी बिलिंग नेटवर्क, धन के प्रवाह तथा अन्य संबंधित व्यक्तियों की भूमिका की गहन जांच की जा रही है। जांच के दौरान प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर आने वाले समय में इस प्रकरण में अन्य व्यक्तियों की गिरफ्तारी भी की जा सकती है, जिससे अन्य घोटालों के खुलासे भी होने की संभावना है। डीजीजीआई ने स्पष्ट किया है कि फर्जी बिलिंग, कर चोरी एवं राजस्व को क्षति पहुंचाने वाले संगठित नेटवर्क के विरुद्ध कठोर एवं प्रभावी कार्रवाई भविष्य में भी निरंतर जारी रहेगी।

# काम के साथ परिवार की जिम्मेदारी निभाना एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रहना बहुत जरूरी

हरिभूमि न्यूजः रायपुर

- कलेक्टर की मौजूदगी में रेडक्रॉस सभाकक्ष में प्रोजेक्ट शांति का पहला विशेष सत्र कार्यक्रम

भागदौड़ की इस जिंदगी में परिवार और काम के बीच संतुलन बनाने के साथ स्वयं को भी मानसिक एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रख पाना चुनौतीपूर्ण है, लेकिन नामुमकिन नहीं है। सरकारी दफ्तरों में कार्य करने वाले कई कर्मचारी इस तरह का चुनौतीपूर्ण जीवन जी रहे हैं, जिसके कारण वे तनाव में भी रहते हैं। इस तनाव को दूर करने और कार्य तथा जीवन में संतुलन बनाए रखने के लिए ही कलेक्टर की पहल पर प्रोजेक्ट शांति की शुरुआत की गई है। इस प्रोजेक्ट शांति के तहत पहला विशेष सत्र मंगलवार को आयोजित हुआ, जिसमें कलेक्टर गौरव सिंह सहित कई अधिकारियों के साथ विभिन्न विभागों के अधिकारी भी शामिल हुए।

कलेक्टोरेट स्थित रेडक्रास हॉल में आयोजित सत्र के दौरान कलेक्टर गौरव सिंह ने कहा कि सरकारी कर्मचारियों के लिए मानसिक रूप से स्वस्थ रहना उतना ही जरूरी है, जितना अपने काम को पूरी जिम्मेदारी से करना। उन्होंने अधिकारियों से समय पर कार्यालय आने और समय पर घर जाने, कार्यालय में पूरी दक्षता और ईमानदारी से काम करने तथा परिवार के लिए भी पर्याप्त समय निकालने की अपील की। उन्होंने कहा कि संतुलित जीवन से कर्मचारी बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं और जनता को भी अच्छी सेवाएं मिलती हैं। उन्होंने जिले के सभी विभागाध्यक्षों को प्रेरित किया कि वे भी अपने-अपने कार्यालयों में इस तरह के मानसिक स्वास्थ्य और वर्क-लाइफ बैलेंस से जुड़े सत्र निःशुल्क आयोजित करें, ताकि अधिक से अधिक अधिकारी-कर्मचारी इसका लाभ उठा सकें और कार्यालय में सकारात्मक वातावरण तैयार हो।

### प्रोजेक्ट शांति के तहत वर्क-लाइफ बैलेंस पर हुई चर्चा

सत्र में हमिंग माइंड्स लाइफ की प्रमुख मनोवैज्ञानिक तनीषा पोद्दार ने अधिकारियों से मानसिक स्वास्थ्य, तनाव प्रबंधन, आत्म-समझ और कार्य-जीवन संतुलन जैसे विषयों पर चर्चा की। अधिकारियों ने विभिन्न गतिविधियों और अभ्यासों में भाग भी लिया। सत्र में एडीएम उमाशंकर बंदे, अपर कलेक्टर कीर्तिमान सिंह राठौर, मनीष मिश्रा सहित अन्य विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

# अभनपुर-कुरुद नई ब्रॉड गेज लाइन का स्पीड ट्रायल आज, 110 किमी घंटे की रफ्तार से दौड़ेगी ट्रेन

**रायपुर।** अभनपुर से कुरुद के बीच नई ब्रॉड गेज रेलवे लाइन का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है। पटरी बिछाने का काम खत्म होने के बाद अब रेलवे ने इस नई लाइन पर आज सुबह 10 बजे स्पीड ट्रायल करने की पूरी तैयारी कर ली है। यह हाई स्पीड ट्रायल एक स्पेशल ट्रेन के जरिए किया जाएगा। इस दौरान ट्रेन की रफ्तार 110 किलोमीटर प्रति घंटे से भी अधिक रखी जाएगी ताकि ट्रैक की क्षमता और सुरक्षा मानकों को परखा जा सके। बता दें कि अभनपुर से कुरुद के बीच पहले छोटी लाइन, नैरो गेज हुआ करती थी, जिसे अब बड़ी लाइन, ब्रॉड गेज में तब्दील कर दिया गया है। इस नई ब्रॉड गेज लाइन के शुरू होने से क्षेत्रवासियों को आवागमन में बड़ी सुविधा मिलेगी। रेलवे की योजना के मुताबिक, ट्रैक का सफल ट्रायल होने और सभी जरूरी मंजूरियां मिलने के बाद भविष्य में इस रूट पर लोकल ट्रेनों के साथ-साथ एक्सप्रेस ट्रेनों का परिचालन भी शुरू किया जा सकेगा।

### रेलवे प्रशासन ने जारी की चेतावनी

इस हाई स्पीड ट्रायल को देखते हुए रेलवे प्रशासन ने सुरक्षा के लिहाज से अलर्ट जारी किया है। रेलवे ने आम जनता को सूचित करते हुए अपील की है कि ट्रायल के दौरान कोई भी व्यक्ति रेलवे लाइन के करीब न जाए। साथ ही, ग्रामीण अपने मवेशियों को भी रेलवे ट्रैक से पूरी तरह दूर रखें। रेलवे ने स्पष्ट चेतावनी दी है कि ट्रैक पर आने के कारण होने वाली किसी भी प्रकार की जन-धन या माल की क्षति के लिए रेलवे प्रशासन जिम्मेदार नहीं होगा।

# भारत के वीर पुत्र महाराणा प्रताप की जयंती पर शत्-शत् नमन...

## साहस और दृढ़ इच्छाशक्ति के लिए याद किए जाते हैं महाराणा प्रताप

महाराणा प्रताप मेवाड़ के वीर और महान राजा थे, जिनका जन्म राजस्थान, भारत में हुआ था। उन्हें मुगल सम्राट अकबर से अपने राज्य की रक्षा करने के उनके साहस और दृढ़ इच्छाशक्ति के लिए याद किया जाता है।

महाराणा प्रताप ने कई कठिन युद्ध लड़े, जिनमें हल्दीघाटी का युद्ध सबसे प्रसिद्ध है। अनेक कठिनाइयों का सामना करने के बावजूद, उन्होंने कभी हार नहीं मानी और अपनी प्रजा की स्वतंत्रता और कल्याण के लिए समर्पित एक सरल जीवन व्यतीत किया। मातृभूमि के प्रति उनका दृढ़ संकल्प और प्रेम उन्हें भारतीय इतिहास में एक महान व्यक्तित्व बनाता है। महाराणा प्रताप वीरता और देशभक्ति के सच्चे प्रतीक के रूप में बच्चों और बड़ों को प्रेरित करते रहते हैं। महाराणा प्रताप एक साहसी और दृढ़ निश्चयी शासक थे, जो आक्रमणकारियों के विरुद्ध अपनी वीरता के लिए जाने जाते थे। उनकी सबसे प्रसिद्ध लड़ाइयों में से एक सन् 1576 में हुई हल्दीघाटी की लड़ाई थी, जहां उन्होंने अपनी वफादार सेना और अपने प्रसिद्ध घोड़े चेतक के साथ मुगल सेना का बड़े साहस से सामना किया। हालांकि यह लड़ाई कठिन और चुनौतीपूर्ण थी, महाराणा प्रताप ने कभी उम्मीद नहीं छोड़ी और कई वर्षों तक शत्रु का प्रतिरोध करते रहे। युद्ध के बाद जंगलों में कठिन जीवन व्यतीत करने के बावजूद, महाराणा प्रताप अपनी भूमि की रक्षा के लिए समर्पित रहे। वे अपनी सादगी, ईमानदारी और दृढ़ निश्चय के लिए जाने जाते थे। उनके बलिदान और वीरता ने उन्हें भारतीय इतिहास में देशभक्ति और सम्मान का प्रतीक बना दिया है।

महाराणा प्रताप भारतीय इतिहास के सबसे प्रसिद्ध और प्रशंसित योद्धाओं में से एक हैं, जो अपनी असाधारण वीरता, देशभक्ति और राज्य की रक्षा के प्रति अटूट समर्पण के लिए जाने जाते हैं। 16वीं शताब्दी में जन्मे महाराणा प्रताप को साहस और बलिदान के प्रतीक के रूप में याद किया जाता है, जिन्होंने पीढ़ियों को विपरीत परिस्थितियों में दृढ़ रहने की प्रेरणा दी। उनका जीवन और कार्य भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए हैं।

### महाराणा प्रताप का बचपन और प्रारंभिक जीवन

महाराणा प्रताप का जन्म जेष्ट मास के शुक्ल पक्ष तृतीया विक्रम संवत् 1597 को राजस्थान के ऐतिहासिक कुंभलगढ़ किले में हुआ था। वे महाराणा उदय सिंह द्वितीय और रानी जयवंता बाई के सबसे बड़े पुत्र थे। बचपन से ही प्रताप में साहस और नेतृत्व क्षमता के लक्षण दिखाई देने लगे थे। राजपूत परंपरा के अनुसार, उन्हें घुड़सवारी, तलवारबाजी और युद्ध कला का कठोर प्रशिक्षण दिया गया था। उनकी शिक्षा केवल अकादमिक तक ही सीमित नहीं थी, बल्कि उन्हें एक शक्तिशाली और न्यायप्रिय शासक बनाने पर भी केंद्रित थी, जो अपनी प्रजा और राज्य की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध रहे।

### महाराणा प्रताप का सैन्य जीवन

महाराणा प्रताप का सैन्य जीवन मुख्य रूप से मुगल सम्राट अकबर की विस्तारवादी नीतियों के विरुद्ध उनके संघर्ष के लिए प्रसिद्ध है। सबसे महत्वपूर्ण क्षणों में से एक सन् 1576 में हल्दीघाटी का युद्ध था, जहाँ महाराणा प्रताप ने अपनी कम संख्या वाली सेना का नेतृत्व करते हुए विशाल मुगल सेना का सामना किया। यद्यपि युद्ध भीषण और क्रूर था, महाराणा प्रताप ने आत्मसमर्पण करने से इनकार कर दिया। कई असफलताओं का सामना करने के बावजूद, उन्होंने कई वर्षों तक मुगल विजय का प्रतिरोध जारी रखने के लिए गुरिल्ला युद्ध की रणनीति अपनाई। उनके वफादार घोड़े चेतक ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और युद्ध के दौरान अपनी बलिदान के लिए याद किया जाता है।

### महाराणा प्रताप का निजी जीवन

युद्ध की निरंतर चुनौतियों के बावजूद, महाराणा प्रताप ने एक अनुशासित और सरल जीवन शैली बनाए रखी। उनका निजी जीवन विनम्रता, भक्ति और उत्तरदायित्व के मूल्यों को दर्शाता था। उनकी प्रजा उन्हें उनके समर्पण और राज्य के कल्याण को व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं से ऊपर रखने के कारण अत्यंत प्रिय मानती थी। राज्य की रक्षा पर ध्यान केंद्रित करते हुए पारिवारिक जिम्मेदारियों को संतुलित करने की उनकी क्षमता ने सभी को प्रेरित किया।

### महाराणा प्रताप की उपलब्धियां

युद्धक्षेत्र में अपने शौर्य के अलावा, महाराणा प्रताप को मेवाड़ की संस्कृति, परंपराओं और स्वतंत्रता की रक्षा करने के लिए याद किया जाता है। मुगल शासन को अस्वीकार करने के उनके फैसले ने अनगिनत लोगों को स्वतंत्रता और सम्मान का महत्व समझने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने अपने वफादार समर्थकों के साथ एकजुट होकर अपने खोए हुए अधिकांश क्षेत्र को वापस हासिल किया और यह सुनिश्चित किया कि उनके क्षेत्र में स्वतंत्रता की भावना जीवित रहे। महाराणा प्रताप के नेतृत्व और अटूट साहस ने उन्हें एक महान व्यक्तित्व बना दिया, जिनका प्रभाव उनके समय से कहीं आगे तक फैला हुआ है।

मेवाड़ के गौरव व दानवीर भाभाशाह ने महाराणा के चरणों में अपनी समस्त संपत्ती रख दी थी। भाभाशाह ने 20 लाख अशर्फियां और 25 लाख रुपए माहाराणा को भेंट में प्रदान की। महाराणा इस प्रचूर संपत्ती से पुन: सौन्य संगठन में लगा दी, इस  अनुपम सहायता से प्रोत्याहित होकर महाराणा ने अपने सौन्य बल पुनर्गठन किया तथा उनकी सेना में नव जीवन का संचार हुआ।

महाराणा प्रताप को एक ऐसे नायक के रूप में याद किया जाता है जिन्होंने अपने विश्वासों और अपनी प्रजा के लिए अथक संघर्ष किया। महाराणा प्रताप भारतीय इतिहास में वीरता, बलिदान और देशभक्ति के शाश्वत प्रतीक बने रहेंगे। उनका जीवन हमें साहस, सम्मान और देश प्रेम का महत्व सिखाता है, जो महाराणा प्रताप को एक सच्चा राष्ट्रीय नायक और नेतृत्व एवं दृढ़ता का एक उत्कृष्ट उदाहरण बनाता है।

---

विक्रम सिंह
उपाध्यक्ष
ज.पं.-बिल्हा

संजय सिंह राजपूत
रास्ट्रीय संयोजक
(छत्तीसगढ़ स्वराज सेना)
राष्ट्रीय सचिव एवं छत्तीसगढ़ प्रभारी
निषाद पार्टी

अरूण सिंह चौहान
पूर्व अध्यक्ष
जिला पंचायत

ज्ञानेश्वर सिंह
(एडवोकेट)
ऑफिस : हाईकोर्ट के सामने,
द्वारिकापुरम कॉलोनी,
सी ब्लॉक एल. आई. जी.12-13

राजेंद्र सिंह राजपूत

दुर्गेश प्रताप सिंह (रवि)
सचिव
काँग्रेस कमेटी बिलासपुर

आशीष सिंह

नितेश सिंह ठाकुर
उपाध्यक्ष
जनपंद पंचायत मस्तुरी

कमल सिंह ठाकुर
जिला महामंत्री
कांग्रेस कमेटी

ठा. अजीत सिंह

ठा. हरीश सिंह क्षत्रीय
मां गायत्री कंस्ट्रक्शन
विराशत परिसर, दीन दयाल
कॉलोनी रोड, मंगला

रंजीत सिंह
जिला अध्यक्ष
NSUI बिलासपुर छत्तीसगढ़

निलेश सिंह
जिला उपाध्यक्ष
भा.ज. पा. युवा मोर्चा
बिलासपुर (शहर)

ठा. आशीष सिंह

अतुल सिंह

आलोक सिंह

शक्ति सिंह ठाकुर
संचालक - हरी चटनी

रौशन सिंह
प्रदेश कार्यसमित सदस्य
भारतीय जनता युवा मोर्चा
छत्तीसगढ़

अर्जून सिंह

शक्ति सिंह

**महाराणा प्रताप जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं**

भितिचित्र

सतीश उपाध्याय

# सरगुजा अंचल में प्रसिद्ध रजवार भित्तिचित्र

सरगुजा क्षेत्र के तहसील अंबिकापुर अंतर्गत आने वाले गांव पुहपुटरा, लखनपुर, केना पारा आदि में गांव की महिलाओं द्वारा कच्ची मिट्टी से बनी झोपड़ियों की दीवारों पर गोबर, चाक मिट्टी से आकृति ऊकेरी जाती है। खासकर विभिन्न त्योहारों, धार्मिक अवसरों के समय अपने घरों की सज्जा हेतु दीवारों में कच्ची मिट्टी द्वारा पेड़ पौधों, पशु पक्षियों आदि की आकृतियां बना कर उनमें अनेक रंग भरे जाते हैं जिससे देखने में आकर्षक लगते हैं। यहां यह कला रजवार भित्ति चित्र कला के नाम से जानी जाती है। देश विदेश में इन भित्ति चित्रों की प्रदर्शनी भी लगाई जाती है, जिसमें करमा माता की पूजा, करमा नाच, राहगीर, बैलगाड़ी, मछली पकड़ने का दृश्य गोधूलि बेला तथा श्रृंगार की हुई ग्रामीण युवतियों के चित्रों को मूल विषय बनाया जाता है।

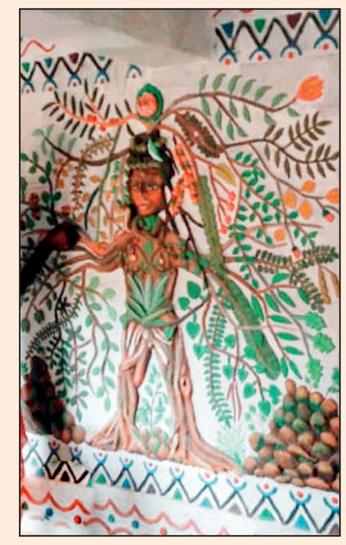

लोक साहित्य

कौस्तुभ मणि द्विवेदी

## जनपदीय भाषा म छतीसगढ़ी लोक भाषा के महत्व

छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य म इंहा के जन जीवन अनवरत चले आवत हे, परंपरा, कविता, विश्वास अउ आदर्श आज घलो सुरक्षित हे, ए अंचल के अपन एक पुरातन विराट फलक हे। मिले लोक साहित्य म हमन ल ए सत्य के उदाहरण मिलथे। लोक साहित्य ले लोगन मन के हिरदे छलक आथे, एमा लोक जीवन के जतना सहज अउ यथार्थ वर्णन मिलथे, ओतका दूसर साहित्य म नई मिलय। काबर कि ये ह कतको बछर ले लोगन मन ले रूप ल बदलत आगू बढ़त रहिथे अउ बढ़त रही। कोनो भी साहित्य के मूल्य सापेक्ष होना असाधारण गोठ नोहे, असल बात तो मूल्य ल सार्थकता प्रदान करे बर हे, कभू तो होथे ए कि मनखे जीवन के आदत दोष पूर्ण या दुर्बल होथे फेर मूल्यांकनकर्ता के नाते हम ओला निजी संतुष्टि बर बढ़ा चढ़ा के रख देथन। आज छत्तीसगढ़ी साहित्य हिन्दी के आधुनिक युग के बरोबर बहत हे। दूसर डहन अपन लोक साहित्य के विशिष्टता के आधार म अपन मौलिकता ला पूरा रूप ले बनाए रखे हन। एकरे सेती जनपदीय भाषा मन म छत्तीसगढ़ी लोक भाषा के अपन अलग महत्व हे।

लोक गीत

डा. राजन यादव

## छत्तीसगढ़ के लोक गीतों में रचे बसे हैं भगवान राम

छत्तीसगढ़ी लोक गीतों में श्रीराम कथा और पावन प्रसंगों को सम्मान पूर्वक गाया जाता है। जिसमें नवधा रामायण, मानस यज्ञ, अखंड मानस पाठ, सुन्दर कांड पाठ, हनुमान चालीसा पाठ, रामरमिहा-कीर्तनियां, चऊमासा रामायण, अखंड कीर्तन, साप्ताहिक मानस मण्डलियां इत्यादि में श्रीराम कथा स्तुति की जाती है। यहां के उत्सवों, नृत्यों, लोककथाओं, पहेलियों, कहावतों व मुहावरों में राम कथा की स्पष्ट छाप है। राजा शबर की सुपुत्री शबरी के आश्रम में श्रीराम का आगमन मतंग ऋषि की भविष्यवाणी को लोक गायक आज भी गाते हैं। एक गीत का अंश-

सबरी आहीं दुनों भईया तोरो कुटिया में।<br>
मीठही मिठही कुंदरू बोइर रोज सकेलत रइबे,<br>
आहीं जब दशरथ के बेटा तै खाए बर कइबे,<br>
पक्का खाहीं रघुरइया तोरो कुटिया में।

### लेखकों से..

छत्तीसगढ़ की लोक कला, लोक साहित्य, पर्यटन, तीज त्योहार, गांव की कहानी, ऐतिहासिक, पुरातात्विक, शैलचित्र, भित्तिचित्र, कला कृति और पुरखा के सुरता के साथ ही सम सामयिक विषयों पर अधिकतम 500 शब्दों पर लेख भेजें- Choupalharibhoomi@gmail.com

# जगतूगुड़ा से नाम हुआ जगदलपुर

गांव की कहानी

कमलेश यादव

**आज जिस जगदलपुर को हम बस्तर की सांस्कृतिक राजधानी और संभाग मुख्यालय के रूप में जानते हैं, उसकी कहानी एक छोटे से गांव जगतूगुड़ा से शुरू होती है। यह केवल नाम बदलने की कहानी नहीं, बल्कि समय, संस्कृति, इतिहास और विकास की एक ऐसी यात्रा है, जिसने एक छोटे से बसेरे को पूरे बस्तर की पहचान बना दिया।**

करीब 1770 में बस्तर के पूर्व महाराजा दलपत देव ने जगतूगुड़ा को अपनी राजधानी बनाया। इसके बाद इस गांव की तकदीर बदलने लगी। राजमहलों की रौनक, प्रशासनिक गतिविधियों और लोगों की बढ़ती आवाजाही ने इसे धीरे-धीरे एक महत्वपूर्ण नगर का स्वरूप प्रदान किया। कहते हैं कि किसी स्थान की पहचान केवल उसकी इमारतों से नहीं, बल्कि वहां की संस्कृति और लोगों से बनती है। जगदलपुर इसका जीवंत उदाहरण है, जहां आदिवासी परंपराएं और शहरी संस्कृति आज भी एक-दूसरे का हाथ थामे नजर आती हैं।

अंग्रेजी शासन के दौरान भी जगदलपुर का महत्व बढ़ता गया और इसे प्रशासनिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बनाया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 1 जनवरी 1948 को बस्तर रियासत का भारतीय संघ में विलय हुआ और जगदलपुर अविभाजित बस्तर जिले का मुख्यालय बना। इसके साथ ही यह नगर विकास की नई राह पर आगे बढ़ता चला गया।

जगदलपुर की सुनियोजित बसाहट का श्रेय राजा रुद्रप्रताप के कार्यकाल में पंडित रायबहादुर बैजनाथ पंडा को दिया जाता है। उस समय नगर को व्यवस्थित रूप से बसाने की जो कल्पना की गई थी, उसकी झलक आज भी यहां के पुराने मोहल्लों में दिखाई देती है। ब्राह्मणपारा, पनारापारा, कुम्हारपारा, हिकमीपारा, राउतपारा, कोस्टापारा, घड़वापारा और परदेशीपारा जैसे मोहल्ले आज भी अपने इतिहास को संजोए हुए हैं। साल 1962 में लगभग नौ लाख रुपये की लागत से भव्य कलेक्टरेट भवन का निर्माण हुआ, जिसे आज भी लोग प्यार से ₹नवलखा बिल्डिंग₹ के नाम से जानते हैं। उस दौर की यह इमारत प्रशासनिक व्यवस्था और विकास की नई पहचान बन गई। इसके अलावा रियासतकालीन विश्राम भवन, पुराना जेल, न्यायालय, मंदिर, राजमहल और अन्य ऐतिहासिक स्मारक आज भी बीते समय की गवाही देते हैं।

समय के साथ जगदलपुर ने आधुनिकता को अपनाया, लेकिन अपनी जड़ों को कभी नहीं छोड़ा। यही कारण है कि आज यह शहर केवल प्रशासनिक केंद्र नहीं, बल्कि बस्तर की आत्मा के रूप में पहचाना जाता है। यहां के चौक-चौराहे, बाजार, त्यौहार, लोककलाएं और लोगों का अपनापन हर आगंतुक को अपनेपन का एहसास कराते हैं। शायद इसी वजह से जगदलपुर को आज चौराहों का शहर₹ भी कहा जाता है। जगतूगुड़ा से जगदलपुर बनने तक की यह अविस्मरणीय सफर हमें बताती है कि इतिहास केवल किताबों में नहीं बसता, वह शहरों की गलियों, पुरानी इमारतों और लोगों की स्मृतियों में भी जीवित रहता है। जगदलपुर उसी जीवंत इतिहास का नाम है, जो अपने अतीत को संजोए हुए भविष्य की ओर आत्मविश्वास के साथ बढ़ रहा है।

आस्था : गजानंद प्रसाद देवांगन

# अनेक रहस्यों से भरा नागाबेली दहरा

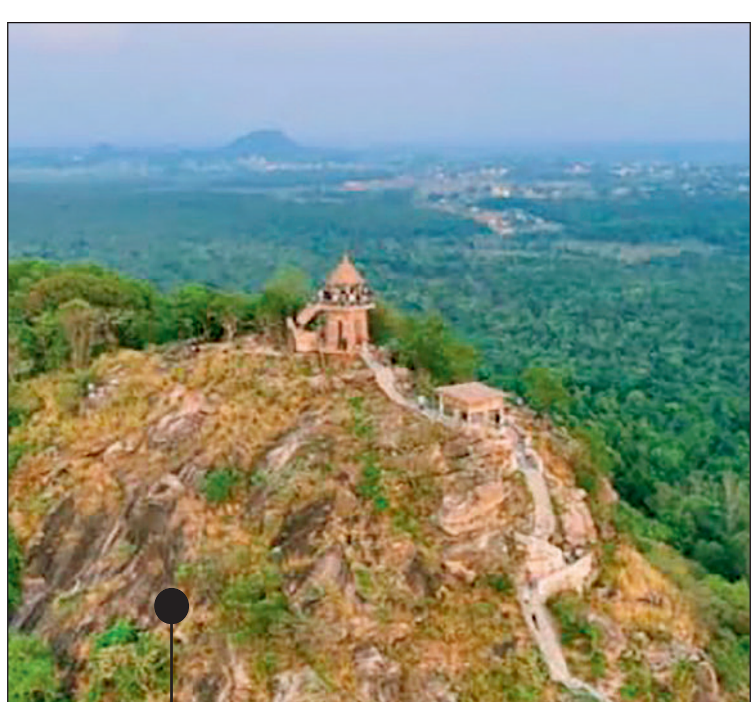

छगरियाबंद जिले में ग्राम कोसमी ( छुरा ) गांव में बहुत बड़ा और पुराना तालाब को नागाबेली दहरा नाम से जानते हैं। डोंगरी के पास ही यह तालाब काफी गहरा और दलदल युक्त है। इस तालाब में बड़ी बड़ी मछलियां भी हैं। इस तालाब में जितने भी डूबे उनका कभी पता नहीं चला। इस रहस्यमयी घटना के पीछे कारणों का आज तक पता नहीं चला। लोगों का मानना है कि इस तालाब में देव मछली का निवास है, जिसे पकड़ने के लिए किसी ने आज तक हिम्मत नहीं जुटा पाया। प्रयास भी किए गए पर सारे प्रयास असफल होते रहे। यहां लोगों की मान्यता है कि देव मछली के अग्र भाग में सोने की नथ जड़ी हुई है जो अपने भक्तों को दिखाई देती हैं। अनेक चमत्कारी घटनाओं के कारण इस स्थान को टेंगनाही डोंगरी के नाम से भी जानते हैं। पहले इस तालाब में पुस्तैनी मछली मारने का काम एक परिवार करता था, बाद में इस परिवार ने मछली मारना और खाना छोड़ दिए। साथ ही भक्ति भाव से तालाब की पूजा पाठ में लगा यह परिवार जड़ी बूटी के माध्यम से असाध्य रोगों का इलाज करते हैं, जिसमें स्वास्थ्य लाभ लेने लोग दूर दूर से यहां आते हैं, जो तालाब की विधिवत पूजा अर्चना भी करते हैं।

सुरता

प्रो. अश्विनी केशरवानी

# अनेक विधाओं में लेखन किए प. अमृतलाल दुबे

बिलासपुर के अरपा पार सरकंडा के भैरव प्रसाद दुबे और राम बाई के इकलौते पुत्र के रूप में अमृतलाल दुबे का जन्म 01 अगस्त 1925 को हुआ। स्नातक की परीक्षा पास होने के बाद वनवासी सेवा मंडल में क्षेत्राधिकारी के रूप में धरमजयगढ़ में पदस्थ हुए। एम ए करने के बाद म. प्र. आदिम जाति कल्याण विभाग में क्षेत्र संयोजक के रूप में अपनी सेवाएं दी। साथ साथ लेखन में रूचि होने के कारण 1953 में प्रयास प्रकाशन द्वारा उनकी हिन्दी छत्तीसगढ़ी कविताओं का संग्रह ' मानस मुकता ' का प्रकाशन हुआ। आपकी रचनाओं का प्रसारण आकाशवाणी अंबिकापुर, रायपुर और इंदौर केंद्र से होता रहा। आपने ददरिया को भी अच्छे ढंग से रेखांकित करने का प्रयास किया है। उनके एक गीत की बानगी -

परसा के साड़ी विराले पड़वा,<br>
तोर आई गए जवानी गड़ाले मड़वा।<br>
तोला कोनो नई Only झूमय माच्छी,<br>
बीन ले लुगरा दिए आंधी।

1963 में म. प्र. आदिम जाति कल्याण विभाग द्वारा उनके लोकगीतों के संग्रह को प्रकाशित की गई तथा इसी पुस्तक पर ईसूरी पुरस्कार प्रदान किया गया। अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक लेखन करते रहे तथा 55 वर्ष की अल्पायु में 02 अप्रैल सन 1980 को देहावसान हो गया।

ऐतिहासिक: डा. टी. आर. रामटेके

# बिलासपुर संभाग में स्थित रहा बच्छौदगढ़

**गुप्तकालीन चौथी शताब्दी इसवी का ईट निर्मित मंदिर खरौद में है। खरौदगढ़ को कलचुरी शासकों ने भी अपने राज्यकाल में गढ़ के रूप में उपयोग किया था। वर्तमान में खरौदगढ़ की खाई व मिट्टी के परकोटे के सिर्फ कुछ अवशेष उपलब्ध हैं।**

बिलासपुर संभाग मुख्यालय व जांजगीर जिला मुख्यालय से 35 कि मी दूरी पर बलौदा शहर से 5 कि मी दूरी पर स्थित है। गढ़ से एक कि मी दूरी पर लीलागर नदी है। गढ़ के प्रमुख प्राकार की भूतल पर चौड़ाई 45 मी व ऊंचाई 10 मी है। उसके बाहर की ओर परिंखा की चौड़ाई 50 मी व गहराई 15 मी है। प्राकार के भीतर की परिंखा की चौड़ाई 20 मी व गहराई 10 मी है। प्राकार के भीतर गढ़ का व्यास 250 मी है। गुप्तकालीन चौथी शताब्दी इसवी का ईट निर्मित मंदिर खरौद में है। खरौदगढ़ को कलचुरी शासकों ने भी अपने राज्यकाल में गढ़ के रूप में उपयोग किया था। वर्तमान में खरौदगढ़ की खाई व मिट्टी के परकोटे के सिर्फ कुछ अवशेष उपलब्ध हैं। उत्तरी भारत के मगध साम्राज्य से छत्तीसगढ़ की रक्षा हेतु रामगढ़ में पहाड़ी किले का निर्माण शरभपुरीय शासकों द्वारा किए जाने का अनुमान लगाया जाता है, क्योंकि गुप्त सम्राट समुद्र गुप्त के इलाहाबाद स्तम्भ अभिलेख में कोसल के राजा महेंद्र की पराजय का उल्लेख है। शरभपुरीय वंश के शासकों ने मल्हारगढ़ को ही शरभपुर के रूप में अपनी राजधानी बनाया।

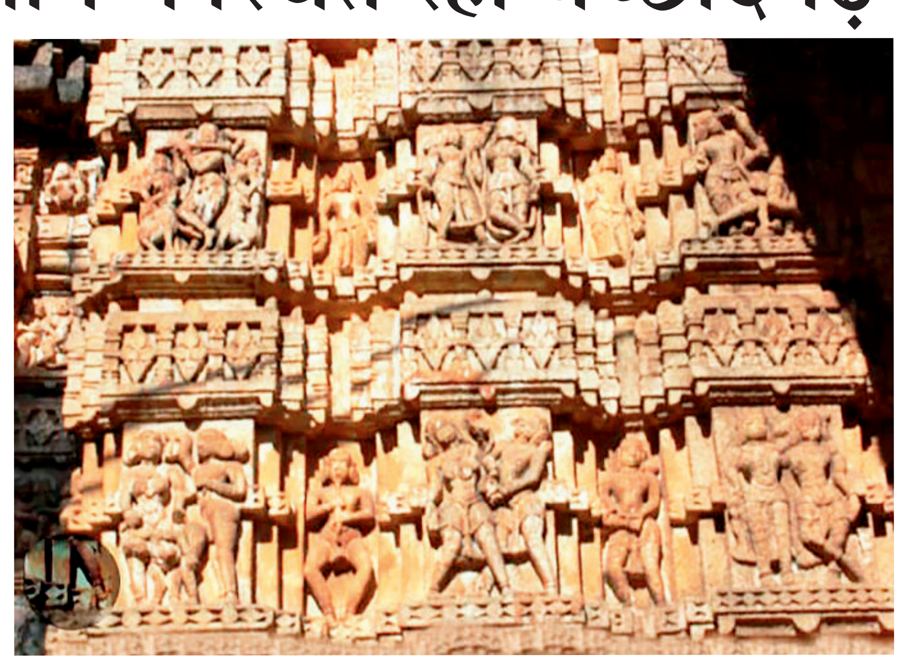

## कार्यालय नगर पालिका परिषद् बड़े बचेली, जिला दक्षिण बस्तर दन्तेवाड़ा (छ.ग.)

कार्यालय फोन नम्बर 07857-230261, ईमेल :- cmobch@rediffmail.com

क्रमांक/569/तक. शा./न.पा.प/2025-26 बड़े बचेली, दिनाँक :-16/06/2026

**//ई-प्रोक्यूरमेंट द्वितीय निविदा सूचना//**

**Main Portal: (https://eproc.cgstate.gov.in)**

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत D श्रेणी अथवा प्रवर श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नलिखित कार्य हेतु ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की गई है :-

| क्र. | ई-टेण्डर नंबर | कार्य का नाम | अनुमानित लागत (लाख में) | टेंडर डाउनलोड एवं अपलोड करने की अंतिम तिथि |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 193509 | pipe line extantion work 150 mm MS pipe NMDC Loading Plant To High Tech Coloney Ward 18 | 35.69 | 01.07.2026 |

उपरोक्तानुसार निर्माण कार्य निविदा की सामान्य शर्ते धरोहर राशि, निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी ई-प्रोक्यूरमेंट के मेन पोर्टल https://eproc.cgstate.gov.in से डाउनलोड किया जा सकता है। अन्य विवरण एवं विस्तृत जानकारी निविदा वेबसाईट पर देखी जा सकती है।

**मुख्य नगर पालिका अधिकारी**
**नगर पालिका परिषद् बड़े बचेली**
**जिला-दक्षिण बस्तर दन्तेवाड़ा (छ.ग.)**

## कार्यालय नगर पंचायत पखांजूर जिला उत्तर बस्तर कांकेर (छ.ग.)

Email ID: nppakhanjore@gmail.com Phone No. 07844-231036

क्रमांक/471/लो.नि.वि./न.पं./2026-27 पखांजूर, दिनांक 16.06.2026

**// ई - प्रोक्योरमेंट आमंत्रण सूचना (1st Call)//**

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नालिखित निर्माण कार्य हेतु दिनांक 17.06.2026 समय प्रातः 10:00 बजे से ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है :-

| क्र. | सिस्टम टेंडर नम्बर | कार्य का नाम | लागत राशि (लाख में) | अमानत राशि | निविदा डाउनलोड करने की अंतिम तिथि एवं समय | निविदा खोले जाने की तिथि एवं समय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| 1 | 193538 | नगर पंचायत पखांजूर में खेल परिसर स्थापना। | 186.10 | 1,40,000.00 (एक लाख चालीस हजार रुपये मात्र) TDR/FDR के रूप में, मुख्य नगर पालिका अधिकारी, पाखांजूर के पक्ष में।) | 08.07.2026 समय शाम 5:00 बजे तक | 10.07.2026 समय सुबह 10:00 बजे से |

उपरोक्त निर्माण कार्यों की निविदा की सामान्य शर्त, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी ई- प्रोक्योरमेंट के पोर्टल http://eproc.cgstate.gov.in एवं विभागीय पोर्टल http://uad.cg.gov.in से डाउनलोड की जा सकती है।

टीप :- अमानत राशि (मुल प्रति), शपथ पत्र एवं अन्य दस्तावेजों को बंद लिफाफे मे स्पीड पोस्ट के माध्यम से नगर पंचायत पखांजूर कार्यालय में 09.07.2026 समय शाम 5:00 बजे से पूर्व प्रेषित किया जाना अनिवार्य होगा।

**मुख्य नगरपालिका अधिकारी**
**नगर पंचायत पखांजूर**
**जिला उ.ब. कांकेर (छ.ग.)**

## कार्यालय प्रमुख अभियन्ता लोक निर्माण विभाग, नवा रायपुर, अटल नगर

### (केन्द्रीय निविदा प्रकोष्ठ) ई-प्रोक्यूरमेंट निविदा सूचना

**Main Portal: https: // eproc.cgstate.gov.in**

निम्नलिखित कार्य हेतु निविदा आमंत्रित की जाती है :-

| स. क्र. | सिस्टम निविदा क्रमांक/ दिनांक | कार्य का नाम | कार्य की अनुमानित लागत (रूपये लाख में) |
|---|---|---|---|
| 1 | 192524 द्वितीय आमंत्रण 08.06.2026 | जगदलपुर केन्द्रीय जेल में 06 नग बैरक (फैक्ट्री बैरक (जी.एफ./एफ. एफ. एण्ड ll एफ. हाईसेल बैरक) (शेष कार्य) विद्युतीकरण सहित। | 241.19 |
| 2 | 192504 द्वितीय आमंत्रण 08.06.2026 | जिला जशपुर के सन्ना चंपा मार्ग लं. 13.40 कि.मी. डामरीकरण निर्माण कार्य। | 791.49 |
| 3 | 192514 द्वितीय आमंत्रण 08.06.2026 | जिला कांकेर के जातेवाडा से मदले मार्ग लंबाई 4.85 कि.मी. का पुल-पुलिया सहित निर्माण कार्य। | 534.67 |
| 4 | 192522 द्वितीय आमंत्रण 08.06.2026 | जिला जशपुर के वि.ख. फरसाबहार के ग्राम डोगादरहा में शिवमंदिर सेमरडाब डोगादरहा से अम्बाकछार मार्ग लं. 3.00 कि.मी. का निर्माण कार्य। | 479.93 |
| 5 | 192501 द्वितीय आमंत्रण 08.06.2026 | जिला खैरागढ-छुईखदान-गण्डई के खैरागढ- अकरजन मार्ग में मोती नाला पर उच्चस्तरीय पुल एवं पहुंच मार्ग का निर्माण कार्य। | 677.12 |
| 6 | 192495 द्वितीय आमंत्रण 08.06.2026 | जिला कोण्डागांव के कोण्डागांव अमरावती एरला राज्य मार्ग के कि.मी. 32,33,34, 35/2-4, 36,37, 38,39, 40,41/2-4 कुल 8.70 कि.मी. कुल = 8.70 कि.मी. में मजबूतीकरण सहित निर्माण कार्य। | 706.60 |
| 7 | 192489 द्वितीय आमंत्रण 08.06.2026 | जिला जशपुर के वि.ख. पत्थलगांव के इंदिरा चौक से जशपुर रोड लं. 2.00 कि.मी. इंदिरा चौक से अंबिकापुर रोड लं. 1.50 कि.मी. एवं इंदिरा चौक से रायगढ़ रोड लं. 3.80 कि.मी. कुल लंबाई 7.30 कि.मी. का उन्नयन एवं मजबूतीकरण निर्माण कार्य। | 2649.37 |
| 8 | 192780 तृतीय आमंत्रण 08.06.2026 | जिला नारायणपुर के ग्राम छोटेडोंगर में शासकीय महाविद्यालय विद्युतिकरण, वाटर सप्लाई, सेनेटरी फिटिंग, सहित भवन निर्माण कार्य। | 454.32 |
| 9 | 192778 तृतीय आमंत्रण 08.06.2026 | जिला नारायणपुर के गुरिया में 100 सीटर बालक छात्रावास भवन निर्माण कार्य विद्युतिकरण, वाटर सप्लाई एवं सेनेटरी फिटिंग सहित भवन निर्माण कार्य, जमा मद। | 270.41 |
| 10 | 193061 प्रथम आमंत्रण 08.06.2026 | जिला एम.सी.बी. के कटकोना मेनरोड से सुंदरपुर नर्सरी पहुंच मार्ग लं. 3.18 कि.मी. निर्माण कार्य। | 377.31 |
| 11 | 193064 प्रथम आमंत्रण 08.06.2026 | जिला जशपुर के करंजटोली सन्ना मुख्य मार्ग से टिकैतगंज तक पहुंच मार्ग लं. 2.40 कि.मी. पुल-पुलिया सहित निर्माण कार्य। | 228.19 |
| 12 | 193065 प्रथम आमंत्रण 08.06.2026 | जिला जशपुर के बांसधार-दीनामुण्डा से सरबकोम्बो पहुंच मार्ग लं. 2.925 कि.मी. पुल-पुलिया सहित निर्माण कार्य। | 421.31 |
| 13 | 192812 प्रथम आमंत्रण 09.06.2026 | जिला जशपुर के बंदरचुआ से गोरिया सरबकोम्बो पहुंच मार्ग लंबाई 11.425 कि.मी. का निर्माण कार्य। | 669.51 |
| 14 | 192813 प्रथम आमंत्रण 09.06.2026 | जिला जशपुर के कांसाबेल के दारूपिसा से कटंगखार पहुंच मार्ग लं. 2.20 कि.मी. का निर्माण कार्य। | 247.64 |
| 15 | 192814 प्रथम आमंत्रण 09.06.2026 | जिला सरगुजा के ढोढाकेसरा से डांडकेसरा मार्ग लंबाई 7.10 कि.मी. पुल-पुलिया सहित निर्माण कार्य। | 1422.42 |
| 16 | 192815 प्रथम आमंत्रण 09.06.2026 | जिला सूरजपुर के डुमरिया एन.एच. 43 से केवरा तक मार्ग लंबाई 18.00 कि.मी. पुल-पुलिया सहित चौड़ीकरण निर्माण कार्य। | 2508.06 |
| 17 | 192816 प्रथम आमंत्रण 09.06.2026 | 1) जिला जशपुर के ग्राम पंचायत किलकिला मेनरोड से ईला पहुंच मार्ग लंबाई 1.90 कि.मी. निर्माण कार्य, 2) जिला जशपुर के डूडूंगजोर (मांझापारा) से पालीडीह तक मार्ग लंबाई 4.70 कि.मी. निर्माण कार्य। | 616.03 |
| 18 | 192817 प्रथम आमंत्रण 09.06.2026 | जिला सूरजपुर के कल्याणपुर-लटोरी-दतिमा-सलका मार्ग (मुख्य जिला मार्ग) के कि.मी. 1 से 7, 10/2-4, 11 से 12/8, 13/4 से 13/10, 16/2-4, 17/6 से 20/4, 21/2-4-6, 23/8 से 30/4, 36 से 38, 40/10 से 41 एवं 47 से 49 कुल लं. 29.00 कि. मी. सुदृढीकरण निर्माण कार्य। | 4052.81 |
| 19 | 192869 प्रथम आमंत्रण 09.06.2026 | कोरबा रिंग रोड से मेडिकल कॉलेज पहुंच मार्ग लंबाई 970 मीटर का निर्माण कार्य, जमा मद। | 491.77 |

निविदा डाउनलोड करने की अंतिम तिथी सं.क्र. 08 से सं.क्र. 09 दिनांक 22.06.2026, सं.क्र. 01 से सं.क्र. 07 दिनांक 30.06.2026 निर्धारित है। एवं अन्य शेष निविदाओं के लिए दिनांक 01.07.2026 निर्धारित है। निविदा में भाग लेने की प्रक्रिया एवं निविदा के संबंध में विस्तृत जानकारी विभाग के उपरोक्त वेबसाईट में देखे जा सकते है।

**मुख्य अभियंता**
**केन्द्रीय निविदा प्रकोष्ठ**
**कार्यालय प्रमुख अभियंता, लोक निर्माण विभाग, नवा रायपुर अटल नगर**

**जी. 262701461/3**

# शासकीय कर्मचारी की मौत के बाद उसके आश्रित परिवार से वेतन के गलत निर्धारण के आधार पर वसूली गलत

बिलासपुर। हाईकोर्ट ने अपने एक फैसले में कहा है कि शासकीय कर्मचारी की मौत के बाद उसके आश्रित परिवार से वेतन के गलत निर्धारण के आधार पर वसूली गलत है। जस्टिस बीडी गुरु की सिंगल बेंच ने राजस्व विभाग द्वारा दिवंगत तृतीय श्रेणी कर्मचारी की विधवा से 12 लाख 19 हजार 278 रुपए वसूलने के आदेश को कानूनी और प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों के विपरीत मानते हुए निरस्त कर दिया है। कोर्ट ने सरकार को आदेश दिया है, दिवंगत कर्मचारी के सभी रोके गए फंड 40 दिनों के भीतर उनकी विधवा को भुगतान करें।

■ दिवंगत कर्मचारी की विधवा से 12 लाख से अधिक की वसूली का आदेश रद्द

याचिकाकर्ता अंजू मिश्रा, बिलासपुर के अयोध्या नगर की निवासी है। उनके पति स्वर्गीय सुरेश कुमार मिश्रा राजस्व विभाग तखतपुर में तृतीय श्रेणी कर्मचारी थे, जिनका 27 जून 2025 को सेवाकाल के दौरान निधन हो गया था। तखतपुर तहसीलदार ने 10 मार्च 2026 को एक आदेश जारी कर दिया कि वर्ष 2006 से लेकर 2025 तक (लगभग 19 साल) उनके पति को गलत वेतन निर्धारण के कारण 12.19 लाख रुपए का अतिरिक्त भुगतान किया गया है, जिसकी वसूली की जानी है। तहसीलदार के इस आदेश के खिलाफ पीड़िता ने अपने अधिवक्ता पवन श्रीवास्तव के माध्यम से हाई कोर्ट में रिट याचिका दायर की थी।

### शासन ने कहा- रिकवरी का अधिकार है

याचिका में कहा गया कि दिवंगत कर्मचारी तृतीय श्रेणी के पद पर कार्यरत थे। उनके जीवित रहते विभाग ने कभी भी किसी अतिरिक्त भुगतान या गलत वेतन निर्धारण की सूचना उन्हें नहीं दी, और न ही कोई रिकवरी आदेश जारी किया गया। पति की मृत्यु के बाद, बिना किसी 'कारण बताओ नोटिस या सुनवाई का अवसर दिए, सीधे तौर पर विधवा पत्नी पर इतनी बड़ी राशि का वित्तीय बोझ लादना पूरी तरह से मनमाना और अवैध है। राज्य सरकार की ओर से डिप्टी गर्वनमेंट एडवोकेट अनुजा शर्मा ने कहा कि ऑडिट या जांच के दौरान यह पाया गया कि दिवंगत कर्मचारी को गलत वेतन फिक्सेशन के कारण सरकारी खजाने से अधिक राशि का भुगतान हुआ था। शासन को जनता के पैसे की रिकवरी करने का अधिकार है।

## दुष्कर्म के आरोपी की सजा बरकरार

बिलासपुर। हाईकोर्ट ने कहा है कि भारतीय समाज में यदि किसी महिला के साथ दुष्कर्म जैसा घिनौना कृत्य होता है, तो वह अपनी गरिमा और आत्मसम्मान पूरी तरह खो देती है। समाज का सामना करने में होने वाली अत्यधिक मानसिक प्रताड़ना और ग्लानि ही उसे आत्महत्या के लिए उकसाने के लिए काफी है। कोर्ट ने इस टिप्पणी के साथ ही पहले जिला रायपुर अब बलौदाबाजार-भाटापारा जिले के कसडोल थाना क्षेत्र में हुए एक संवेदनशील मामले में आरोपी की 10 वर्ष की सजा को बरकरार रखा है। जस्टिस एनके व्यास के सिंगल बेंच ने मामले से जुड़ी दस्तावेजी फाइल के तहत आरोपी विजय कुमार वर्मा द्वारा दायर आपराधिक अपील को खारिज कर दिया है। यह घटना 22 अगस्त 2004 की है। आरोपी विजय कुमार सूने घर में जबरन घुस गया और दरवाजा अंदर से बंद कर पीड़िता के साथ अनाचार किया। घटना से सहमी और लोक-लाज से आहत पीड़िता ने घर में रखे मिट्टी का तेल अपने ऊपर उड़ेलकर खुद को आग के हवाले कर दिया। जलने के तुरंत बाद पीड़िता ने अपनी भाभी को बताया था कि आरोपी ने उसके साथ गलत काम किया, इसलिए उसने आत्मदाह किया। अस्पताल ले जाते समय रास्ते में ही उसने दम तोड़ दिया। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ ट्रायल कोर्ट में आरोप पत्र पेश किया था। मामले की सुनवाई प्रथम अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश, बलौदाबाजार के कोर्ट में हुई। प्रकरण की सुनवाई के बाद कोर्ट ने दुष्कर्म और आत्महत्या के दुष्प्रेरणा के आरोपी विजय कुमार को तीन अलग-अलग धाराओं में दोषी पाते हुए सजा सुनाई। कोर्ट ने धारा 376(1) के तहत 10 वर्ष का कठोर कारावास और 3000 रुपये अर्थदंड, धारा 306 (आत्महत्या के लिए उकसाना) के तहत 7 वर्ष का कठोर कारावास और 2000 रुपए अर्थदंड तथा धारा 450 (अपराध करने के इरादे से गृह-अतिचार) के तहत 7 वर्ष का कठोर कारावास और 2000 रुपए अर्थदंड की सजा सुनाई थी। हाईकोर्ट ने सजा को बरकरार रखा है।

## कोरबा निगम के 60 दैनिक वेतनभोगी होंगे नियमित

बिलासपुर। हाईकोर्ट ने कोरबा नगर निगम में बीते दो दशकों से अधिक समय से कार्यरत 60 दैनिक वेतनभोगी कर्मचारियों के पक्ष में फैसला सुनाया है। अदालत ने राज्य सरकार द्वारा इन कर्मचारियों के नियमितीकरण के दावे को खारिज करने वाले 12 मई 2020 के आदेश को रद्द कर दिया है। जस्टिस राकेश मोहन पांडेय के सिंगल बेंच ने मामले की सुनवाई करते हुए कहा है कि शासन केवल 'ब्रेक इन सर्विस' या 'वित्तीय बाधाओं' का हवाला देकर उन कर्मचारियों को उनके अधिकारों से वंचित नहीं कर सकता, जो वर्षों से निरंतर अपनी सेवाएं दे रहे हैं। कोर्ट ने राज्य सरकार को 180 दिनों के भीतर इन कर्मचारियों के नियमितीकरण पर पुनर्विचार करने का निर्देश दिया है।

याचिका के मुताबिक याचिकाकर्ता मनीष मिश्रा सहित 60 अन्य दैनिक वेतनभोगी कर्मचारियों ने हाई कोर्ट में रिट याचिका दायर की थी। याचिकाकर्ताओं का कहना था, वे 1997-2000 के बीच कोरबा नगर निगम में नियुक्त हुए थे और तब से लगातार 23-24 वर्षों से काम कर रहे हैं। याचिकाकर्ताओं ने बताया, राज्य शासन ने वर्ष 2008 में एक सर्कुलर जारी किया था, जिसमें 10 साल की सेवा पूरी करने वाले दैनिक वेतनभोगियों के नियमितीकरण का प्रावधान था। हालांकि, सरकार ने इन 60 कर्मचारियों का दावा यह कहकर खारिज कर दिया था कि उनकी नियुक्ति 31 दिसंबर 1997 के बाद हुई है और उनके सेवा काल में एक कैलेंडर वर्ष में एक महीने से अधिक का ब्रेक रहा है।

## क्लब में कालेज छात्रों के साथ मारपीट

रायपुर। तेलीबांधा थाना में एक निजी कालेज में पढ़ाई कर रहे छात्र ने तीन युवक तथा उनके साथियों के खिलाफ मारपीट करने की रिपोर्ट दर्ज कराई है। छात्रों के साथ मारपीट की घटना शनिवार देर रात वीआईपी रोड स्थित एफ लाऊंज क्लब में हुई। कालेज छात्र अपने एक साथी के जन्मदिन की पार्टी मनाने क्लब पहुंचा था। इस दौरान बदमाशों ने छात्रों के साथ मारपीट की। शंकराचार्य कालेज में बी. कॉम फर्स्ट इयर में पढ़ाई कर रहे मूलतः बलौदाबाजार के छात्र शशंक बंजारे ने बैजनाथपारा निवासी आयन, अबुजर, मजी उल्लाह ऊर्फ मज्जू एवं उनके अन्य साथियों के खिलाफ मारपीट करने की शिकायत दर्ज कराई है। शशांक ने पुलिस को बताया है कि घटना दिनांक को वो हर्ष पटेल, इयाना धृतलहरे, हर्ष सिन्हा के साथ अपने दोस्त ईशान पेशवानी की बर्थडे पार्टी मनाने क्लब गए थे। इस दौरान इयाना के साथ आयन तथा उसके साथी धक्का मुक्की करने लगे।

## संचालनालय आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

पुरखौती मुक्तांगन के समीप, सेक्टर-24, नवा रायपुर अटल नगर (छ.ग.)
E-mail: trti.cg@nic.in, Website: www.cgtrti.gov.in,
Phone: 0771-2960530, Fax: 0771-2960531

क्र./टी.आर.आई/पुस्त./पत्रिका/47/2026-27 नवा रायपुर, दिनांक.......

**अर्द्धवार्षिक बुलेटिन (पत्रिका) "आदि गोठ" में आलेख-शोधपत्र आमंत्रण सूचना**

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि संचालक आदिम जाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नवा रायपुर, अटल नगर द्वारा अर्द्धवार्षिक पत्रिका "आदि गोठ" के चतुर्थ अंक में प्रकाशन हेतु जनजातीय जीवन शैली, उनके परम्परा, रीति रिवाज आदि पर आधारित शोधपत्र, आलेख एवं रचनाएं- कविता, कहानी, लोकोक्तियां, गीत आदि हिन्दी, अंग्रेजी एवं उनके स्थानीय बोली में हिन्दी अनुवाद के साथ आमंत्रित है।

कृपया अपना मौलिक शोध, आलेख, रचनाएं आदि HD quality photo के साथ MS Word, kruti Dev 010/ Size-16, एवं Times New Roman Size-12 में टंकण किया हुआ Soft Copy संस्थान के ई-मेल trti.cgbulletin@gmail.com में भेज सकते है। अथवा "बुलेटिन प्रकोष्ठ" आदिम जाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, सेक्टर-24, नवा रायपुर, अटल नगर छत्तीसगढ़ पिन-493661 के पते पर हार्ड कॉपी में विज्ञप्ति जारी होने के 15 दिवस की समयावधि में प्रेषित कर सकते है।

**संयुक्त संचालक**
**आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नवा रायपुर अटल नगर (छ.ग.)**

**जी-262701494/2**

## Public Works Department Office of The Superintanding Engineer, Pwd, Raipur Circle No.-1 Raipur. (C.G.)

**REQUEST FOR PROPOSAL (RFP)**
**(1st Call)**

No. 09/Raipur/2026-27 Raipur, Dated. 12.06.2026

Public Works Department (PWD) invites proposal for Planning, Design, Estimation and related services for the work

शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय रायपुर में तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों हेतु शासकीय आवासीय भवन का निर्माण कार्य के लिये वास्तुविद नियुक्ति करने बाबत ।

Situated at Raipur

Probable cost of project Rs. 2400.00 Lakh.

Minimum eligibility for participants shall be as below :-

| S.N. | Building project cost | The applicant firms, firms forming Joint venture/consortium shall be | Earnest money (In shape as per annexure 1) Favor of Executive Engineer, PWD Division No.-02 Raipur |
|---|---|---|---|
| 1 | For project cost Between 10 to 25 Crore | Empanelled as architect in Class "C" & Above Class in C.G. PWD. | Rs. 5,000-00 |

**General condition:** All the documents & Information as per para 6.4, shall be submitted through speed post/Registered post. so as to reach the office of under signed on or before dated **02.07.2026** by 17.30 hour. Any documents received after the last date and time will not be entertained.

on The detailed RFP is available the website www.cg.nic.in/pwdraipur & **http://cgstate.gov.in/** from where it can be downloaded for submission. CG.PWD reserves the right to reject all or any of the application without assigning any reason. Right to modify the process of Pre-qualification is reserved with CG PWD.

**Superintending Engineer**
**Public Works Department**
**Raipur Circle No1 Raipur**

**G.262701475/1**

## जिला अस्पताल में हुआ रक्तवीरों का सम्मान

**रायपुर।** विश्व रक्तदाता दिवस के अवसर पर जिला चिकित्सालय पंडरी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस वर्ष की थीम के अनुरूप लोगों को स्वैच्छिक रक्तदान के प्रति जागरूक करने और नियमित रक्तदाताओं के प्रति आभार व्यक्त करने के उद्देश्य से अस्पताल प्रबंधन द्वारा एक विशेष संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह का आयोजन सिविल सर्जन डॉ.बी.के.सिन्हा के नेतृत्व में हुआ।

## कार्यालय, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, जिला-बलौदाबाजार-भाटापारा (छ.ग.)

E-mail ID: cmhobb2012@gmail.com
Tel.phone No. -07727-223550

क्रमांक / एन.एच.एम. / एच.आर./ NS-3301/2026-27/3828
बलौदाबाजार, दिनांक 15/06/2026

**//सूचना//**

कार्यालयीन पत्र क्रमांक / एन.एच.एम./ एच.आर./ NS-3301/2025-26/1344 बलौदाबाजार, दिनांक 13/02/2025 के तहत राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन जिला बलौदाबाजार अंतर्गत विभिन्न रिक्त पदों पर संविदा भर्ती किये जाने हेतु विज्ञापन जारी किया गया था। प्रथम चरण में विज्ञापित पदों के सरल क्रमांक 09 से 27 तक कुल 30 पदों पर पदवार प्राप्त आवेदनों के स्क्रूटनी उपरांत दावा-आपत्ति हेतु पात्र/अपात्र अभ्यर्थियों की प्रारंभिक सूची तैयार कर जिला के विभागीय वेबसाईट में अपलोड कर दी गई है। उक्त पात्र-अपात्र सूची के संबंध में अभ्यर्थी अपना दावा-आपत्ति निर्धारित प्रारूप में दिनांक 15/06/2026 से दिनांक 30/06/2026 तक कार्यालयीन समय 10:00 AM बजे से 5:30 PM बजे तक स्वयं कार्यालय मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, बलौदाबाजार में उपस्थित होकर प्रस्तुत कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य किसी भी माध्यम (ईमेल अथवा डाक इत्यादि) से प्राप्त आवेदन स्वीकर नहीं किया जावेगा।

दावा-आपत्ति हेतु पात्र-अपात्र की सूची एवं निर्धारित प्रारूप की जानकारी हेतु जिला बलौदाबाजार-भाटापारा (छ.ग.) के वेबसाईट www.balodabazar.gov.in अथवा कार्यालयीन सूचना पटल का अवलोकन कर सकते हैं।

**मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी**
**जिला-बलौदाबाजार-भाटापारा (छ.ग.)**

**जी. 262701479/2**

## कार्यालय अधीक्षण अभियंता, लोक निर्माण विभाग, रायपुर मण्डल क्रमांक 2 (छत्तीसगढ़)

**ई-प्रोक्युरमेंट निविदा सूचना**
**(प्रथम आमंत्रण)** दिनांक 12.06.2028

निम्नांकित कार्यों हेतु ऑनलाईन निविदा "डी" एवं अधिक श्रेणी के ठेकेदारों के लिये आमंत्रित की जाती है। निविदा डाउनलोड करने की अंतिम तिथी दिनांक 02.07.2026 तक है।

| एन.आई.टी क्र /निविदा क्रं. | कार्य का नाम | कार्य की अनुमानित लागत (लाख में) |
|---|---|---|
| NIT NO, 100 Tender No. 193302 | जिला गरियाबंद के उपसंभाग क्र. 02 गरियाबंद (देवभोग) अंतर्गत विभिन्न आवासीय एवं गैर आवासीय भवनों का विशेष मरम्मत कार्य। | रु 29.64 लाख |
| NIT NO. 101 Tender No. 193303 | बलौदाबाजार अनुविभाग अंतर्गत बम्हनी से भवानीपुर मार्ग लंबाई 1.50 कि.मी. पुल-पुलियां सहित निर्माण कार्य। | रु 199.94 लाख |
| NIT NO. 102 Tender No. 193304 | भाटापारा अनुविभाग अंतर्गत शासकीय गजानंद पी.जी. महाविद्यालय भाटापारा बालिका छात्रावास में बाउंड्रीवॉल का निर्माण कार्य। | रू 13.13 लाख |
| NIT NO. 103 Tender No. 193305 | जिला धमतरी के उपसंभाग कुरुद अंतर्गत संत गुरुघासीदास शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कुरुद में अतिरिक्त कक्ष का निर्माण कार्य। | रु 88.49 लाख |
| NIT NO. 104 Tender No. 193306 | जिला गरियाबंद के उपसंभाग राजिम अंतर्गत विभिन्न पुल-पुलियों का विशेष मरम्मत कार्य। | रु 80.00 लाख |

उपरोक्त निर्माण कार्यों की निविदा की सामान्य शर्ते, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी ई-प्रोक्योरमेंट वेब पोर्टल https://eproc.cgstate.gov.in अथवा विभागीय वेबसाइट https://eproc.cgstate.gov.in से डाउनलोड की जा सकती है। (राशि रू. 100.00 के नान ज्यूडिशियल स्टाम्प पर निर्धारित प्रपत्र में शपथ-पत्र एवं न्यूनतम राशि रू. 10.00 के नान ज्यूडिशियल स्टाम पर एनेक्जर-3 का शपथ पत्र बिड केपेसीटी उपलब्धता बाबत जानकारी एवं अन्य जानकारी एनआईटी के 2.10 में संलग्न संशोधित प्रपत्रानुसार प्रस्तुत करें।)

निविदा में होने वाले समस्त संशोधन का प्रकाशन केवल उपरोक्त वेबसाइट पर किया जावेगा, पृथक से समाचार पत्रों में प्रकाशन नहीं किया जावेगा, एवं निविदाकारो द्वारा प्रेषित मूल अभिलेख का लिफाफा में निविदाकारो का मोबाईल न. एवं इमेल आई.डी. का उल्लेख अनिवार्य रुप से करें।

Credible Chhattisgarh
विश्वसनीय छत्तीसगढ़

**अधीक्षण अभियंता,**
**लो.नि.वि., रायपुर मण्डल क्र. 2 (छ.ग.)**

**जी-262701447/4** *आपकी थी चाह, हमने बनाई राह*

## साऊथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड

"मिनी रत्न कम्पनी"
(कोल इण्डिया लिमिटेड का उपक्रम)

एसईसीएल/मप्र/गेवरा क्षेत्र/भू-राजस्व/2026/3018 दिनांक 15.05.2026

**आम सूचना**

इस प्रकाशन के माध्यम से यह सूचित किया जाता है कि एसईसीएल गेवरा क्षेत्रांतर्गत गेवरा परियोजना के लिये अर्जित ग्राम नरईबोध के भू-विस्थापित एवं उनके द्वारा नामित आश्रित/उम्मीदवार को एसईसीएल में रोजगार प्रदान करने हेतु एसईसीएल मुख्यालय बिलासपुर से स्वीकृति प्राप्त किये जाने बाबत् औपचारिकताएँ यथाशीघ्र प्रारंभ किया जाएगा। जिससे संबंधित व्यौवरा निम्नानुसार है।

| क्र | ग्राम का नाम | राज्य शासन द्वारा प्रदत्त प्रमाणित पत्रक V/VI में खातेदार का नाम | नामांकन के अनुसार खातेदार का नाम | खसरा नं. (सीबीए के तहत) पत्रक अनुसार | रकबा भुगतान व्हाउचर अनुसार | रोजगार हेतु नामांकित व्यक्ति का नाम | खातेदार से संबंध |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | नरईबोध | झूलबाई पिता मनोहर भू-अधिकारी पुस्तीका तथा खसरा पी-2 वर्ष 2008- 09 से 12-13 एवं बी-1 वर्ष 2008-09 में नाम- झूलबाई पिता मनोहर एवं वर्तमान वर्ष 2022-23, 2024-25 में नाम एसईसीएल गेवरा परियोजना | झूलबाई पिता मनोहर लाल | 54/5, 353/4 | 0.311 हे./ 0.77 एकड़ | कृष्ण कुमार पिता चौथराम आधार कार्ड में नाम- कृष्ण कुमार यादव पिता चौथराम यादव जाति प्रमाण पत्र में नाम एवं निवास प्रमाण पत्र में नाम- कृष्ण कुमार पिता चौथराम स्कूल प्रमाण पत्र में नाम- कृष्ण कुमार पिता चौथराम रोजगार पंजीयन में नाम- कृष्ण कुमार यादव पिता चौथराम यादव | पुत्र |

(1) अतः रोजगार के लिये उक्त प्रस्तावित/नामांकित व्यक्ति के संबंध में किसी भी संबंधित व्यक्ति को इस पर आपत्ति हो तो अपना पूरा नाम, हस्ताक्षर, पता एवं मूल दस्तावेजी प्रमाणों के साथ इसकी लिखित शिकायत अधोहस्ताक्षरी के कार्यालयमें इस सूचना के प्रकाशन के 07 दिवस के भीतर उपस्थित होकर स्वयं प्रस्तुत करें। अन्यथा समयावधि के पश्चात् प्रस्तुत दावा-आपत्ति मान्य नहीं होगा। (2) उपरोक्त प्रस्तुत रोजगार के प्रस्ताव में खातेदार एवं आश्रित उम्मीदवार के नाम/उपनाम भिन्न-भिन्न दस्तावेजों में भिन्न-भिन्न दर्ज हैं, जो एक ही व्यक्ति का होना दर्शाया गया है, इस संबंध में किसी को कोई आपत्ति हो तो प्रकाशन के 07 दिवस के अंदर अपनी आपत्ति प्रस्तुत करें।

SECL/26-27/54

**महाप्रबंधक**
**एसईसीएल, गेवरा क्षेत्र**

## साऊथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड

"मिनी रत्न कम्पनी"
(कोल इण्डिया लिमिटेड का उपक्रम)

**आवश्यक-सूचना**

एसईसीएल कोरबा क्षेत्र के प्रस्तावित सराईपाली ओपन कॉस्ट परियोजना के ग्राम - बुड़बुड़ के प्रभावित भू-विस्थापितों को एसईसीएल में नौकरी प्रदान करने की प्रक्रिय आरंभ है, जिसमें से निम्नलिखित 01 भू-विस्थापितों/नामांकित व्यक्तियों के नाम में अंतर पाया गया है| इसका विवरण इस प्रकार है :-

| क्रं | घटते क्रम की सूची क्रमॉक | खातेदार का नाम/ पिता का नाम | अर्जित खसरा नं0 | अर्जित रकब (ए0) | नामांकित व्यक्ति का नाम/ पिता का नाम नामांकन फार्म में | संबंध | सीबीए स्टेटमेंट v | बी-1(वर्ष 2008 -09 से 2012-13) | पी-2(वर्ष 2008 -09 से 2012-13) | नामांकन फार्म में खातेदार का नाम | सहमति/ शपथ पत्र | वंशवृक्ष | आधार कार्ड | निवास प्रमाण पत्र | जाति प्रमाण पत्र | शैक्षणीक योग्यता प्रमाण पत्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 |
| 1 | 211 | लीलाराम/ प्रेमलाल | 277/4, 455/3, 477/4, 557/4, (208/5 208/7) | 0.65 | शिव कुमारी/ लीलाराम | पुत्री | लीलाराम /प्रेमलाल | लीलाराम पिता प्रेमलाल | लीलाराम पि. प्रेमलाल | शिव कुमारी /लीला राम | लीलाराम पिता श्री प्रेमलाल | लीलाराम, संतराम, पंचराम पिता प्रेम लाल, मोती बाई, शिव कुमारी पिता लीलाराम | लीलाराम आत्मज प्रेम लाल, शिवकुमारी आत्मजा लीलाराम | शिव कुमारी पिता लीला राम | शिव कुमारी पिता लीला राम | शिव कुमारी पिता श्री लीला राम |

उपरोक्त वर्णित नामों के अंतर एवं भू-स्वामियों द्वारा रोज़गार हेतु नामित उम्मीद्वार के संदर्भ में यदि किसी को आपत्ति है तो वे अपनी आपत्ति प्रकाशन तिथि के सात (07) दिवसों के अंदर इस कार्यालय को सूचित करें | समय -सीमा समाप्त होने पर किसी प्रकार की आपत्तियों को स्वीकार नहीं किया जायेगा |

SECL/26-27/53

**महाप्रबंधक,एसईसीएल कोरबा क्षेत्र**

## प्रथम पृष्ठ का शेष

### राम मंदिर से...

कर्मचारियों से पूछताछ हो सकती है। चढ़ावा राशि की गिनती में करीब 44 कर्मचारी लगे हैं। इनमें से 40 बैंक व उसकी एजेंसी के हैं, जबकि 4-5 लोग मंदिर ट्रस्ट की तरफ से नजर रखने के लिए तैनात हैं। टीम दो शिफ्टों में 8 सीसीटीवी कैमरों और 2 सुरक्षा गार्ड की निगरानी में मशीनों से गिनती होती है। मंदिर ट्रस्ट के कार्यालय प्रभारी प्रकाश गुप्त ने बताया कि 10-10 गड्डियों के बंडल बना कर बॉक्स में रखकर सील करके बैंक भेजा जाता है। ऐसे सभी कर्मचारियों से भी पूछताछ होगी। बाबरी केस के मुद्दई रहे इकबाल अंसारी ने भी निष्पक्ष जांच और दोषियों पर सख्त कार्रवाई की मांग उठाई है।

### डीएमएफ घोटाले में...

गई है। बताया जा रहा है कि राजधानी रायपुर के वल्लभ नगर में रहने वाले कारोबारी शाश्वत लुणावत के ठिकाने पर सुबह के समय टीम ने धावा बोला और यहां पहुंचते ही जांच-पड़ताल शुरू कर दी। इस दौरान टीम में शामिल अधिकारियों द्वारा कारोबारी के लेनदेन से लेकर दस्तावेजों की जांच की जा रही है।

**पूर्व में कई स्थानों पर छापा मार चुकी है ईडी-**
ईडी इससे पहले भी कई जिलों में छापेमारी कर चुकी है। ईडी ने पूर्व में जांच के दौरान 23.79 करोड़ रुपए की चल-अचल संपत्ति कुर्क भी की है। कुर्क की गई ये संपत्ति इस घोटाले में शामिल रही आरोपी निलंबित आईएएस रानू साहू, माया वारियर, मनोज कुमार द्विवेदी समेत 10 लोगों की है।

### ठेकेदार दीपेश गांधी...

डीएमएफ घोटाला की जांच में ईडी को दीपेश गांधी के खिलाफ भी कई महत्वपूर्ण तथ्य मिले हैं, जिसके आधार पर टीम ने उसके ठिकाने पर भी दबिश दी है।

### नीट-यूजी की...

पुनःपरीक्षा का दिन तथा उसके तुरंत बाद की अवधि शामिल होगी। एनटीए ने एक बयान में कहा कि एक अलग निर्देश के तहत टेलीग्राम को भारत में पहले से पोस्ट किए जा चुके संदेशों में संपादन की सुविधा 30 जून 2026 तक एक निर्धारित अवधि के लिए बंद करनी होगी। एजेंसी के अनुसार, यह कदम मंच की उस विशेष तकनीकी सुविधा को ध्यान में रखकर उठाया गया है, जिसका इस्तेमाल राष्ट्रीय स्तर की परीक्षाओं के संबंध में बाद में कथित 'प्रश्नपत्र लीक' के फर्जी साक्ष्य तैयार करने के लिए किया जाता रहा है। इसने कहा, दोनों कदम सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने के हित में उठाए गए हैं।

### हाय गर्मी...बेहोश...

आईं। एक छात्र को तो अस्पताल में भर्ती भी करवाना पड़ा। कई स्कूलों ने छात्रों की स्थिति गंभीर नहीं होने पर प्राथमिक उपचार के बाद परिजनों को बुलाकर घर भेजा। गौरतलब है कि प्रदेश में अब तक मानसून ने दस्तक नहीं दी है। प्री-मानसून गतिविधियां भी अब तक रफ्तार नहीं पड़ सकी हैं। इसका प्रभाव तापमान पर भी दिख रहा है। जून का पहला पखवाड़ा बीत जाने के बाद भी तापमान 40 डिग्री के पार है। राजधानी रायपुर के शासकीय स्कूलों में उपस्थिति अधिक नहीं रही। निजी स्कूलों ने नर्सरी से दूसरी कक्षा तक के छात्रों को अघोषित छुट्टी प्रदान कर दी थी। यहां कक्षा का संचालन तीसरी कक्षा से हुआ। निजी स्कूलों द्वारा परिवहन साधन के रूप में बस का प्रयोग किया जाता है। अधिकतर बसों में एसी नहीं होने के कारण छात्रों को आवागमन के दौरान भी दिक्कत हुई।

**लंबी प्रार्थना का पहले ही विरोध** - नवीन शैक्षणिक सत्र से प्रार्थना संबंधित नए नियम लागू किए गए हैं। इसमें सुबह प्रार्थना के दौरान राष्ट्रगीत, राष्ट्रगान के साथ ही सरस्वती स्तुति, दीप मंत्र व गुरु मंत्र को अनिवार्य किया गया है। इसके बाद महापुरूष की जीवनी का भी वाचन होगा। मध्यान्ह भोजन के पूर्व प्रार्थना तथा शाला समाप्ति के पूर्व राजगीत, गायत्री मंत्र व शांति मंत्र का पाठ होगा। लंबी प्रार्थना का शिक्षक पहले से ही विरोध कर रहे हैं।

### शिक्षक नहीं आए तो ...

स्थिति निर्मित हो गई। शिक्षा सत्र के पहले दिन स्कूल में छात्रों ने ताला लगा दिया। परिजनों के साथ बच्चे भी पंडाल लगाकर स्कूल के सामने बैठ गए। दरअसल, छात्र शिक्षक की मांग कर रहे थे। मौके पर तहसीलदार और पुलिस के अधिकारी पहुंचे। संगवारी शिक्षक दिए जाने पर सहमति बनी। इसके बाद ही परिजनों और बच्चों ने प्रदर्शन समाप्त किया। प्राप्त जानकारी के अनुसार, यहां 99 छात्र अध्ययनरत हैं, लेकिन शिक्षक केवल एक है।

### अस्पताल पहुंचे डीईओ...

और निजी स्कूलों में गर्मी की वजह से 40 प्रतिशत ही बच्चों की उपस्थिति रही। दो शिफ्ट वाले स्कूलों में सुबह 7.30 बजे से दोपहर 11.30 बजे तक स्कूल लगते हैं, लेकिन एक घंटे पहले ही शहरी क्षेत्र के स्कूलों में छुट्टी देनी पड़ी।

### अमेरिका-ईरान डील...

खंडन किया जिनमें कहा गया था कि उनका प्रशासन युद्ध खत्म करने के समझौते के तहत ईरान के लिए 28 लाख करोड़ रुपए के फंड पर विचार कर रहा है। हालांकि, उन्होंने ट्रुथ सोशल पर पोस्ट में इस संभावित कीमत के लिए 28 लाख करोड़ रुपए का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि अमेरिका के ईरान को 28 लाख करोड़ रुपए देने की खबर फेक न्यूज है, जिसे डेमोक्रेट्स ने फैलाया है। **ईरान के विदेश मंत्री अरागची ने इजरायल पर जताई नाराजगी**-ईरान के शीर्ष राजनयिक ने कहा कि अमेरिका के साथ युद्ध खत्म करने वाले समझौते के तहत इजरायल को लेबनान से भी हटना होगा। विदेश मंत्री अब्बास अरागची ने दूसरे देशों के राजनयिकों से कहा कि दक्षिणी लेबनान पर इजरायल का कब्जा जारी रहना अमेरिका और ईरान के बीच हुए समझौते का उल्लंघन होगा। अरागची ने कहा, लेबनान में युद्ध का खत्म होना, पूरे युद्ध के खत्म होने का एक अहम हिस्सा है। जब तक इजरायली सेना उन इलाकों से पीछे नहीं हटती जिन पर उसने इस युद्ध के दौरान कब्जा किया था तब तक युद्ध पूरी तरह खत्म नहीं माना जाएगा। **लेबनान में इजरायल ने नए हमले किए**- इजरायल ने दक्षिणी लेबनान में अपने हमले तेज कर दिए हैं। लेबनान की सरकारी न्यूज एजेंसी के मुताबिक, इजरायली ड्रोन ने नबातियेह जिले के मायफादौन टाउन स्क्वायर को निशाना बनाते हुए लगातार तीन हमले किए। रिपोर्ट के अनुसार, इजरायली सेना ने हद्दाथा इलाके में एक साउंड बम भी गिराया, जिससे चार लोग मामूली रूप से घायल हो गए। इससे पहले भी नबातियेह के कई इलाकों में हवाई हमलों की खबरें आई थीं। इजराइल की वायुसेना पिछले कई हफ्तों से इस क्षेत्र में लगातार बमबारी कर रही है।

डॉ. नरेन्द्र अग्रवाल
Skin Care
चर्म एवं गुप्त रोग विशेषज्ञ
सुविधाएं
• लेजर हेयर रिमूवल • केमिकल पीलिंग
• हाइड्रोफेशियल • रेडियोफ्रिक्वेंसी
• कार्बन फेशियल • एलर्जी टेस्ट
रविवार अवकाश
क्लीनिक : छत्तीसगढ़ कॉलेज के सामने, सिविल लाईन, बैरनबाजार, रायपुर (छ.ग.) समय : सुबह 10:00 से 2:00 बजे तक
सिटी कोतवाली के पास, छोटापारा रोड, रायपुर (छ.ग.) शाम 5:00 से 8:30 बजे तक, फोन : 0771-2546760, 9300323131

अष्टविनायक हॉस्पिटल
बच्चों एवं महिलाओं का अस्पताल
» प्रसूति » नवजात » शिशु रोग
» बांझपन » सोनोग्राफी » आयुष्मान कार्ड
» बच्चों एवं बड़ों के आपरेशन » अनुभवी डॉक्टर्स प्रतिदिन
आमा सिवनी, विधानसभा रोड, रायपुर (छ.ग.), 9826182221 9301744425

डायबिटिज मधुमेह का सर्वोत्तम इलाज - अब दिल्ली, मुंबई, चेन्नई क्यू जाना
मधुमीत डायबिटिज हॉस्पिटल
डॉ राका शिवहरे MBBS, MD FNIC FIPA
भर्ती सुविधा उपलब्ध
Ecg, Echo, Tmt, Doppler, Carotid, Doppler, Insulin, Pump, Cgms, Homa IR
शिव मंदिर चौक, अवंति विहार, रायपुर, फोन : 0771- 4060929, मो. 7389485756

## अल्ट्रा-लक्जरी प्रोजेक्ट 'रहेजा अवाना' की भव्य लॉन्चिंग 20 को

हरिभूमि न्यूज ⏭ रायपुर

शहर में अल्ट्रा-लक्जरी रियल एस्टेट सेगमेंट को नई पहचान देने की दिशा में रहेजा ग्रुप 20 जून को अपने विशेष प्रोजेक्ट 'रहेजा अवाना' का लॉन्च करने जा रहा है। यह प्रोजेक्ट समूह के नए प्रीमियम ब्रांड 'रहेजा लक्स' के तहत पेश किया जा रहा है, जिसके अंतर्गत इस साल तीन विशिष्ट लक्जरी प्रोजेक्ट्स लॉन्च किए जाएंगे।

कचना मेन रोड पर कचना झील के सामने विकसित हो रहा 'रहेजा अवाना' 23 एकड़ क्षेत्र में फैला एक लिमिटेड एडिशन अल्ट्रा-लक्जरी प्रोजेक्ट है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि पूरे प्रोजेक्ट में केवल 74 यूनिट्स ही विकसित की जा रही हैं, जो रायपुर में बड़े भू-भाग पर सीमित आवासीय इकाइयों वाले चुनिंदा प्रोजेक्ट्स में शामिल होगा। यहां 4,000 वर्गफुट से लेकर 12,000 वर्गफुट तक के प्लॉट्स उपलब्ध हैं, वहीं लक्जरी विला का विकल्प भी ग्राहकों को मिलेगा। सिंगापुर के प्रसिद्ध आर्किटेक्ट एंडी फिशर द्वारा डिजाइन किए गए इस प्रोजेक्ट में आधुनिक वास्तुकला और अंतरराष्ट्रीय स्तर की सुविधाओं का समावेश किया गया है। प्रोजेक्ट की एक अनूठी विशेषता यह है कि इसमें स्पोर्ट्स क्लब और सोशल क्लब को अलग-अलग बिल्डिंग में विकसित किया जा रहा है।

स्पोर्ट्स क्लब में विभिन्न खेल गतिविधियों की सुविधाएं होंगी, जबकि सोशल क्लब निवासियों को आराम, मेलजोल और प्रीमियम लाइफस्टाइल का अनुभव प्रदान करेगा। प्रोजेक्ट में टेम्परेचर कंट्रोल्ड स्विमिंग पूल, अत्याधुनिक फिटनेस स्टूडियो, बैडमिंटन कोर्ट, लैंडस्केप्ड गार्डन्स, प्राइवेट कोर्टयार्ड और भव्य क्लब हाउस जैसी सुविधाएं भी उपलब्ध होंगी। कचना की प्रीमियम लोकेशन पर स्थित यह परियोजना शहर के प्रमुख स्कूलों, अस्पतालों, मॉल और एयरपोर्ट से बेहतर कनेक्टिविटी प्रदान करती है। रहेजा ग्रुप के निदेशक संजय रहेजा ने बताया कि 'रहेजा लक्स' उन ग्राहकों के लिए तैयार किया गया है जो अल्ट्रा-लक्जरी, प्राइवेसी और विश्वस्तरीय जीवनशैली की तलाश में हैं। उन्होंने कहा कि 'रहेजा अवाना' के बाद नवा रायपुर में 'रहेजा वाटरफ्रंट विला' तथा तेलीबांधा में 'रहेजा प्रिवे' भी लॉन्च किए जाएंगे।

### कार्यालय, नगर पालिक निगम, कोरबा (छत्तीसगढ़)

**ई-प्रोक्यूरमेंट निविदा सूचना**

क्र. 342/2026 दिनांक 11.06.2026

नगर पालिक निगम, कोरबा द्वारा एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नलिखित निर्माण कार्य हेतु (Online) आनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है:-

| क्र. | कार्य का विवरण | अनुमानित लागत (रू. लाख में) | निविदा डालने की अंतिम तिथि |
|---|---|---|---|
| 1 | नगर निगम द्वारा निर्मित महाराणा प्रताप सभा भवन राम जानकी परिसर सामुदायिक भवन के उपरी तल का निर्माण एवं अन्य विस्तार कार्य। (अद्योसरचना मद) (प्रथम निविदा) | 20.00 | 03.07.2026 (T.No. 193146) |

उपरोक्त कार्यों की निविदा की जानकारी ई-प्रोक्योरमेंट वेब पोर्टल http://eproc.cgstate.gov.in से डाउनलोड की जा सकती है, साथ ही निगम के वेब साईट www.korbamunicipal.in पर भी देखी जा सकती है।

।। स्वच्छ भारत निर्माण में योगदान दें।।

जोन कमिश्नर
नगर पालिक निगम कोरबा (छत्तीसगढ़)

### कार्यालय कलेक्टर जिला दक्षिण बस्तर दन्तेवाड़ा (छ.ग.) (खेल एवं युवा कल्याण विभाग)

क्रमांक / 243 / खेल / युवा कल्याण/2026-27
दन्तेवाड़ा, दिनांक 15/06/2026

**तिथि परिर्वतन शुद्धि पत्र**

कार्यालयीन पत्र क्रमांक-188/ खेल युवा / स्थापना/2026-27 दन्तेवाड़ा दिनांक 29. 05.2026 के द्वारा एकलव्य खेल परिसर जावंगा, विकास खण्ड गीदम हेतु विभाग अन्तर्गत विभिन्न पदो की पूर्ति हेतु वॉक-इन-इन्टरव्यू दिनांक 18.06.2026 को समय 11:00 बजे स्थान- कार्यालय जिला पंचायत के प्रथम तल के सभा कक्ष आयोजित किया गया था। अपरिहार्य कारणो से उक्त तिथि का वॉक-इन-इन्टरव्यू दिनांक 24.06.2026 दिन बुधवार को समय 11:00 बजे स्थान-कार्यालय जिला पंचायत के प्रथम तल के सभा कक्ष में नियत किया जावेगा।

कलेक्टर
जिला दक्षिण बस्तर दन्तेवाड़ा

जी. 262701464/2

### छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी विपणन संघ मर्यादित

छठवीं मंजिल, टावर 'सी' कमर्शियल कॉम्पलेक्स, सी.बी.डी. सेक्टर-21, अटल नगर, जिला रायपुर (छ.ग.) website- www.markfed.cg.nic.in
Email ID:- mf_Ctrlroom_raipur@gov.in

क्रमांक/स्था. वि./1289/2026 न.रा.अ.न, दिनांक : 16.06.2026

**वर्ष 2026-27 हेतु मानव संसाधन सेवा के नियोजन हेतु जेम पोर्टल के माध्यम से ई-निविदा सूचना**

बाह्य एंजेसी के माध्यम से मानव संसाधन सेवा नियोजित करने हेतु निविदा जेम पोर्टल नं. GEM/2026/B/76/2976 के माध्यम से दिनांक 16.06.26 से 07.07.26 तक ऑनलाईन आंमत्रित की जाती है।

जेम पोर्टल के माध्यम से जारी ई-निविदा सूचना जेम पोर्टल के वेबसाईट https://gem.gov.in में जाकर संबंधित इच्छुक निविदाकर्ता ऑनलाईन रजिस्ट्रेशन कर निविदाकर्ता ऑनलाईन रजिस्ट्रेशन कर निविदा प्रपत्र में दर्शाए गये अनुसार ऑनलाईन निविदा भर सकते है। निविदा प्रारुप, शर्तों एवं निबंधन विपणन संघ के वेबसाईट https://gem.gov.in पर निविदाकर्ता के अध्ययन हेतु गाईडलाइन के रुप में उपलब्ध हैं। निविदा के कार्यवाही के संबंध में अन्य किसी प्रकार की तकनीकी जानकारी हेतु https://gem.gov.in में संपर्क किया जा सकता है।

e-mail :- helpdesk-gem@gov.in, phone no.-1800-102-3436,1800-419-3436

(भूपेन्द्र कुमार ठाकुर)
सचिव
छ.ग. राज्य सह. विप. संघ मर्या.
मुख्यालय नवा रायपुर अटल नगर

संवाद-48171

HMS शिव साईटिका तेल
शिव सायटिका
लकवा, कमर दर्द, गर्दन दर्द, सायटिका, गठियावात, हड्डीदर्द, झुनझुनी वात, घुटनों का दर्द एवं सभी प्रकार के वात रोग, मोच, सूजन एवं मुठमार दर्द, एड़ी दर्द एवं सभी प्रकार के मांसपेशियों, नाड़ियों जैसे पोलियो अर्द्धांगवात, अस्थिभगन, अस्थि शूल, टूटी हुई हड्डी व कमजोर हड्डीयों को मजबूती प्रदान करता है, रक्त में संचार बढ़ा कर अस्थियों को क्रियाशील बनाता है
HMS देखकर खरीदें
सिरप, कैप्सूल व ऑयल उपलब्ध है 94060-21769
नकली माल से सावधान

epaper- www.haribhoomi.com
हरिभूमि Classified
Email- hbclassified375@gmail.com
आवश्यकता आपकी सुविधा हमारी
Contact For Advertisement Booking
Ring Road No.-2, Gourav Path, Bilaspur
Mo.- 9826782100

## आवश्यकता है

**आवश्यकता है-** कम्प्यूटर ऑपरेटर (female) की आवश्यकता है, अनुभवी, अंग्रेजी जानकार को प्राथमिकता। सम्पर्क करें- शाम 5 से 7बजे तक ओम डायग्नोस्टिक सेन्टर, रेडक्रॉस मेडिकल के सामने, सिम्स रोड, बिलासपुर 9229466628, 8602000508 (41156)

**आवश्यकता है-** होटल में कार्य करने हेतु प्रोफेशनल हाउस कीपिंग स्टॉफ की आवश्यकता है। सैलरी 10000 से 15000 सम्पर्क- होटल रॉयल रामा, पुराना बस स्टैण्ड के पास टेलीफोन एक्सचेंज रोड बिलासपुर 9327334481 (41157)

**आवश्यकता है-** मेडिकल एजेंसी में पैकिंग, डिलीवरी, पेमेन्ट कलेक्शन और सेल्समेन हेतु पार्ट/ फुल टाइम लड़कों की आवश्यकता है । वेतन अनुभव अनुसार। सम्पर्क करें- सिटी केमिस्ट मेडिकल काम्प्लेक्स बिलासपुर 7263990778, 98271 93199 (41154)

**आवश्यकता है-** चाट गुपचुप दुकान में कर्मचारी की आवश्यकता है (दुकान में काम सिखाया जायेगा) समय- सुबह 12बजे से रात 10बजे (रहने की सुविधा) सम्पर्क करें- राजीव गांधी चौक जरहाभाठा बिलासपुर 9098859081 (41153)

**आवश्यकता है**
घर में खाना बनाने एवं अन्य घरेलू कार्य (ऊपरी काम) के लिए 2 **महिला/लड़की** की आवश्यकता है।
**कार्य समय**
**पहली शिफ्ट-** सुबह 8बजे से शाम 5बजे तक
**दूसरी शिफ्ट-** शाम 5बजे से रात 9बजे तक
**कार्य विवरण**
घर का भोजन तैयार करना,रसोई एवं घर के सामान्य घरेलू कार्यों में सहयोग, साफ सफाई एवं व्यवस्था का ध्यान रखना।
इच्छुक **महिला/ लड़की** शीघ्र सम्पर्क करें
नर्मदा नगर, मंगला चौक के पास बिलासपुर
मो.-9827166239

**आवश्यकता है-** कोनी स्थित शिक्षण संस्थान में नाश्ता, समोसा, प्याजी बड़ा बनाने वाले अनुभवी कर्मचारियों की आवश्यकता है। रात्रि 9 बजे से प्रातः 8 बजे तक। कोनी/ सरकंडा क्षेत्र के निवासियों को प्राथमिकता वेतन- योग्यता एवं अनुभव के अनुसार सम्पर्क करें- 07748008770 (41155)

**आवश्यकता है-**होटल में वेटर (सप्लायर) चाइनीज कुक, किचन हेल्पर, कैप्टन, युवक, युवतियां अनुभवी/ फ्रेशर दोनों को प्राथमिकता आवश्यकता है वेतन योग्यता अनुसार सम्पर्क करें-93402 29293 (41149)

**आवश्यकता है-**तृप्ति रेस्टोरेंट मंगला चौक बिलासपुर मे काम करने हेतु इंडियन कुक, हेल्पर, सप्लायर एवं बाई की आवश्यकता है वेतन योग्यता अनुसार सम्पर्क करें- 83195 29383 (41150)

**आवश्यकता है-**Ocean Company में ऑफिस हेतु 10वीं से ग्रेजुएट लड़के, लड़कियां चाहिए उम्र 18 से 28, आय 10500-18000+ रहना, खाना सम्पर्क करें- न्यू बस स्टैण्ड तिफरा बिलासपुर 8818877406, 9644433021, 07752-337082 (41143)

**आवश्यकता है-**बिलासपुर जिले के सभी ब्लाक मे गृह उद्योग संचालिका चाहिये 30000 से 45000 रूपये महीना आय। खुद के घर में खाली 1 हाल हो और जो लागत राशि सिक्यूरिटी (अमानत) तौर पर जमा कर सके वह ही सम्पर्क करें- राधाकृष्ण सेवा संस्थान बिलासपुर/ रायपुर 81091 00493 (41151)

**आवश्यकता है-**सेनेटरी शोरूम में अनुभवी हेल्पर, सेल्समेन, एकाउण्टेंट, मार्केटिंग कार्य हेतु युवको की। आधार कार्ड सहित सम्पर्क करें- श्रीबजाज ट्रेडर्स सीएलसी प्लाजा के सामने मंगला चौक रिंग रोड नं.-2 बिलासपुर 7000727385 (41142)

**आवश्यकता है-** रिसेप्शनिस्ट (लड़की) एवं सुरक्षा गार्ड की आवश्यकता है वेतन योग्यता अनुसार अनुभवी को प्राथमिकता सम्पर्क करें- एक्समैन सिक्यूरिटी सर्विस वैशाली टावर हेमू नगर बिलासपुर 9827152819, 97547 13125 (41138)

**आवश्यकता है-**एजाक्स ऑपरेटर की आवश्यकता है। वेतन योग्यता अनुसार सम्पर्क करें- 95890 00659 (41144)

**आवश्यकता है-**परसदा (भरनी) में बिल्डर के नेतृत्व में मकान बनाने (सिविल कार्य) हेतु ठेकेदार की आवश्यकता है जिसके पास स्वयं की सेंट्रिंग हो, लेआउट डालना आता हो सम्पर्क करें- 9827404638, 90391 04638 (41140)

**आवश्यकता है-** अनुभवी कार ड्राइवर की जरूरत है जो सभी कार चलाने में सक्षम हो, (मैन्युअल, ऑटोमेटिक) शाकाहारी को प्राथमिकता मासिक पेमेन्ट योग्यता अनुसार। सम्पर्क करें- बिलासपुर 93019 22223 (41139)

**आवश्यकता है-** होटल के लिए एक सुपरवाइजर, एक चौकीदार, ऑफिस में कार्य करने हेतु दो लड़कों एवं दो ड्राइवर की आवश्यकता है, सम्पर्क करें- राजेश गुप्ता मंगला चौक, बिलासपुर 7697041000, 94060 41000 (41137)

**आवश्यकता है-**रायगढ़ एवं रायपुर की फैक्ट्रियों हेतु सिक्योरिटी गार्ड, सिक्योरिटी सुपरवाइजर एवं फील्ड ऑफिसर की आवश्यकता है। वेतन- 15000 से 18000 प्रतिमाह, PF, ESIC रहने-खाने की व्यवस्था उपलब्ध सम्पर्क करें- 9201958117, 8109080600 (855)

**आवश्यकता है-** थोक दवा दुकान में माल निकालने, जमाने, पैकिंग, डिलिवरी हेतु लड़कों की आवश्यकता है अनुभवी को प्राथमिकता वेतन योग्यता अनुसार मिलें- नितिन मेडिकल एजेन्सी 34, मेडिकल काम्पलेक्स, तेलीपारा बिलासपुर 74300 00011 (41127)

**आवश्यकता है-** होलसेल एवं रीटेल दवाई दुकान में कार्य करने के लिए लड़कों की अति शीघ्र आवश्यकता है सम्पर्क करे- 78697 97088, 87709 39973 (41125)

**Wanted-** Pareeksha Academy Hiring 3 Telecallers (Salary 8000 to 12000 Per Month) 3 Marketing Executives (Salary 10000 to 14000 Per Month) Add- Lath Towers, Near KIMS Hospital, Magar para Road, Bilaspur 7773899997 (41131)

**आवश्यकता है-**जिला स्तरीय कंपनी में भर्ती परमानेंट बेसेस पर पद- फॉरेस्ट गार्ड, क्लर्क, वन पाल, चपरासी, हेतु आवेदन करें 10वी, 12वी पास लड़के लड़कियां, उम्र सीमा 18 से 42) सैलरी- 26500 से 45500 आवेदन हेतु मार्क शीट, आधार कार्ड, पासपोर्ट साइज फोटो, व्हाट्सएप/ कॉल करे-9129993295 (081)

**आवश्यकता है-**घर में खाना बनाने हेतु महिला की आवश्यकता है। समय-सुबह 8.30 बजे स्थान- प्रियदर्शनी नगर बिलासपुर सम्पर्क करें- 9425899221 (41145)

**आवश्यकता है-**अनुभवी दो ड्राइवर की आवश्यकता है वेतन योग्यता अनुसार, ड्राइविंग लाइसेन्स के साथ सम्पर्क करें- जुनेजा आई हॉस्पिटल तृतीय तल अपोलो सिटी सेन्टर के ऊपर सीएमडी चौक बिलासपुर 7389159805, 73895 04106 (41130)

**आवश्यकता है-** ऑफिस कार्य हेतु अविवाहित युवकों की जो बाहर (उज्जैन इंदौर उदयपुर ) मे रह कर काम कर सके सैलरी 12000 + कमीशन + बोनस के साथ महीना 25000/ कमाए रहना खाना फ्री लिमिटेड सीट संपर्क - 77778 00422 ,9993044523. (366)

## बेचना

**बेचना है-** बिलासपुर- खमतराई अशोक नगर प्रत्यक्षा विहार कॉलोनी में डबल रोड से लगा डायवर्टेड प्लॉट 2200 वर्गफीट 66 फीट का फ्रन्ट शानदार लोकेशन में बेचना है सम्पर्क करें- भूस्वामी 95898 48485 9300482612 (41152)

**Advertisement Booking Time 10.30 AM to 4.00 PM**

## किराया

**किराया-**बिलासपुर, व्यापार विहार में गुम्बर पैट्रोल पम्प के पीछे VR NEXUS बिल्डिंग में फर्स्ट फ्लोर 2560 वर्गफुट, सेकेण्ड फ्लोर 1910 वर्गफुट, किराये पर उपलब्ध। (पार्किंग सुविधा) सम्पर्क करें-95897 40766, 9425530355 (40953)

## फाइनेन्स

**फाइनेन्स-**कुबेर फाइनेन्स मुद्रा योजना अंतर्गत पूरे छत्तीसगढ़ मे लोन सिर्फ आधार कार्ड पर 50000 से 15लाख तक, 1% ब्याज वार्षिक प्रॉपर्टी, पर्सनल, ग्रुप लोन, सिविल खराब लोन पाए सम्पर्क करें- 88826 27857 (4347)

## हरिभूमि में लघु विज्ञापन देने हेतु सम्पर्क करें

- **जिला कार्यालय कोरबा:-** बी.ब्लॉक, कॉमर्शियल काम्पलेक्स, ट्रांसपोर्ट नगर, जिला कोरबा (छ.ग.) मो. 9644018888, 7581808267
- **जिला कार्यालय मुंगेली:-** थाना के सामने गली, गोल बाजार, जिला- मुंगेली (छ.ग.) मो. 9303508230
- **शिवम एड एजेंसी & पब्लिसिटी:-** मो. 9993567380, 8770837744
- **एड प्रयास:-** मो. 9826701269, 9926003943
- **श्यामनानी एडवरटाईजर्स:-** मो. 9827168452, 9300625174
- **रिद्धीसिद्धी एडवरटाइजर्स & पब्लिसिटी:-** मो. 9826129386, 8319503386
- **जे.जे. एडवरटाइजर्स:-** मो. 9300659628
- **रौनक पब्लिसिटी:-** मो. 9300328290, 9981658490
- **भार्गव एडवरटाइजर्स:-** मो. 9827167997
- **श्रीसिद्धि विनायक एडवरटाइजर्स:-** मो. 9826705603
- **एम.जी.आर. एडवरटाइजर्स:-** मो. 9827180896, 9131155033
- **श्री श्याम पब्लिसिटी:-** मो. 9425540759
- **अमित पब्लिकेशन:-** मो. 9826304304, 9827124304
- **विप्रा विज्ञापन सेवा:-** मो. 9302462506
- **माधवास & कम्पनी:-** मो. 9977185123, 9893115084
- **बालाजी एडवरटाइजर्स:-** मो. 9827466133, 9907047586

Medicare Specialists
छोटा लिंग निराश क्यों?
जोश जगा दे धूम मचा दे।

18 से 80 वर्ष तक लाभदायक
लिंगको 8-9 ईन्च लम्बा मोटा, कठोर बनाये। सैक्स टाइम 30 से 45 मिनट बढाएं।
नसों की कमजोरी नामर्दी,धातु का पतलापन,शुगर,बी.पी. में भी जबरदस्त लाभदायक।
घर बैठे मंगवाये।
लाभ नही तो पैसे वापिस।
09083218330

## सूचना

पाठकों से अनुरोध है कि वे समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन के संबंध में किसी भी प्रकार का कदम उठाने (पैसे भेजने, कोई भी खर्च उठाने, चिकित्सकीय सलाह, विवाह संबंधित) या किसी भी वादे-दावे पर अमल करने से पहले अच्छी तरह से जांच पड़ताल कर लें। पाठक पूर्ण जानकारी लेवें व स्वविवेक से निर्णय लेकर ही लेन देन करें। किसी भी उत्पाद या सेवाओं के संबंध में किए किसी भी विज्ञापनदाता के किसी प्रकार के दावों की हरिभूमि (प्रेस प्रबंधक व कर्मचारी) की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। प्रकाशक, संपादक, कर्मचारी और हरिभूमि के स्वामी किसी विज्ञापन के संबंध में उठाए किसी कदम के नतीजे और विज्ञापन दाताओं के अपने वायदों पर खरा न उतरने के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे।

# 23 सेकंड में लुकाकू ने बदला मैच का रुख

■ ग्रुप जी : मिस्र ने बेल्जियम को ड्रॉ पर रोका

■ फैंस ने खड़े होकर किया स्वागत

एजेंसी ▶▶| सिएटल

बेल्जियम के स्टार खिलाड़ी केविन डी ब्रुइन और रोमेलु लुकाकू को गोल करने की कुछ बेहतरीन मौके मिले लेकिन वे इनका फायदा नहीं उठा पाए, जिसके कारण बेल्जियम को मिस्र के खिलाफ विश्व कप फुटबॉल के ग्रुप जी का मैच 1-1 से ड्रॉ खेलना पड़ा। लुकाकू ने दूसरे हाफ में जब स्थानापन्न खिलाड़ी के रूप में मैदान पर कदम रखा तो बेल्जियम के प्रशंसकों ने खड़े होकर उनका अभिवादन किया। उन्हें अपना जलवा दिखाने के लिए केवल 23 सेकंड का समय लगा क्योंकि उन्होंने बेल्जियम की तरफ से बराबरी का गोल करने में अहम भूमिका निभाई। मिस्र ने 66,775 दर्शकों की मौजूदगी में ग्रुप जी के इस मैच में शुरुआती बढ़त हासिल की। उसकी तरफ से इमाम अशूर ने 19वें मिनट में गोल किया, जो उनका पहला अंतरराष्ट्रीय गोल था।

# केप वर्डे ने किया उलटफेर, चट्टान बने वोजिन्हा, स्पेन को ड्रॉ पर रोका

एजेंसी ▶▶| अटलांटा

विश्व कप में पदार्पण कर रहे छोटे से देश केप वर्डे ने खिताब के प्रबल दावेदार स्पेन को गोलरहित ड्रॉ पर रोककर मौजूदा फुटबॉल टूर्नामेंट में अब तक का सबसे बड़ा उलटफेर किया। स्पेन की टीम इस मैच में बड़े अंतर से जीत दर्ज करने की उम्मीद से उतरी थी लेकिन इसके विपरीत वह एक भी गोल नहीं कर पाई, जो टीम के लिए करारा झटका है।

केप वर्डे के लिए स्पेन को बराबरी पर रोकना बहुत बड़ी उपलब्धि है। केप वर्डे के गोलकीपर के सामने स्पेन के स्टार खिलाड़ी लगातार आक्रमण करते रहे। स्पेन ने कुल 26 शॉट लगाए, जिनमें से गोलपोस्ट की दिशा में गए सात शॉट्स को गोलकीपर वोजिन्हा ने अपने शांत दिमाग, फुर्ती और बेहतरीन नियंत्रण के दम पर रोक दिया। इस तरह 40 वर्षीय गोलकीपर वोजिन्हा के सामने 90 मिनट तक स्पेन के खिलाड़ी और पूरा देश एक गोल के लिए तरसता रहा। वोजिन्हा अंतिम सीटी बजने के बाद फूट-फूटकर रो पड़े। वह मैच के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी रहे।

## मात्र 5 लाख है केप वर्डे की जनसंख्या

लगभग 4 हजार वर्ग मीटर (लगभग 2.5 मील) के भूभाग और लगभग 5 लाख निवासियों वाले इस द्वीपसमूह केप वर्डे जनसंख्या के लिहाज से विश्व कप के लिए क्वालीफाई करने वाला तीसरा सबसे छोटा देश है। स्पेन का मुकाबला रविवार को सऊदी अरब से जबकि केप वर्डे का उरुग्वे से होगा।

## स्पेन प्रबल दावेदारों में एक

यूरोपीय चैंपियन स्पेन टूर्नामेंट जीतने के प्रबल दावेदारों में से एक है और अपने पहले मैच में केप वर्डे को हराने के लिए सभी दांव उस पर लगे थे लेकिन कई स्टार खिलाड़ियों से सजी उसकी टीम विपक्षी टीम के 40 वर्षीय गोलकीपर वोजिन्हा की अगुवाई वाली मजबूत रक्षात्मक पंक्ति को भेद नहीं सकी। दूसरे हाफ में मैदान पर उतरने वाले किशोर लामिन यामल भी खेल का रुख नहीं बदल सके। केप वर्डे के लिए यह परिणाम जीत से कम नहीं था और खेल समाप्त होने के बाद उनका जश्न इसका सबूत है।

# ईरान ने की पिछड़ने के बाद वापसी न्यूजीलैंड से खेला ड्रॉ

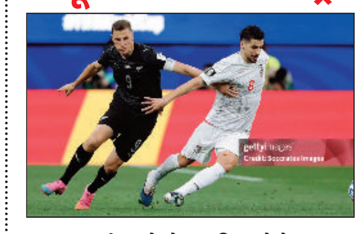

**इंगलवुड।** ईरान ने दो बार पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए न्यूजीलैंड के खिलाफ विश्व कप फुटबॉल के ग्रुप जी का अपना मैच 2-2 से ड्रॉ खेला। ईरानी खिलाड़ियों ने अपना जोश और जज्बा बनाए रखा तथा 64वें मिनट में मोहम्मद मोहेबी के गोल से बराबरी हासिल की। न्यूजीलैंड के लिए एलिजा जस्ट (सातवें और 54वें मिनट) ने दोनों हाफ की शुरुआत में गोल किए, लेकिन ईरान ने दो गोल करके ऑल व्हाइट्स (न्यूजीलैंड की टीम) को विश्व कप इतिहास में अपनी पहली जीत से वंचित रखा। रामिन रेजाइयन ने 32वें मिनट में ईरान की तरफ से पहला गोल किया। उन्होंने इसके बाद मोहेबी के गोल में मदद की। न्यूजीलैंड ने सातवें मिनट में दर्शकों को उस समय चौंका दिया जब कप्तान क्रिस वुड ने गोल किक को रोककर गेंद को जस्ट की ओर धकेल दिया, जिन्होंने कई रक्षकों के बीच से खूबसूरत गोल किया।

# खिताब के बचाव के लिए उतरेगा अर्जेंटीना, आज अल्जीरिया से मुकाबला

**कनसास सिटी।** अर्जेंटीना के कोच लियोनेल स्कैलोनी जानते हैं कि विश्व कप का फैसला टूर्नामेंट के पहले मैच में नहीं होगा। उनकी टीम ने चार साल पहले यह साबित कर दिया था। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मौजूदा चैंपियन अर्जेंटीना 2022 में कतर में सऊदी अरब से मिली हार की तरह ही शुरुआत करना चाहता है।

# वर्ल्ड कप डेब्यू पर चमके सरप्रीत सिंह

**नई दिल्ली।** न्यूजीलैंड के मिडफील्डर सरप्रीत सिंह भारतीय मूल के पहले ऐसे फुटबॉलर बन गए हैं, जिन्होंने विश्व कप के मैच में शुरुआती एकादश में जगह बनाई। सरप्रीत ईरान के खिलाफ 2-2 से ड्रॉ रहे मैच में न्यूजीलैंड की शुरुआती एकादश में शामिल थे। ऑकलैंड में पंजाबी माता-पिता के घर जन्मे 27 वर्षीय सरप्रीत ने इस मैच से विश्व कप में पदार्पण किया और अपने प्रदर्शन से प्रभावित भी किया। न्यूजीलैंड के मुख्य कोच डैरेन बेज़ले ने उन्हें शुरुआती एकादश में शामिल किया और उन्होंने लगभग पूरा मैच खेला। उनकी जगह 90वें मिनट में स्थानापन्न खिलाड़ी ने ली थी। दस नंबर की जर्सी पहने सरप्रीत ने ईरान के गोल पर तीन शॉट लगाए, लेकिन वह ईरान के गोलकीपर को चकमा नहीं दे पाए।

# उरुग्वे ने बनाया दबदबा, सऊदी अरब को ड्रॉ पर रोका

**मियामी गार्डन्स।** सऊदी अरब ने गेंद पर कम नियंत्रण बनाए रखने के बावजूद बढ़त हासिल की और आखिर में उरुग्वे के खिलाफ विश्व कप फुटबॉल का मैच 1-1 से ड्रॉ खेला। सऊदी अरब के लिए अब्दुलेलह अल अमरी ने 41वें मिनट में रिबाउंड पर गोल किया, जबकि उरुग्वे के मैक्सी अराउजो ने 80वें मिनट में बराबरी का गोल दागा। उरुग्वे ने दूसरे हाफ में अधिकतर समय दबदबा बनाए रखा लेकिन सऊदी अरब की रक्षा पंक्ति के खिलाड़ियों ने अच्छे बचाव किए। आखिर में मैक्सी ने गोलकीपर मोहम्मद अल-ओवैस को चकमा देते हुए गोल दागा।

**उरुग्वे ने किए गोल करने 28 प्रयास :** उरुग्वे की टीम ने गेंद पर अधिक नियंत्रण बनाए रखा। उसने सऊदी अरब के सात के मुकाबले गोल करने के 28 प्रयास किए। मैक्सी ने अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल में अपना चौथा गोल किया। अल अमरी ने सऊदी अरब को बढ़त दिलाकर उरुग्वे के प्रशंसकों को सन्न कर दिया था।

# विमेंस टी20 वर्ल्ड कप : न्यूजीलैंड की लगातार दूसरी हार, श्रीलंका ने दी मात

**साउथेम्प्टन।** श्रीलंका ने द रोज बाउल में खेले गए विमेंस टी20 वर्ल्ड कप के 7वें मैच में न्यूजीलैंड के विरुद्ध 5 विकेट से जीत दर्ज की। इसी के साथ 'ग्रुप-बी' में मौजूद श्रीलंका ने जीत का खाता खोल लिया है, जबकि न्यूजीलैंड को लगातार दूसरे मैच में हार का सामना करना पड़ा।

टॉस जीतकर बल्लेबाजी करने उतरी न्यूजीलैंड की टीम ने निर्धारित ओवरों में 6 विकेट खोकर 150 रन बनाए। इसके जवाब में श्रीलंकाई टीम ने 19.4 ओवर में मुकाबला अपने नाम कर लिया। कप्तान चामरी अट्टापट्टू ने विश्मी गुणारत्ने (17) के साथ 5.5 ओवरों में 45 रन की साझेदारी की। इसके बाद टीम नियमित अंतराल पर विकेट गंवाती रही। आलम ये रहा कि 8.3 ओवरों में 55 के स्कोर तक श्रीलंका ने अपने 4 विकेट खो दिए थे। यहां से काशवी दिलहारी ने निलाक्षिका सिल्वा के साथ 39 गेंदों में 49 रन जुटाए। न्यूजीलैंड की तरफ से नेंसी पटेल ने 23 रन देकर 2 विकेट निकाले, जबकि ब्री इलिंग को 1 विकेट हाथ लगा।

# महिला टी20 विश्व कप : टीम इंडिया की नीदरलैंड से भिड़ंत आज, लय बरकरार रखना भारत का लक्ष्य

एजेंसी ▶▶| लीड्स

पाकिस्तान के खिलाफ पहले मैच में शानदार जीत से आत्मविश्वास से भरी भारतीय टीम बुधवार को नीदरलैंड के खिलाफ होने वाले महिला टी20 विश्व कप के अपने दूसरे ग्रुप मैच में बल्लेबाजी में और बेहतर प्रदर्शन करने की कोशिश करेगी। पाकिस्तान के खिलाफ पहले मैच में स्मृति मंधाना ने शीर्ष क्रम में और ऋचा घोष ने निचले क्रम में अच्छी बल्लेबाजी की थी, जिससे भारत 64 रन से जीत हासिल करने में सफल रहा था। सलामी बल्लेबाज शेफाली वर्मा और कप्तान हरमनप्रीत कौर सहित बाकी बल्लेबाज अपेक्षित प्रदर्शन नहीं कर पाए थे। भारती फुलमाली मध्य क्रम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, लेकिन पहले मैच में वह खाता भी नहीं खोल पाई थी।

## स्पिनरों ने किया बेहतरीन प्रदर्शन

भारत को नीदरलैंड से किसी तरह की खास चुनौती मिलने की संभावना नहीं है लेकिन उसे सेमीफाइनल में जगह बनाने के लिए लीग चरण में ऑस्ट्रेलिया या दक्षिण अफ्रीका में से किसी एक को हराना होगा। पाकिस्तान के खिलाफ शुरू में फील्डिंग अच्छी नहीं थी, लेकिन पारी आगे बढ़ने के साथ भारतीय खिलाड़ियों ने कुछ अच्छे कैच लिए। गेंदबाजी विभाग में तेज गेंदबाज अरुंधति रेड्डी और क्रांति गौड़ कोई खास कमाल नहीं दिखा पाईं। लेकिन स्पिनरों ने बेहतरीन प्रदर्शन किया। दीप्ति शर्मा और श्री चरणी की स्पिन जोड़ी ने मिलकर आठ विकेट लिए। दीप्ति शर्मा ने चार ओवर में केवल 10 रन देकर पांच विकेट लिए और फॉर्म में वापसी की। भारत के लिए दीप्ति का फॉर्म में लौटना काफी महत्वपूर्ण था क्योंकि इससे पहले वह दो श्रृंखलाओं में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाई थी।

**न्यायालय अतिरिक्त कलेक्टर एवं विवाह अधिकारी, बिलासपुर (छ.ग.)**

**विवाह सूचना का प्रकाशन**

क्रमांक क/244/वाचक/अति-कले/2026, बिलासपुर, दिनांक 20.05.2026

आवेदक ऋषभ कंवर आ. स्व. प्रहलाद सिंह कंवर उम्र 24 वर्ष, निवासी पम्प हाउस मैंगजीन भाटा, वार्ड नं. 14, कोरबा तहसील व जिला कोरबा (छ.ग.) एवं आवेदिका कुमारी श्रद्धा पैकरा आ. छत्रपाल पैकरा, उम्र 23 वर्ष निवासी नगोई, तहसील बेलगहना थाना कोटा जिला बिलासपुर (छ.ग.)

द्वारा विशेष विवाह अधिनियम 1954 की धारा-5 के तहत सूचना पत्र प्रस्तुत किया गया है। अतः प्राप्त सूचना का प्रकाशन सर्व साधारण के लिए दैनिक समाचार पत्र में किया जाता है। इस विवाह के संबंध में यदि कोई आपत्ति या दावा हो तो अपनी आपत्ति/दावा इस कार्यालय में दिनॉक 25.06.2026 को प्रातः 11:00 बजे प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित अवधि पश्चात प्राप्त आपत्ति / दावा पर कोई विचार करना संभव नहीं होगा।

ऋषभ कंवर | श्रद्धा पैकरा

**विवाह अधिकारी**
**बिलासपुर (छ.ग.)**

**FEDERAL BANK**
YOUR PERFECT BANKING PARTNER

**फेडरल बैंक लिमिटेड**
**कार्यालय, क्षेत्र प्रमुख, रायपुर**
**पताः 18/1421, कुशल वाटिका, न्यू शांति नगर, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.) - 492007**

**स्वर्ण नीलामी हेतु सूचना**

फ़ेडरल बैंक लिमिटेड ('बैंक') द्वारा सभी संबंधित लोगों तथा आम जनता को सूचित किया जाता है कि जिन उधारकर्ताओं ने स्वर्ण ऋण लेते समय बैंक के पास सोने के आभूषण/जेवर/सिक्के जमा किए थे, तथा जिन्होंने बार-बार नोटिस मिलने के बावजूद ऋण की राशि नहीं चुकाई है (डिफ़ॉल्ट किया है), उनके निम्नलिखित ऋण खातों के लिए इन सोने की चीजों की नीलामी 'जैसी है, जहाँ है' (as is where is) और 'जैसी है, वैसी है' (as is what is) के आधार पर की जाएगी।

**डिफ़ॉल्ट हुए ऋण खातों का विवरणः**

**18/1421, कुशल वाटिका, न्यू शांति नगर, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.)-492007**
**फोन नंबर - 0771-2422900**

| स. क्र. | खाते का नाम | ऋण खाता क्र. | ज्वेलरी/सिक्कों की संख्या | कुल वजन |
|---|---|---|---|---|
| 1. | मंजू अग्रवाल | 19456400019330 | 20 | 233.6 |
| 2. | सुमीत ठाकुर | 19456100029464 | 1 | 47.4 |
| 3. | सुमीत ठाकुर | 19456100029456 | 1 | 15 |
| 4. | सुमीत ठाकुर | 19456100029472 | 6 | 65.8 |
| 5. | मानब मंडल | 19456900003115 | 13 | 302.2 |
| 6. | मानब मंडल | 19456900002299 | 18 | 403.8 |
| 7. | मानब मंडल | 19456900002828 | 7 | 112.6 |
| 8. | मानब मंडल | 19456400020627 | 66 | 378.2 |
| 9. | सुमीत सोनी | 19456400019892 | 9 | 233.2 |
| 10. | बिस्वजीत दास | 19456900002372 | 16 | 278.5 |
| 11. | अजय नायक | 19456900002430 | 5 | 177.2 |
| 12. | अजय नायक | 19456900002463 | 6 | 275.2 |
| 13. | आरती कक्कड़ | 19456400020676 | 12 | 109.5 |
| 14. | आरती कक्कड़ | 19456900002984 | 3 | 34.1 |
| 15. | राकेश देवनानी | 19456900002521 | 4 | 74.2 |
| 16. | राम सूरत यादव | 19456900000780 | 75 | 923.5 |
| 17. | सरला राठोड़ | 19456900001481 | 3 | 35.6 |

**विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण (साडा), दक्षिण गंगोत्री, व्यवसायिक भूखण्ड योजना, सुपेला भिलाई नगर, दुर्ग (छ.ग.)-490023, मो. नं. : 8895840841**

| स. क्र. | खाते का नाम | ऋण खाता क्र. | ज्वेलरी/सिक्कों की संख्या | कुल वजन |
|---|---|---|---|---|
| 1. | आनंद निषाद | 25036100000061 | 3 | 8.8 |

**1) नीलामी का विवरण**

**नीलामी की तिथि : 24.06.2026, समयः प्रातः 11:00 बजे**

**आरक्षित मूल्य :** मान्यता प्राप्त मूल्यांकनकर्ता द्वारा तय किया गया, जो नीलामी के समय उपलब्ध होगा।

* यदि 24.06.2026 को कोई भागीदारी नहीं होती है, तो दूसरी नीलामी 29.06.2026 को आयोजित की जाएगी।

2) बोलीकर्ताओं को नीलामी के स्थान पर अपना वैध आईडी कार्ड/ पेनकार्ड साथ लाना होगा।

3) इस सार्वजनिक नीलामी से संबद्ध नियम एवं शर्तें ("T&Cs") बोलीकर्ता https://www.federal.bank.in/gold-loan-tnc-for-auction पर देख सकते हैं। बोलीकर्ताओं द्वारा बिड जमा करने का अर्थ यह माना जाएगा कि उन्होंने उन शर्तों और नियमों को स्वीकार कर लिया है।

4) यदि नीलामी से मिली राशि को समायोजित करने के पश्चात् भी बैंक की देनदारियां बकाया रहती हैं, तो बकाया राशि वसूलने के लिए उधार लेने वालों के विरूद्ध आवश्यक वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।

5) यदि उधारकर्ता की मृत्यु हो गई है, तो यह नीलामी नोटिस उधारकर्ता के वैधानिक वारिसों पर लागू होगा।

6) सफल बोलीकर्ता को नीलामी वाले दिन ही पूर्ण भुगतान (अर्थात जीतने वाली बोली की राशि का 100% तथा उस पर लागू जीएसटी व अन्य टैक्स/चार्ज) करना होगा। हालांकि, विशिष्ट मामलों में फेडरल बैंक अपनी इच्छा से भुगतान को अगले कार्य दिवस तक टालने की अनुमति दे सकता है।

7) सफल बोलीकर्ता को नीलामी की तिथि से 2 दिनों के भीतर सोने के गहने/सिक्के लेने होंगे।

8) बोली स्वीकार करने के संबंध में बैंक का निर्णय अंतिम और बाध्यकारी होगा। बैंक को उधारकर्ताओं को पूर्व सूचना दिए बिना नीलामी रद्द करने का अधिकार है।

**दिनांक : 17.06.2026**
**स्थान : रायपुर**

**हस्ताक्षर - प्राधिकृत अधिकारी**
**कार्यालयः क्षेत्र प्रमुख, रायपुर क्लस्टर**
**फेडरल बैंक लिमिटेड हेतु**

**कार्यालय नगर पालिक निगम बिलासपुर (छ.ग.)**
**आम सूचना**

क्र.../न.पा.नि./भ.वि./2026-27 | दिनांक 15/06/2026

नगर निगम क्षेत्र अंतर्गत ऐसे निजी आवासों, संस्थानों, कॉलोनियों एवं अन्य संरचनाओं के स्वामियों को सूचित किया जाता है जिनकी भवन अनुज्ञा की अवधि समाप्त हो चुकी है एवं वाटर हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चर का निर्माण किया जा चुका है, किन्तु नगर निगम में वाटर हार्वेस्टिंग निर्माण हेतु जमा की गई अमानत राशि वापस नही ली गई है। ऐसे समस्त भवन निर्माणकर्ताओं को सूचित किया जाता है कि वाटर हार्वेस्टिंग निर्माण से संबंधित नगर निगम कार्यालय में जमा की गई अमानत राशि वाटर हार्वेस्टिंग निर्माण का पूर्णता प्रमाण पत्र पंजीकृत हाइड्रोलाजिस्ट से लेकर फोटोग्राफ्स सहित आवेदन 07 दिवस के भीतर में प्रस्तुत कर अमानत राशि वापस ली जा सकती है। आवेदन प्राप्त न होने की दशा में इस अवधि के पश्चात जमा की गई अमानत राशि राजसात कर ली जावेगी एवं इसकी संपूर्ण जिम्मेदारी संबंधित भवन निर्माणकर्ता की होगी।

**भवन अधिकारी**
**नगर पालिक निगम बिलासपुर (छ.ग.)**

**Green City, Clean City, Dream City.**

**कार्यालय, नगर पालिका परिषद् खरसिया जिला-रायगढ़ (छत्तीसगढ़)**

क्रमांक //न.पा.प./लो.नि.वि/2026-27 | खरसिया, दिनांक......

**।। ई-प्रोक्योरमेन्ट निविदा आमंत्रण सूचना ।।**

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नलिखित कार्य हेतु ऑनलाईन (Online) निविदा आमंत्रित की जाती है :-

1. Bid Start Date :- 16.06.2026 Time 17.30 PM
2. Last Date of Online Submission for Technical & Financial Bid :- 01.07.2026 Time 17.30 PM
3. Last Date for Submission of physical bid :- 03.07.2026 Time 17.30 PM
4. Bid Open Date :- 06.07.2026 Time 11.00 AM

| क्र. | सि.नि.क्र. | कार्य का विवरण | अनुमानित लागत (रू. लाख में) | अमानत राशि एफ.डी. आर/टी.डी.आर के रुप में |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 193522 | वार्ड क्रमांक 18 रायगढ़ रोड मंडी गेट से आडिटोरियम, स्पोर्टस काम्प्लेक्स तक बी.टी. रोड निर्माण कार्य। (2nd Call) | 24.22 | 18200.00 |

उपरोक्त कार्य की निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी ई-प्रोक्योरमेन्ट वेब पोर्टल https://eproc.cgstate.gov.in अथवा विभागीय वेबसाईट https://uad.cg.gov.in से डाउनलोड की जा सकती है एवं कार्यालयीन अवधि में कार्यालय आकर जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

**मुख्य नगरपालिका अधिकारी नगरपालिका परिषद् खरसिया**

## राशिफल

**मेष** — मन में शान्ति एवं प्रसन्नता रहेगी। नौकरी में कार्यक्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है। परिश्रम अधिक रहेगा। जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

**वृष** — अपनी भावनाओं को वश में रखें। परिवार के स्वास्थ का ध्यान रखें। कारोबार में कुछ समस्याएं आ सकती हैं। भाई-बहनों का सहयोग मिल सकता है।

**मिथुन** — मन परेशान रहेगा। व्यर्थ के क्रोध एवं वाद-विवाद से बचें। परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थान की यात्रा पर जा सकते हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

**कर्क** — आत्मविश्वास तो बहुत रहेगा, परन्तु मन परेशान हो सकता है। परिवार का साथ मिलेगा। किसी मित्र के सहयोग से आय के स्रोत विकसित हो सकते हैं।

**सिंह** — शैक्षिक कार्यों में कठिनाई हो सकती है। सचेत रहें। किसी मित्र से कारोबार का प्रस्ताव मिल सकता है। कारोबार के लिए विदेश यात्रा लाभप्रद रहेगी।

**कन्या** — मन प्रसन्न रहेगा, परन्तु नौकरी में अफसरों से व्यर्थ के वाद-विवाद से बचें। कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। कोई जिम्मेदारी मिल सकती है।

**तुला** — आत्मविश्वास में कमी रहेगी। नौकरी के लिए साक्षात्कारादि कार्यों में सफलता मिलेगी। शैक्षिक कार्यों में व्यवधान आ सकते हैं।

**वृश्चिक** — आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। आत्मसंयत भी रहे। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। नौकरी में कोई अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

**धनु** — मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। पिता के स्वास्थ्य में सुधार होगा। परन्तु जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। रहन-सहन कष्टमय हो सकता है।

**मकर** — वाणी में मधुरता रहेगी, परन्तु धैर्यशीलता में कमी रहेगी। माता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। खर्चों में वृद्धि होगी। परिवार का साथ मिलेगा। आय में वृद्धि होगी।

**कुंभ** — मन प्रसन्न तो रहेगा, परन्तु संयत भी रहें। क्रोध से बचें। सन्तान के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। खर्चों में वृद्धि होगी। कारोबारी कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी।

**मीन** — शान्ति एवं प्रसन्नता रहेगी। नौकरी में कार्यक्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है। परिश्रम अधिक रहेगा। जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

## शब्द पहेली - 6259

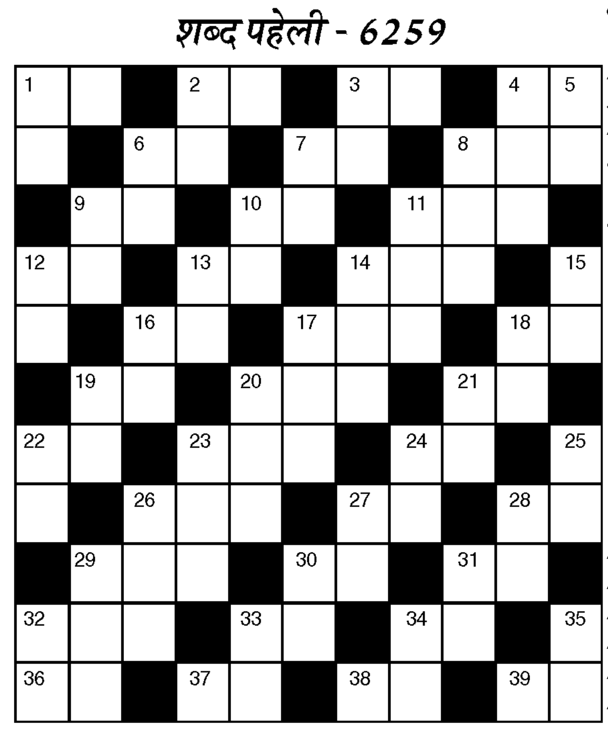

**बाएँ से दाए**

1. कार्य, काम-2
2. अग्नि, अनल-2
3. संग, संगत-2
4. मदिरा, शराब-2
6. चुटीली बात-2
7. उम्मीद-2
8. समाचार, सूचना-3
9. भगवान कृष्ण के खेल-2
10. छाया, परछाई-2
11. कहासुनी-3
12. जी, चित-2
13. निशा-2
14. पासों का खेल-3
16. करीना की फिल्म-2
17. आगे वाला-3
18. सीधा, सरल-2
19. वीर, बहादुर-2
20. दलदल, गाद-3
21. तांत, टेलीग्राम -2
22. वंश, खानदान-2
23. नशा, नशापानी-3
24. चिट्ठी, पत्र-2
26. सही का विलोम-3
27. ठिकाना-2
28. प्राण, दम-2
29. नरक (उर्दू-3)
30. बीता हुआ दिन-2
31. पोखर, तालाब-2
32. हताहत-3
33. दर, मूल्य-2
34. आयु-2
36. अंधकार-2
37. पांव, पैर-2
38. कान्हा-2
39. टैक्स, हाथ-2

**ऊपर से नीचे**

1. समय, वक्त-2
2. आगमन-2
3. पति की मां-2
4. भोर, सवेरा-3
5. झगड़ा-2
6. लॉक, द्वारयंत्र-2
7. धाय, नर्स, दाई-2
8. अवरोध, रुकावट-3
9. मगन, मग्न-2
10. सप्त, सप्तम-2
11. लक्ष्मी, रमा-3
12. मौज, मजा-2
13. महाराजा-2
14. घिसन, रगस-3
15. गमन, जाना-2
16. पुनः, वापस-2
17. स्थिर-3
18. निष्कर्ष-2
19. कांटा-2
20. मूल्य, दाम-3
21. पितामह-2
22. मजदूर-2
23. ईश्वर-3
24. भूल, गलती-2
25. मछली-2
26. नगमा-3
27. क्षण-2
28. पाश-2
29. दूसरा-3
30. थोड़ा-2
31. तांबा-2
32. हमला-2
33. कलंक-2
34. गरम-2
35. मयूर-2

### शब्द पहेली -6258 का हल

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क | फ | ■ | ज | प | ■ | त | न | ■ | शा | न |
| प | त | न | ■ | ल | त | ■ | भ | ला | ■ | शा |
| ■ | वा | न | र | ■ | म | ल | ■ | ज | रा | ■ |
| फि | ■ | द | म | न | ■ | क | द | ■ | ज | न |
| दा | दा | ■ | ल | क | वा | ■ | म | स्त | ■ | ख |
| ■ | न | या | ■ | ल | च | क | ■ | र | थ | ■ |
| रा | ■ | क | ल | ■ | क | ल | म | ■ | ल | ब |
| ही | र | ■ | हू | र | ■ | ह | म | ल | ■ | ल |
| ■ | स | जा | ■ | जा | ल | ■ | ता | ड़ | ना | ■ |
| य | ■ | म | त | ■ | व | ध | ■ | ना | का | रा |
| म | य | ■ | ल | क्ष्य | ■ | न | ल | ■ | म | जा |

## सूडोकु नवताल - 6269

★ ☆ ☆ ☆ ☆ सरल

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | 9 | | | | 1 | | | |
| 5 | 4 | | | 6 | 8 | | 1 | 3 |
| | | 1 | | 7 | | 9 | 5 | |
| | 8 | 9 | | 5 | 3 | | 4 | 7 |
| | | | | | | | | |
| 6 | 1 | | 4 | 9 | | 2 | 3 | |
| | 3 | 4 | | 1 | | 8 | | |
| 7 | 5 | | 8 | 3 | | | 2 | 4 |
| | | | 6 | | | | 7 | 9 |

MANGAL SENACHA, BANGALORE

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.

■ प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.

■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.

■ पहेली का केवल एक ही हल है.

### सूडोकु नवताल - 6268 का हल

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | 6 | 2 | 3 | 4 | 1 | 7 | 5 | 8 |
| 1 | 4 | 8 | 9 | 7 | 5 | 6 | 2 | 3 |
| 5 | 7 | 3 | 2 | 6 | 8 | 1 | 4 | 9 |
| 3 | 2 | 1 | 6 | 9 | 4 | 8 | 7 | 5 |
| 4 | 8 | 7 | 5 | 1 | 2 | 9 | 3 | 6 |
| 6 | 9 | 5 | 8 | 3 | 7 | 4 | 1 | 2 |
| 8 | 3 | 4 | 7 | 2 | 6 | 5 | 9 | 1 |
| 2 | 1 | 6 | 4 | 5 | 9 | 3 | 8 | 7 |
| 7 | 5 | 9 | 1 | 8 | 3 | 2 | 6 | 4 |

# एआई का उपयोग मानव सेवा कल्याण के लिए हो : राज्यपाल

रायपुर। डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय एवं आईसेक्ट इंडिया ग्रुप के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय "समर्थ भारत कॉन्क्लेव" का शुभारंभ हुआ। 16 एवं 17 जून को आयोजित इस कॉन्क्लेव में विकसित भारत, आत्मनिर्भर भारत, स्किल इंडिया, वित्तीय समावेशन, सामाजिक उद्यमिता तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित कौशल विकास जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर व्यापक चर्चा की जा रही है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ के महामहिम राज्यपाल रमेन डेका थे। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग मानव सेवा और मानव कल्याण के लिए होना चाहिए। किसी भी नई तकनीक के सकारात्मक उपयोग को बढ़ावा देना आवश्यक है, वहीं उसके दुरुपयोग के प्रति भी समाज को सजग रहना होगा। उन्होंने कहा कि डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय और आईसेक्ट इंडिया ग्रुप द्वारा ग्रामीण युवाओं को केंद्र में रखकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कौशल रथ की शुरुआत की गई है, जो एक दूरदर्शी और महत्वपूर्ण पहल है।

**खास बात**

- राज्यपाल रमेन डेका ने एआई कौशल रथ को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

राज्यपाल ने कहा कि भारत के गांवों तक तकनीक और नवाचार का लाभ पहुंचाना समय की आवश्यकता है। आईसेक्ट इंडिया ग्रुप और डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि तकनीक को जीवन में सहायक के रूप में अपनाया जाना चाहिए, न कि उसे किसी खतरे के रूप में स्थान दिया जाना चाहिए। एआई मानव का सहयोगी है, लेकिन यह मानव बुद्धि और संवेदनशीलता का विकल्प नहीं बन सकता। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण और इको-फ्रेंडली जीवनशैली को अपनाने पर भी जोर दिया। कार्यक्रम के दौरान राज्यपाल ने एआई कौशल रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित छत्तीसगढ़ शासन के तकनीकी शिक्षा मंत्री गुरु खुशवंत साहिब ने कहा कि आईसेक्ट इंडिया ग्रुप पिछले चार दशकों से कंप्यूटर शिक्षा और तकनीकी जागरूकता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। उन्होंने कहा कि एक समय था जब गांव-गांव में आईसेक्ट के कंप्यूटर केंद्र तकनीकी शिक्षा का प्रमुख माध्यम बने। आज उसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए आईसेक्ट आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की जानकारी ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचाने का कार्य कर रहा है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस पहल से प्रदेश के युवाओं को नई तकनीकों का ज्ञान प्राप्त होगा और वे भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं को तैयार कर सकेंगे।आईसेक्ट इंडिया ग्रुप के एक्जीक्यूटिव वाइस प्रेसिडेंट डॉ. सिद्धार्थ चतुर्वेदी ने कहा कि एआई कौशल रथ का उद्देश्य आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की जानकारी को गांव-गांव तक पहुंचाना है। मध्यप्रदेश के बाद अब छत्तीसगढ़ में इसकी शुरुआत की गई है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा परिकल्पित विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने में तकनीक, कौशल और नवाचार की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। छत्तीसगढ़ के युवा इस दिशा में उल्लेखनीय योगदान देने की क्षमता रखते हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि आने वाले वर्षों में भारत वैश्विक नेतृत्व की भूमिका निभाएगा और छत्तीसगढ़ इस परिवर्तन का महत्वपूर्ण भागीदार बनेगा। कार्यक्रम में डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. प्रदीप कुमार घोष ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विश्वविद्यालय एआई आधारित शिक्षा, अनुसंधान और कौशल विकास को प्राथमिकता दे रहा है। उन्होंने बताया कि आधुनिक तकनीक के माध्यम से विद्यार्थियों को रोजगारोन्मुखी शिक्षा प्रदान की जा रही है, जिससे वे वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप अपनी क्षमताओं का विकास कर सकें। उन्होंने कहा कि एआई आज केवल तकनीक नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम बन चुका है। कॉन्क्लेव में पद्मश्री अजय मांडवी विशेष रूप से उपस्थित रहे। उन्होंने अपने प्रेरक उद्बोधन में उद्यमिता, संघर्ष और सफलता से जुड़े अपने जीवन के अनुभव साझा किए। उन्होंने ग्रामीण उद्यमियों को चुनौतियों से घबराने के बजाय अवसरों की पहचान करने और निरंतर प्रयास करते रहने की प्रेरणा दी। उनके अनुभवों ने उपस्थित प्रतिभागियों को नई ऊर्जा और आत्मविश्वास प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ज्योति बाला गुप्ता ने किया, आभार प्रदर्शन कुलसचिव डॉ. अरविंद कुमार तिवारी ने किया।

## नन्ही स्केटर ने 20 कारों के नीचे से निकलकर रचा इतिहास

इन दिनों सोशल मीडिया पर नन्ही बच्ची का वीडियो सुर्खियां बटोर रहा है जिसे देखकर लोग न सिर्फ हैरानी जता रहे हैं, बल्कि उस बच्ची की मेहनत और आत्मविश्वास की भी तारीफ कर रहे हैं। वायरल वीडियो में दिखाई गई बच्ची भारत की रहने वाली बताई जा रही है, जिसने अपनी शानदार स्केटिंग टैलेंट से लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है। ऐसा बताया जा रहा है कि मात्र सात साल की उम्र में उसने लिम्बो

स्केटिंग करते हुए लगातार 20 कारों के नीचे से गुजरकर वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया है। वीडियो की शुरुआत में बच्ची स्केट्स पहनकर पूरी तैयारी के साथ नजर आती है। इसके बाद वह अपने शरीर को बेहद नीचे झुकाती है एक-एक करके कारों के नीचे से निकलना शुरू कर देती है। सबसे हैरानी वाली बात यह है कि कारों और जमीन के बीच की जगह काफी कम दिखाई देती है।

## इराक में 4000 साल पुराने शहर की खोज, मिले बिना दफन किए शव

**नई दिल्ली।** इराक के कुर्दिस्तान रीजन में आर्कियोलॉजिस्ट्स ने 4000 साल पुराने एंशिएंट शहर के सबूत ढूंढे हैं। कुर्द कबुर्स्तान नाम की साइट पर खुदाई के दौरान कई चौंकाने वाली चीजे मिली हैं। यहां सीज वारफेयर यानी घेराबंदी वाले युद्ध के निशान साफ देखे जा सकते हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ सेंट्रल फ्लोरिडा की प्रोफेसर टिफनी अर्ली-स्पाडोनी इस रिसर्च को लीड कर रही हैं। टीम को एरबिल रीजन में पहली बार क्यूनिफॉर्म एडमिनिस्ट्रेटिव टैबलेट्स का बड़ा ग्रुप मिला है। इसके साथ ही बड़े पैमाने पर तबाही और सामूहिक कब्रों के सबूत भी सामने आए हैं। ये सारी चीजें मिडिल ब्रॉन्ज एज के दौरान शहर के जीवन और उसके पतन की कहानी बताती हैं। इस जगह को एंशिएंट शहर काबरा के रूप में पहचाना जा रहा है।

### पैलेस के मलबे में क्यों मिले बिना दफन किए गए शव?

इस भयंकर युद्ध ने इंसानों पर गहरा असर डाला था। मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी की एंड्रिया जुरेक-ओस्ट ने इस पर स्टडी की है। रिसर्चर्स को पैलेस के मलबे में 17 लोगों के अवशेष मिले हैं। टिफनी ने कहा, 'इन लोगों को दफनाया नहीं गया था और न ही कोई सामान इनके पास मिला।' ऐसा लगता है कि मौत के बाद उन्हें वहीं छोड़ दिया गया था। इनमें कुछ पैलेस वर्कर्स भी हो सकते हैं।

# बारह साल की बच्ची बनकर परिवार के साथ रही 37 साल की महिला

**ब्रासीलिया।** ब्राजील से एक ऐसा मामला सामने आया है, जिसने दुनिया भर के लोगों को हैरान कर दिया है। यहां एक 37 साल की महिला ने खुद को 12 साल की ऑटिज्म से पीड़ित और बेसहारा बच्ची बताकर एक परिवार का भरोसा जीत लिया। इतना ही नहीं, महिला करीब 14 महीने तक उस परिवार के साथ बच्ची बनकर रहती रही। परिवार उसे अपनी बेटी मान चुका था और उसे गोद लेने की तैयारी भी पूरी कर रहा था।

एक रिपोर्ट्स के मुताबिक, महिला का नाम अमांडा मारिया सूजा डी ओलिवेरा है। वह ब्राजील के सांता कातरीना की रहने वाली है। अमांडा पर आरोप है कि उसने खुद को 12 साल की बेसहारा और ऑटिज्म से पीड़ित बच्ची बताकर एक परिवार के करीब पहुंच बनाई। उसने परिवार को यकीन दिलाया कि उसे देखभाल और सहारे की जरूरत है। अमांडा की कहानी सुनकर परिवार को उसपर दया आ गई और उन्होंने उसकी मदद करने का फैसला किया। धीरे-धीरे परिवार को अमांडा पूरा भरोसा हो गया और उन्होंने उसे गोद लेने का कानूनी प्रोसेस भी शुरू कर दिया।

- गोद लेने की तैयारी थी पूरी, फिर ऐसे खुला चौंकाने वाला राज

### ऐसे हुआ झूठ का पर्दाफाश

खोजबीन के दौरान कुछ ऐसे रिकॉर्ड सामने आए, जिनसे पता चला कि जिसे सभी 12 साल की बच्ची समझ रहे थे, वह दरअसल 37 साल की महिला है। इतना ही नहीं, उसके खिलाफ पहले भी धोखाधड़ी के आरोप लग चुके थे। इसके बाद परिवार ने तुरंत पुलिस को सूचना दी और मामले की जांच शुरू हुई। जांच के दौरान सामने आया कि अमांडा का नाम पहले भी ब्राजील के अलग-अलग इलाकों में सामने आ चुका है। इससे पहले उसने दावा किया था कि उसके साथ गंभीर मारपीट और प्रताड़ना हुई है। अमांडा अपने आप को चोटें पहुंचाती थी, ताकि खुद को पीड़ित साबित कर सके और लोगों की सहानुभूति ले सके। पूरा मामला सामने आने के बाद पुलिस ने अमांडा को गिरफ्तार कर लिया है।

हरिभूमि कम्यूनिकेशन्स प्राईवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक प्रियंक सिंह परिहार द्वारा हरिभूमि पब्लिकेशन्स, रिंग रोड नं. 2, गौरवपथ, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)-495001 से मुद्रित एवं हरिभूमि कार्यालय, रिंग रोड नं. 2, गौरव पथ, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)-495001 से प्रकाशित। प्रधान संपादक : डॉ. हिमांशु द्विवेदी, स्थानीय संपादक: प्रवीण शुक्ला। RNI No. CHHHIN/2001/03764, फोन : 07752-401050, फैक्स : 07752-401052. e-mail : bilaspur@haribhoomi.com